Vol.25, Issue 5 | Annual Subscription ₹480

मार्च 2026

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

भारत में रोटरी शांति केंद्र

Rotary

GARBAGE BANK
குப்பை வங்கி

DPIIT
#startupindia
DIPP205349

EXCLUSIVE

WORKSHOP ON WASTE MANAGEMENT

Certificate course for environmental enthusiasts, entrepreneurs working on sustainability,for students who want to create a positive impact in their community

- Expert-Led sessions with hands-on Demo
- Take-home toolkit(Guidelines booklet for training)
- Get certified & Join the network of Eco-Leaders

Register NOW

28/3/26
10.00 AM TO 3.00 PM

Location:
Poornam Porkodi Hall, Virudhunagar, 8754204222,84388 52866

Visit :
www.ilovewaste.in

विषयसूची

12

रोटरी शांति केंद्र सिम्बायोसिस, पुणे में उद्घाटित किया गया

20

RYLA के माध्यम से उद्यमिता की चिंगारी प्रज्वलित करना

38

रोटरी युवा वैज्ञानिकों को तैयार करता है

42

सड़क पर रहने वाले बच्चों के लिए शिक्षा

52

कैनवास से कक्षा तक

54

रोटरी द्वारा पैरा टी टी चैंपियनशिप की मेज़बानी

60

बालिकाओं को गर्भाशय ग्रीवा कैंसर से सुरक्षित रखना

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

ई-संस्करण अपनाएं। पर्यावरण बचाएं।

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता

₹420 से संशोधित कर

₹324 कर दी गई हैं।

आपके पत्र

ऑरलैंडो में भारत का गौरवशाली क्षण

आपका संपादकीय *इंटरनेशनल असेंबली में भारत की गौरवशाली और विजयी उपस्थिति* (फरवरी अंक) पढ़कर मुझे अत्यंत हर्ष हुआ। हमें गर्व है कि एक भारतीय, डीजीई रविशंकर डाकोजू ने टीआरएफ को ₹500 करोड़ का दान दिया - जो रोटरी जगत में एक अनुकरणीय और ऐतिहासिक रिकॉर्ड है। इसके साथ ही रो ई निदेशक एवं रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के प्रमुख एम मुरुगानंदम का रोटरी के उपाध्यक्ष (2026-27) के रूप में चयन होना भी अत्यंत सुखद समाचार है। इन दो महान भारतीय रोटेरियनों के लिए तीन बार जय-जयकार!

अरुण कुमार दास, रोटरी क्लब बारिपदा - मंडल 3262

की पुनः पुष्टि है और भारत, तमिलनाडु तथा विशेष रूप से रो ई मंडल 3000 के लिए गर्व का क्षण है जिसने इस असाधारण नेता को पोषित और मार्गदर्शित किया। यह इस बात का प्रमाण है कि जब सेवा मूल्यों पर आधारित और निरंतर होती है, तो वह वैश्विक विश्वास अर्जित करती है। भारत की बढ़ती टीआरएफ योगदान राशि और *रोटरी न्यूज़* ट्रस्ट की सुदृढ़ता यह दर्शाती है कि भारत केवल रोटरी में भाग नहीं ले रहा बल्कि उसके भविष्य को आकार दे रहा है।

एन सेंथिल नाथन

रोटरी क्लब मदुरै इनोवेटर्स - मंडल 3000

जैसा कि आपके फरवरी संपादकीय में उल्लेख किया गया है, ऑरलैंडो में वह हम सभी के लिए सचमुच गर्व का क्षण था। रो ई निदेशक मुरुगानंदम का रोटरी इंटरनेशनल के उपाध्यक्ष पद पर आसीन होना केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है बल्कि उस ऐतिहासिक यात्रा का परिणाम है जो रोटारेक्टर के रूप में शुरू हुई और अब रोटरी के सर्वोच्च पदों में से एक तक पहुँची है।

उनकी यह उपलब्धि 35 वर्षों की अटूट सेवा प्रतिबद्धता का परिणाम है - यह कोई अचानक मिली सफलता नहीं बल्कि निरंतरता, दृढ़ विश्वास, विनम्रता और समर्पित सेवा पर आधारित एक सतत और स्थिर प्रगति का परिणाम है। 71 वर्षों के बाद भारत ने फिर से इस नेतृत्व पद को प्राप्त किया है जो तीन महान भारतीय रोटरी अग्रणियों की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाता है। यह नियुक्ति रोटरी जगत में भारत की बढ़ती नैतिक और सेवा-नेतृत्व की भूमिका

फरवरी अंक में संपादक की टिप्पणी पढ़ने के बाद मैं उत्सुकतापूर्वक पन्ने पलटने लगा ताकि डीजीई डाकोजू और पाओला के बारे में अधिक जान सकूँ, जो विनम्रता और उदारता की प्रतिमूर्ति हैं। यह जानकर मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने अपने जीवन में कितनी चुनौतियों का सामना किया और अब वे समाज को वापस लौटाना अपना कर्तव्य मानते हैं। हमारे देश में महान आत्माओं की कोई कमी नहीं है। डाकोजू और पाओला जैसे लोगों के रूप में मानो भगवान ही मानव रूप में विराजमान हों। दूरस्थ गाँव के एक स्कूल को गोद लेने के लिए रोटरी क्लब अकोला को बधाई, जहाँ विशेष रूप से छात्राएँ सबसे अधिक लाभान्वित हो रही हैं। साथ ही, रोटरी क्लब अकोला के नेतृत्व में कार्यरत 80 वर्ष से अधिक आयु के रोटेरियन राधेश्याम मोदी को भी हार्दिक नमन।

राज कुमार कपूर, रोटरी क्लब रूप नगर - मंडल 3080

वाह! रोटरी क्लब भावनगर!

रोटरी क्लब भावनगर पर प्रकाशित कवर स्टोरी ने मुझे गहराई से प्रभावित किया क्योंकि उसमें रोटरी की मूल भावना है और यह बताया गया है कि हम भारत के उपेक्षित बच्चों की सहायता के लिए क्या कर सकते हैं। समय देना सबसे कम आंका जाने वाला दान है क्योंकि एक बार दिया गया समय हमेशा के लिए चला जाता है और अन्य संसाधनों की तरह उसकी भरपाई नहीं की जा सकती। यही कारण है कि वह अमूल्य है। समय देना लेन-देन नहीं बल्कि एक आत्मीय समर्पण है। यह दूसरों को बताता है कि वे आपके लिए इतने महत्वपूर्ण हैं कि आप अपने जीवन की गति रोककर उनके जीवन में शामिल होते हैं। मेरे लिए यह कवर स्टोरी किसी नियमित उद्देश्य को अपना समय समर्पित कर उसे अपनी निष्ठा से महान बनाने का सच्चा सार प्रस्तुत करती है। मैं हर अंक का बेसब्री से इंतज़ार करता हूँ।

ज़रीर दादाचनजी, रोटरी क्लब पूना - मंडल 3131

भावनगर की तीन परियोजनाएं - *रे ऑफ होप,* डिजिटल लाइब्रेरी और मियावाकी वन - वास्तव में प्रेरणादायक हैं। यदि रोटेरियन नियमित रूप से पत्रिका पढ़ें, तो वे रोटरी क्लबों द्वारा की जा रही विविध प्रभावशाली परियोजनाओं को समझ सकते हैं। यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होती है कि 70 वर्षों के बाद एक भारतीय, रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम को रोटरी इंटरनेशनल का उपाध्यक्ष चुना गया है। मैं ग्रामीण इंजीनियरिंग और एमबीए विद्यार्थियों की इंटरव्यू स्किल्स सुधारने के लिए *कैरियर हब* नामक एक व्हाट्सऐप समूह चला रहा हूँ। कवर स्टोरी में ग्रामीण युवाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण की पहल ने मुझे इस कार्य को और निरंतरता के साथ जारी रखने के लिए प्रेरित किया है।

शिवपेरुमल सुब्रमणि

रोटरी क्लब वालाजापेट - मंडल 3231

रोटरी क्लब भावनगर की परियोजनाएं उत्कृष्ट और प्रेरणादायक हैं। विशेष रूप से प्रोजेक्ट एजुकेयर, जो ग्रामीण बच्चों में साक्षरता का प्रसार कर रहा है, वास्तव में भावनात्मक और सराहनीय है। क्लब के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई।

एस एन शन्मुगम रोटरी क्लब पनरुति - मंडल 2981

मुस्कान और अप्रसन्नता

रोटरी क्लब अकोला की सेवा गतिविधियों के शानदार कवरेज के लिए रशीदा भगत का धन्यवाद। शब्दों को पिरोकर उन्हें सुंदर अभिव्यक्ति में बदल देने की अद्भुत कला उन्हें प्राप्त है। फरवरी अंक में ऐसे अनेक सुसंवेदित और प्रभावशाली लेख शामिल हैं, जो पत्रिका के पाठन को अत्यंत रोचक बना देते हैं। *ग्रामीण बच्चों की उड़ान को पंख देने* वाला लेख हमारे ध्यान को विशेष रूप से आकर्षित करता है।

एक और प्रभावशाली लेख है *टीआरएफ़ को 500 करोड़ का दान,* जो एक उदार हृदय वाले रोटेरियन की विशाल दानशीलता को दर्शाता है। ऐसे और भी कई लेख हैं, जो प्रेरणा से भर देते हैं। हर अंक के बाद अगली प्रति का इंतज़ार बना रहता है। देश भर में रोटेरियनों द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट सामाजिक कार्यों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए रोटरी न्यूज़ टीम को हार्दिक बधाई।

राधेश्याम मोदी
रोटरी क्लब अकोला - मंडल 3030

भारतीय सशस्त्र बल निडर क्यों हैं जैसे उत्कृष्ट लेख को पढ़कर हम हमारे वीर सेना अधिकारियों के साहस, निष्ठा और देशभक्ति के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं। ब्रिगेडियर बसेरा कहते हैं कि जो पीढ़ियों को सशस्त्र बलों में शामिल होने के लिए प्रेरित करता है वह है नाम, नमक और निशान। हमारा नाम है भारत। हमारा नमक है यह मिट्टी और हमारा निशान है हमारा राष्ट्रीय ध्वज। इन तीनों के लिए हम किसी भी हद तक जा सकते हैं। मैडम, इस प्रेरणादायक लेख के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद।

डॉ डी हरिश्चंद्र राम
रोटरी क्लब अनंतपुर - मंडल 3160

यह फरवरी अंक के अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित एलबीडब्ल्यू लेख *हौले-हौले पढ़ना, जल्दी-जल्दी पीना* के संदर्भ में है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि लेखक ने अपनी अल्प आय के बावजूद धूम्रपान और मद्यपान जैसी आदतों का उल्लेख किया है।

रोटरी न्यूज़ एक व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली पत्रिका है। रोटेरियन, ऐन्स, एनेट्स, रोटारेकटर और इंटरेक्टर इसे पढ़ते हैं और रोटेरियनों द्वारा किए जा रहे प्रेरणादायक सेवा कार्यों से प्रेरित होते हैं। ऐसे में इस प्रकार के विचारों को स्थान क्यों दिया जाए? कम से कम एक अस्वीकरण तो दिया जा सकता था: धूम्रपान और मद्यपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

एल राधाकृष्णन
रोटरी क्लब चेन्नई आईटी सिटी - मंडल 3233

मैं *रोटरी न्यूज़* का एक उत्साही पाठक हूँ और इसके विचारोत्तेजक लेखों से जीवन के लिए अनेक उपयोगी सीखें प्राप्त की हैं। प्रभावशाली परियोजनाओं का विवरण साझा करने से क्लबों को आवश्यक सामुदायिक सेवा परियोजनाओं की योजना बनाने और उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने में सहायता मिलती है। टीसीए श्रीनिवास राघवन का स्तंभ इस सुंदर पत्रिका का हमेशा एक उत्कृष्ट समापन होता है। सामग्री और डिज़ाइन, दोनों ही दृष्टियों से हमें हर महीने एक विश्वस्तरीय पत्रिका प्रदान करने के लिए टीम *रोटरी न्यूज़* को हार्दिक बधाई।

फरवरी अंक को पढ़कर मैं पहले से भी बेहतर और अधिक प्रतिबद्ध रोटेरियन बन गया हूँ। इसने मुझे एक भारतीय रोटेरियन होने पर गर्व का अनुभव भी कराया। जो लोग ऑरलैंडो में आयोजित इंटरनेशनल असेंबली में शामिल हुए होंगे, वे निश्चित ही अत्यंत उत्साहित रहे होंगे, जैसा कि संपादकीय इंटरनेशनल असेंबली में *भारत की गौरवशाली और विजयी उपस्थिति* में व्यक्त किया गया है। रो ई निदेशक नागेश का संदेश शांति चुपचाप निर्मित की जाती है अत्यंत प्रेरणादायक है।

प्रणेश जाहगीरदार
रोटरी क्लब बीजापुर नॉर्थ - मंडल 3170

मेरा मानना है कि हरिंदर बावेजा की किताब *दे विल शूट यू,* मैडम की समीक्षा हमारी पत्रिका में उपयुक्त नहीं है। हम रोटरी से केवल समाज की सेवा के उद्देश्य से जुड़े हैं, इसलिए संगठन को सशक्त बनाने के लिए इस प्रकार के लेखों से बचना ही बेहतर होगा।

डी जोसेफ एलेक्सिस रोज़र
रोटरी क्लब करमडई - मंडल 3203

कवर रूपरेखाः एस कृष्ण प्रतीश

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।
आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।
WhatsApp **पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।**

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है?

हर महीने हम आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन *रोटरी न्यूज़ प्लस* निकालते हैं। यह महीने के मध्य तक ईमेल के माध्यम से प्रत्येक सदस्य को भेजा जाता है। हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर *रोटरी न्यूज़ प्लस* पढ़ें।

मोनिका लोज़िस्का

सामुदायिक कार्रवाई का दायरा

जल हम सभी को जोड़ता है। सुदूर जंगलों की नदियों से लेकर शहरों के मोहल्लों से होकर बहने वाली छोटी-सी धाराओं तक, मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र मानवता का सहारा हैं। फिर भी, इन जल स्रोतों पर लगातार दबाव बढ़ता जा रहा है। प्रदूषण, अत्यधिक उपयोग और जलवायु परिवर्तन का दबाव हमें याद दिलाते हैं कि मीठे पानी का संरक्षण एक वैश्विक चुनौती है।

रोटरी का हमेशा से यह मानना रहा है कि बदलाव की शुरुआत समुदायों के भीतर से होती है। अब हम यह देखने के लिए काम कर रहे हैं कि सामुदायिक प्रयासों का प्रभाव कितनी दूर तक फैल सकता है। जब स्थानीय सेवा को जोड़ा जाता है, उसका मूल्यांकन किया जाता है और उसे साझा किया जाता है, तो वह एक ऐसी शक्ति बन जाती है, जो भौगोलिक सीमाओं से परे तक फैलती है।

रोटरी क्लब ऑफ पनामा नॉर्डेस्टे द्वारा संचालित एक जल परियोजना इस विचार का एक बेहतरीन उदाहरण है। इस परियोजना ने पनामा के डारिएन प्रांत में रहने वाले आदिवासी समुदायों की सेवा की, जो एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ केवल डोंगी और छोटी नावों से ही पहुँचा जा सकता है। सड़कों की कमी, सीमित बिजली और बिना उपचारित नदी के पानी पर निर्भरता के कारण, परिवारों को गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करना पड़ता था।

इन समुदायों तक पहुँचने के लिए रोटेरियनों को आपूर्ति और सेवाएँ पहुँचाने के तरीकों पर पुनर्विचार करना पड़ा। संयुक्त राज्य अमेरिका के एक सहयोगी क्लब और एक विशेष जल संगठन के साथ मिलकर, उन्होंने एक ऐसे क्षेत्र में सौर ऊर्जा से चलने वाली जल उपचार प्रणालियाँ स्थापित कीं, जहाँ बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। स्थानीय नेताओं को प्रणाली के संचालन और रखरखाव का प्रशिक्षण दिया गया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि स्थापना दल के लौट जाने के बाद भी स्वच्छ जल की आपूर्ति निरंतर जारी रहे।

इसके परिणाम तुरंत दिखाई दिए। जो बच्चे बीमारी के कारण स्कूल नहीं जा पाते थे, वे फिर से कक्षाओं में लौटने लगे। नदियों से पानी लाने की ज़रूरत न होने से वयस्कों को काम करने और अपने परिवारों का भरण-पोषण करने के लिए समय और शक्ति मिली। जो एक जल परियोजना के रूप में शुरू हुआ था, वह स्वस्थ और अधिक लचीले समुदायों की नींव बन गया।

हम अपनी पहुंच का विस्तार इस प्रकार करते हैं: स्थानीय नेतृत्व को वैश्विक साझेदारी, तकनीकी विशेषज्ञता और दीर्घकालिक सोच के साथ जोड़ते हैं।

यही भावना रोटरी और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के बीच 'कम्युनिटी एक्शन फॉर फ्रेश वाटर' पहल के माध्यम से चल रही साझेदारी का मूल आधार है। दुनिया भर में, रोटरी और रोटरेक्ट क्लब जलमार्गों का जीर्णोद्धार कर रहे हैं, आर्द्रभूमि की रक्षा कर रहे हैं और महत्वपूर्ण मीठे पानी के स्रोतों को सुरक्षित रख रहे हैं। इस कार्य का मानचित्रण और मापन करने के लिए डेटा एकत्र करके, हम इसके प्रभाव को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और यह प्रदर्शित कर सकते हैं कि स्थानीय सेवा किस प्रकार वैश्विक समाधानों में योगदान देती है।

डेटा स्वयं में लक्ष्य नहीं हैं; यह एक उपकरण हैं, जो हमें सीखने और सुधार करने में मदद करता है, ताकि रोटरी की सेवा से वास्तविक और मापनीय परिवर्तन ला सके। प्रत्येक परियोजना और पुनर्स्थापित किया गया प्रत्येक जलमार्ग, संरक्षण और जिम्मेदारी की साझा कहानी में योगदान देता है। आप *communityactionforfreshwater.org* पर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और इसमें शामिल हो सकते हैं।

जल, स्वच्छता और साफ-सफाई माह के अवसर पर, मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप अपने समुदाय को सहारा देने वाली मीठे पानी की प्रणालियों और उनकी सुरक्षा में रोटरी की भूमिका पर विचार करें।

जब हम स्थानीय स्तर पर की गई कार्रवाई को वैश्विक दृष्टिकोण से जोड़ते हैं, तो हम स्थायी परिवर्तन लाने की रोटरी की क्षमता को मजबूत करते हैं। साथ मिलकर, अपनी पहुंच का विस्तार करते हुए और कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हुए, हम वास्तव में *भलाई के लिए एकजुट* होते हैं।

फ्रांसेस्को अरेज़ो
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

आशा की किरण जगाता पुणे का शांति केंद्र

विशाल, हरे-भरे विश्वविद्यालय और स्कूल परिसरों का अपना ही एक जादू होता है... वे आपको आपके छात्र जीवन के उन दिनों में वापस ले जाते हैं जहाँ आपकी सबसे बड़ी समस्या या तो वह परीक्षा होती थी जिसकी तैयारी ठीक से नहीं हुई थी, या फिर किसी के लिए आपका दिल का धड़कना होता था, यदि आपका संस्थान सह-शिक्षा वाला हो तो। मेरा साथ ऐसा नहीं था... स्कूल और कॉलेज दोनों ही केवल लड़कियों के लिए थे और उनसे कॉन्वेंट जुड़े हुए थे, जहाँ दिन में पढ़ने वाली छात्राओं के लिए भी समय की सख्त पाबंदी थी। केवल एक बार हमने रिचर्ड बर्टन और पीटर ओ'टूल की क्लासिक फिल्म *बेकेट* (1964) देखने के लिए दो लेक्चर बंक किए थे, यह सोचकर कि साहित्य के छात्र होने के नाते हमें इससे लाभ होगा, लेकिन हम बड़ी मुसीबत में फंस गए थे!

कॉलेज के दिनों से जुड़ी यादें पिछले महीने पुणे के सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में ताज़ा हो गईं, जहाँ रोटरी के आठवें शांति केंद्र का उद्घाटन किया गया। यह भारतीय रोटेरियनों के लिए वास्तव में एक गर्व का क्षण था और जैसा कि टीआरएफ न्यासी भरत पांड्या ने रेखांकित किया, इसकी महत्ता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि रो ई मंडल 3131 और 3141 के रोटरी नेतृत्वकर्ताओं, जिन्होंने पुणे में इस शांति केंद्र की स्थापना में बड़ी भूमिका निभाई है, सहित हमारे ज़ोन के 22 मंडलों के रोटेरियन इस सपने को साकार होते देखने के लिए वहां मौजूद थे। उन्होंने खुलासा किया कि जब फरवरी 2024 में न्यासियों ने एशिया में एक शांति केंद्र स्थापित करने का निर्णय लिया, तो छह देशों के 17 संस्थानों को अपनी रुचि व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया गया था। अंतिम चरण में सिम्बायोसिस और दक्षिण कोरिया के एक विश्वविद्यालय के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा थी, और अंततः सिम्बायोसिस को इस शांति केंद्र की मेजबानी के लिए चुना गया।

शायद ही कभी किसी देश में रो ई अध्यक्ष और टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष दोनों एक ही कार्यक्रम में एक साथ शामिल होते हैं, लेकिन इस उद्घाटन समारोह में अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो और न्यासी अध्यक्ष होलार नेक दोनों उपस्थित थे। यह इस बात का स्पष्ट संदेश था कि रोटरी के लिए ये शांति केंद्र और विश्व शांति को बढ़ावा देने का कार्य कितना महत्वपूर्ण है। एक भावुक भाषण में, अध्यक्ष अरेज़ो ने कहा कि शांति केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि विश्वास, समझ और न्याय की उपस्थिति है। यह दूरियाँ मिटाने और लोगों को गरीबी, नफरत और पूर्वाग्रह से मुक्त जीवन जीने में मदद करने का दैनिक कार्य है, क्योंकि ये चीजें संघर्ष पैदा करती हैं और शांति को नष्ट करती हैं। सबसे दुखद बात यह है कि लोग भीड़ में भी अकेलापन महसूस करते हैं, और जब ऐसा होता है, तो भविष्य के प्रति डर और अनिश्चितता बढ़ती है। युद्ध की ओर ले जाने वाले संघर्ष तब होते हैं जब हम उन अजनबियों से डरते हैं जिन्हें बुरा और खतरनाक दिखाया जाता है। इसकी तुलना अंधेरे से या रात में आवाज़ें सुनकर डरने वाले बच्चे से करते हुए उन्होंने कहा कि इन डरों का समाधान हथियारबंद रक्षकों से नहीं, बल्कि सूचना और ज्ञान से होता है, जिसे प्रदान करना ही रोटरी शांति केंद्र का मुख्य उद्देश्य है। वे डर को समझ में बदलने और भ्रम को स्पष्टता में बदलने में मदद करते हैं। वे ऐसे कौशल सिखाते हैं जो संघर्ष को कम करते हैं और सहयोग को बढ़ावा देते हैं, लोगों को बेहतर ढंग से सुनना सिखाते हैं, विश्वास कायम करते हैं और बिना हिंसा के विवादों को सुलझाते हैं।

आज हमारे आसपास की दुनिया में संघर्षों की कोई कमी नहीं है, और उन्हें सुलझाने तथा शांति को बढ़ावा देने के लिए ऐसे व्यवस्थित संस्थानों के महत्व को इससे बेहतर तरीके से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह बात सुनिश्चित है कि आगामी वर्षों में, विभिन्न संस्कृतियों एवं दृष्टिकोणों के साथ यहाँ आने वाले अंतर्राष्ट्रीय विद्वान अशांत और संघर्षपूर्ण क्षेत्रों में निष्पक्ष मन और दयालु हृदय के साथ काम करने का कौशल प्राप्त करेंगे। ताकि वे नफरत, पूर्वाग्रह और गलतफहमियों को दूर कर सकें, हिंसा को रोक सकें, समस्याओं को सुलझा सकें और संघर्षों से भरी हमारी दुनिया में शांति बहाल कर सकें। इस नेक पहल के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ...

रशीदा भगत

ADVT.

THE SIZZLE OF A HOT KADAI IS THE SYMPHONY OF HOME

WHERE EVERY CRACKLE PROMISES A MASTERPIECE

IDHAYAM SESAME OIL IS THE SOUL OF YOUR KITCHEN

IDHAYAM enhances the natural spices of South Indian cuisine. From the perfect golden Crisp of a Dosa, Crunch of Murukku to the irresistible aroma of Poori, Vada, Bajji, and Bonda. It's an explosion of deliciousness.

The "Deep-Fried" Perfection With a high smoke point and superior stability, IDHAYAM ensures your snacks are perfectly crisp on the outside, fluffy on the inside, and never greasy.

Heart-Healthy Tradition Naturally rich in antioxidants and unsaturated fats, IDHAYAM helps keep your heart as strong as your heritage.

Pure & Natural IDHAYAM is extracted from the finest sesame seeds,it's the **time-honored tradition** that carries your grand-mother's seal of approval.

Tradition you can taste. Memories you can share

IDHAYAM

PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

LEKHA ads/Mar 26/NTEN

निदेशक का संदेश

प्रतिबद्धताएँ बनाएँ और निभाएँ

RID एम मुरुगानंदम ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन के साथ मिलकर किए जा रहे कम्युनिटी वेलफेयर प्रोजेक्ट्स पर चर्चा की, जो रोटरी TN सरकार के साथ पार्टनरशिप में कर रही है। CM ने उन्हें रो ई वाइस प्रेसिडेंट के तौर पर उनके अपॉइंटमेंट पर बधाई दी।

प्रतिबद्धता करें और प्रतिबद्धता बनाए रखें मेरी पसंदीदा कहावतों में से एक है - एक सिद्धांत जिसका मैं पालन करता हूं और जहां भी जाता हूं, प्रचार करता हूं।

जब आप कोई प्रतिबद्धता करते हैं, तो आपका मकसद तय होता है। जब आप उस प्रतिबद्धता को निभाते हैं, तो आपका चरित्र सामने आता है।

जितनी ऊँची आपकी प्रतिबद्धता होगी, उतनी ही गहरी आपकी संतुष्टि की अनुभूति होगी। जापानी दर्शन में, इसे इकिगाई कहा जाता है - अर्थात् जीने का कारण। सार्थक सेवा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता जितनी मजबूत होती है, हमारी इकिगाई उतनी ही संपूर्ण होगी।

एक रोटरी सदस्य के रूप में, आप पहले से ही स्वयं से ऊपर सेवा के लिए प्रतिबद्ध हैं। आइए, हम सरल और ठोस प्रतिबद्धताओं से शुरुआत करें। अपने क्लब की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेने की प्रतिबद्धता बनाएं। उपस्थित रहें। भाग लें। सक्रिय रूप से जुड़ें। रोटरी केवल विचारों से नहीं, बल्कि आपकी सहभागिता और उपस्थिति से फलती-फूलती है।

नए सदस्यों को जोड़ने का संकल्प लें - ऐसे व्यक्तियों को, जो सेवा की मशाल को आगे बढ़ाएँ। हर नया सदस्य नई ऊर्जा, नए संपर्क और नई संभावनाएँ लेकर आता है।

यदि आप किसी नेतृत्वकारी भूमिका में हैं - चाहे क्लब स्तर पर हों या मंडल स्तर पर - तो निरंतर मानक ऊँचे रखें। जैसे-जैसे हम इस रोटरी वर्ष की तीसरी तिमाही की ओर बढ़ रहे हैं, अब समय आ गया है कि आप अपने कार्यकाल की शुरुआत में एक क्लब अध्यक्ष, मंडल गवर्नर या किसी भी पद की जिम्मेदारी निभाते हुए जो संकल्प लिए थे, उन पर दृढ़ता से कायम रहें, उनका पूर्ण पालन करें और उन्हें निर्धारित समय-सीमा के भीतर सम्मानपूर्वक पूरा करें।

सकारात्मक सदस्यता वृद्धि के लिए प्रयास करें। रोटरी फाउंडेशन के लिए अपना समर्थन मजबूत करें। अपनी सार्वजनिक छवि को और प्रभावशाली बनाएँ, ताकि समुदाय रोटरी को विश्वसनीयता और प्रभाव की शक्ति के रूप में स्पष्ट रूप से देख सकें। जब लोग परिणाम देखते हैं, तो यह आपके नेतृत्व के बारे में बहुत कुछ बताता है।

मैं प्रतिबद्धताएँ करने और उन्हें निभाने पर इतना ज़ोर क्यों देता हूँ? क्योंकि प्रतिबद्धता आपको आकार देता है। यह आपके संचार को परिष्कृत करता है, आपकी निर्णय लेने की क्षमता को तेज करता है, आपके प्रतिनिधिमंडल कौशल को मजबूत करता है। यह टीम वर्क सिखाता है, लचीलापन बनाता है और इरादे को पहचान में बदलता है।

जैसा कि दार्शनिक ऐन रैंड ने कहा, किसी उपलब्धि को देखना सबसे बड़ा उपहार है जो एक इंसान दूसरों को दे सकता है। उपलब्धि आकस्मिक नहीं होती। यह निभाए गए वचनों और पूरी की गई प्रतिबद्धताओं का परिणाम होती है।

किसी नेक कार्य के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करना मानवता की अभिव्यक्ति है। चुनौतियों, विकर्षणों और बाधाओं के बावजूद उस प्रतिबद्धता को बनाए रखना - यह किसी और भी उच्चतर गुण की अभिव्यक्ति है। यह वह अनुशासन है जो सेवा को नेतृत्व में और नेतृत्व को विरासत में परिवर्तित करता है।

रोटरी केवल पदों के आधार पर आगे नहीं बढ़ती है। यह वादों को निभाने के कारण बढ़ता है।

इसलिए आइए हम सचेत रूप से और लगातार प्रतिबद्ध हों। और सबसे बढ़कर, आइए हम अपनी हर प्रतिबद्धता को निभाएँ - रोटरी के प्रति, अपने समुदायों के प्रति और स्वयं के प्रति।

क्योंकि जब हम ऐसा करते हैं, तो हम केवल परियोजनाएं नहीं बनाते हैं। हम विश्वास बनाते हैं. हम विश्वसनीयता बनाते हैं. हम *भलाई के लिए एकजुट* होने के लिए प्रतिबद्ध एक समुदाय का निर्माण करते हैं।

एम मुरुगानंदम
रो ई निदेशक, 2025-27

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

इसकी शुरुआत पानी से होती है

2013 से, रोटरी फाउंडेशन ने जल, स्वच्छता और हाइजीन से जुड़ी हजारों पहलों को समर्थन देने के लिए 230 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का निवेश किया है। इन आंकड़ों के पीछे रोटरी का एक विशिष्ट दृष्टिकोण है। एक बार के समाधान देने के बजाय, हम समुदायों को पीढ़ियों तक प्रणालियों का प्रबंधन करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं, दान से आगे बढ़कर स्थायी परिवर्तन लाते हैं। रोटरी के जल, स्वच्छता और हाइजीन क्षेत्र की प्रबंधक **एरिका ग्विन** अपना दृष्टिकोण साझा करती हैं:

मैंने सैकड़ों सदस्यों के साथ काम करते हुए उनकी परियोजनाओं की स्थिरता और प्रभाव को बेहतर बनाने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की है। साइट विज़िट के दौरान, मैं न केवल उनके समर्पण से, बल्कि उनके प्रभाव की व्यापकता से भी प्रभावित हुआ हूँ - अक्सर ऐसे तरीकों से, जिनकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होती।

उत्तरी युगांडा में रोटरी के काम के सिलसिले में, मेरी मुलाकात रोटरी के एक सदस्य से हुई जो विद्रोही लॉर्ड्स रेजिस्टेंस आर्मी में बाल सैनिक रह चुका था और वहां से भाग निकला था। उसने बताया कि संघर्ष के दौरान स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र शरणस्थल बन गए थे। कई साल बाद, रोटरी से जुड़ने के बाद, वह समाज को कुछ लौटाना चाहता था। उसने उन्हीं स्कूलों और सुविधाओं में पानी और स्वच्छता व्यवस्था सुधारने के लिए स्वेच्छा से काम किया, जो एक बार फिर शरणस्थल बन गए थे - इस बार पूरे समुदाय के स्वास्थ्य, सुरक्षा और खुशहाली के लिए।

भारत के महाराष्ट्र में, मैंने देखा कि कैसे हमारे मप्रोग्राम्स ऑफ स्केलफ अनुदान पहल, मपार्टनर्स फॉर वॉटर एक्सेस एंड बेटर हार्वेस्ट्स इन इंडियाफ, किस प्रकार एक पारंपरिक कृषि क्षेत्र में सिंचाई सुविधा प्रदान कर रही है, जिससे महिलाओं को सशक्त बनाया जा रहा है। हालांकि महिलाएं जमीन की मालिक नहीं थीं, लेकिन जल परियोजना ने उन्हें वनों की देखभाल और अन्य आय-सृजन गतिविधियों में शामिल होने में सक्षम बनाया। वे कृषि तकनीकों के बारे में जानकार हुईं, जिससे उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता और गरिमा में वृद्धि हुई।

यह कोई संयोग नहीं है कि संघर्ष से प्रभावित क्षेत्रों में जल संकट सबसे गंभीर है। हैती में, मैंने देखा है कि कैसे ये परियोजनाएँ अस्थिरता और हिंसा से उबर रहे समुदायों में लचीलापन बहाल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मुझे यही बात हर जगह दिखाई देती है: ये परियोजनाएँ स्वच्छ पानी से कहीं अधिक प्रदान करती हैं। ये रोटरी के अन्य फोकस क्षेत्रों को बढ़ावा देती हैं और सुरक्षा, गौरव और आशा का स्रोत हैं

वास्तव में, जल परियोजनाएं स्वास्थ्य में सुधार लाती हैं, आर्थिक अवसरों को बढ़ावा देती हैं और स्कूली शिक्षा में वृद्धि करके इसे और मजबूत बनाती हैं, खासकर लड़कियों के लिए जिन्हें अब पानी लाने में घंटों खर्च नहीं करने पड़ते। साथ ही, ये गरीबी से लड़ने में भी सहायक हैं।

हमारे फाउंडेशन को दान देकर और जल परियोजनाओं में स्वयंसेवा करके आप इस सफलता में भागीदार बनते हैं। हम जो भी कार्य करते हैं, उससे कहीं न कहीं किसी न किसी को अवसर अवश्य मिलता है।

होल्गर नेक
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981	लियोन जे
RID 2982	शिवसुंदरम पी
RID 3000	कार्तिक जे
RID 3011	रविंदर गुगनानी
RID 3012	अमिता अनिल मोहिंदरू
RID 3020	कल्याण चक्रवर्ती वाई
RID 3030	ज्ञानेश्वर शेवाळे
RID 3040	सुशील मल्होत्रा
RID 3053	निशा शेखावत
RID 3055	निगमकुमार एल चौधरी
RID 3056	प्रज्ञा मेहता
RID 3060	अमरदीप सिंह बुनेत
RID 3070	रोहित ओबेरॉय
RID 3080	रवि प्रकाश
RID 3090	भूपेश मेहता
RID 3100	नितिन कुमार अग्रवाल
RID 3110	राजेन विद्यार्थी
RID 3120	अशुतोष अग्रवाल
RID 3131	संतोष मधुकर मराठे
RID 3132	सुधीर वी लातुरे
RID 3141	मनीष मोटवानी
RID 3142	हर्ष वीरेंद्र मकोल
RID 3150	राम प्रसाद एस वी
RID 3160	रविंद्र एम के
RID 3170	अरुण डैनियल भांडारे
RID 3181	रामकृष्ण पी कन्नन
RID 3182	पलक्शा के
RID 3191	श्रीधर बी आर
RID 3192	एलिज़ाबेथ चेरियन
RID 3203	धनासेकर बी
RID 3204	बिजोश मैनुअल
RID 3205	रमेश जी एन
RID 3206	चेल्ला के राघवेन्द्रन
RID 3211	टीना एंटनी कुन्नुमकल
RID 3212	जे धिनेश बाबू
RID 3231	वी सुरेश
RID 3233	डी देवेंद्रन
RID 3234	विनोद कुमार सराओगी
RID 3240	कामेश्वर सिंह एलांगबम
RID 3250	नम्रता
RID 3261	अमित जायसवाल
RID 3262	मनोज कुमार त्रिपाठी
RID 3291	रामेन्दु होमचौधुरी

यह पत्रिका **पी टी प्रभाकर** द्वारा दुगर टावर्स, तीसरी मंझिल, 34, मार्शल्स रोड, एग्मोर, चेन्नई 600 008 से **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित की जाती है, इसका संपादन **रशीदा भगत** करती हैं और इसे **रासी ग्राफिक्स** द्वारा 40 पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014, भारत में प्रिंट किया जाता है।

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

एम मुरुगानंदम **रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3000
के पी नागेश **रो ई निदेशक**	RID 3191
डॉ भरत पांड्या **टीआरएफ ट्रस्टी**	RID 3141
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
डॉ महेश कोटबागी	RID 3131
ए एस वेंकटेश	RID 3234
राजु सुब्रमण्यन	RID 3141
अनिरुधा रॉयचौधरी	RID 3291
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2025-26)

रोहित ओबेरॉय **अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3070
ज्ञानेश्वर शेवाळे **वाईस चेयरमेन, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3030
एम के रविंद्र **सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3160
चेल्ला के राघवेन्द्रन **कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3206

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

टीआरएफ ट्रस्टी का संदेश

पुणे के सिम्बायोसिस विश्वविद्यालय में नया रोटरी शांति केंद्र

महज़ार मील की यात्रा एक छोटे से कदम से शुरू होती है।फ रोटरी की यात्रा भी एक व्यक्ति, पॉल हैरिस के कदम और सपने से शुरू हुआ, जिनका उद्देश्य मित्रता और आपसी सहयोग की भावना को बढ़ावा देना था - ये दोनों शांति के लिए आवश्यक तत्व हैं। सिम्बायोसिस शैक्षणिक संस्थान की शुरुआत भी एक व्यक्ति - डॉ एस बी मुजुमदार के सपने से हुई, जिनके दृष्टिकोण में वसुधैव कुटुंबकम का विचार था - यानी विश्व एक परिवार है - जो शांति के लिए एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। 26 जनवरी, 2026 को, ये दोनों दृष्टिकोण और सफर एक साथ जुड़ गए जब भारत और वास्तव में दक्षिण एशिया में पहला रोटरी शांति केंद्र पुणे के सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (एसआईयू) में उद्घाटित किया गया। यह दोनों संगठनों के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। यह सिम्बायोसिस और रोटरी के साझा मूल्यों को दर्शाता है - सत्यनिष्ठा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अंतर-सांस्कृतिक जुड़ाव और वैश्विक क्षमताओं को समझना और विकसित करना।

छह एशियाई देशों के 17 संस्थानों से रुचि व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किए जाने से लेकर 20 संकेतकों और स्थल भ्रमण सहित कठोर मूल्यांकन मानदंडों तक, सुविचारित चयन प्रक्रिया के बाद, एसआईयू का चयन भारत में रोटरी के लिए गर्व, गौरव और खुशी का विषय है। उद्घाटन समारोह में 22 मंडलों के रोटेरियनों की उपस्थिति इस शांति केंद्र के प्रति रोटरी और भारत में रोटेरियनों की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। मेजबान मंडलों - 3131 और 3141, आवेदन प्रक्रिया में मार्गदर्शन और सहायता करने वाली टीम, सिम्बायोसिस और उसके समर्पित नेतृत्व, और रोटरी कर्मचारियों को इस कार्य को संभव बनाने के लिए हार्दिक बधाई और धन्यवाद।

वर्ष 2024 में वैश्विक अर्थव्यवस्था पर हिंसा के आर्थिक प्रभाव का अनुमान 19.97 ट्रिलियन डॉलर या प्रति व्यक्ति -2455 डॉलर लगाया गया था। यह एक गंभीर वास्तविकता और बेहद चिंताजनक मुद्दा है। हिंसा पर प्रतिक्रिया देने के बजाय, रोटरी में हम शांति के अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने में विश्वास करते हैं - स्वास्थ्य सेवा, जल, स्वच्छता, साक्षरता, आर्थिक विकास और 'सकारात्मक शांति' के लिए एक समग्र दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हुए। रोटरी के शांति केंद्र और पीस स्कॉलर्स कार्यक्रम शांति के लिए हमारे कार्यों में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। उभरते नेताओं का समर्थन करके और उन्हें संघर्ष समाधान और सतत विकास में सशक्त बनाकर रोटरी स्थानीय और वैश्विक स्तर पर प्रभाव पैदा करती है।

आर्च क्लम्फ के शब्दों को थोड़ा बदलकर कहें तो: 'यदि हम मंदिर, चर्च या मस्जिदें बनाते हैं, तो वे समय के साथ खंडहर बन सकती हैं; यदि हम स्मारक बनाते हैं तो समय उन्हें नष्ट कर देगा; लेकिन यदि हम पुरुषों और महिलाओं के मन में करुणा, ईमानदारी, सहयोग और सेवा की भावना पैदा करें तो हम कुछ ऐसा कर रहे हैं जो इस सभ्यता के अस्तित्व के दौरान कायम रहेगा।' रोटरी के शांति निर्माण के प्रयास ठीक इसी उद्देश्य से किए गए हैं - मानसिकता में परिवर्तन लाना और प्रत्येक व्यक्ति के भीतर छिपी क्षमता को उजागर करना - ताकि हमारी दुनिया में बदलाव लाया जा सके।

यह नया शांति केंद्र महत्वाकांक्षी युवाओं के लिए शांति विद्वान बनने का एक अवसर प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह भारत और एशिया में अधिक शांतिपूर्ण, न्यायसंगत और करुणामय विश्व बनाने का भी अवसर प्रदान करता है। इसी भावना के साथ - आमेन। रोटरी का आनंद लें।

भरत पांड्या
टीआरएफ ट्रस्टी

रोटरी का आठवाँ शांति केंद्र सिम्बायोसिस, पुणे में उद्घाटित किया गया

रशीदा भगत

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक और सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, पुणे के संस्थापक और चांसलर प्रोफेसर एस बी मजूमदार दीप जलाते हुए, (बाएं से) रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, उनकी पत्नी अन्ना, सुज़ैन नेक, विद्या येरवडेकर, विश्वविद्यालय की प्रो-कुलपति और ट्रस्टी भरत पंड्या भी चित्र में शामिल हैं।

आज दुनिया जिन संघर्षों का सामना कर रही है उनमें से अधिकांश भय और एक-दूसरे को समझने की विफलता का परिणाम हैं। कई लोग शांति की बात ऐसे करते हैं मानो वह केवल युद्ध की अनुपस्थिति हो, लेकिन शांति उससे कहीं अधिक है। शांति विश्वास, समझ और न्याय की उपस्थिति है। यह रोज़ का वह प्रयास है जिसमें हम अंतरों को पाटकर लोगों को गरीबी, घृणा और पक्षपात मुक्त जीवन जीने में सहायता करते हैं क्योंकि यही बातें संघर्ष पैदा करती हैं और शांति को नष्ट करती हैं, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो ने कहा। वह दुनिया में रोटरी के आठवें शांति केंद्र और दक्षिण एशिया के पहले शांति केंद्र के उद्घाटन समारोह में भाग ले रहे थे। यह केंद्र महाराष्ट्र के पुणे स्थित सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (एसआईयू) के 400 से अधिक एकड़ में फैले विशाल परिसर में स्थित है।

स्वतंत्रता और प्रत्येक मानव की गरिमा के सम्मान के बिना शांति का अस्तित्व नहीं हो सकता। लेकिन हम एक अजीब समय में जी रहे हैं, जहाँ लोगों के पास पहले से कहीं अधिक स्वतंत्रता है, फिर भी अक्सर ''यह स्वतंत्रता केवल उनके अहंकार की सेवा करती है। हम मानवता की देखभाल करने के अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं। हम अन्य लोगों के पास रहकर भी उनसे दूरी महसूस करते हैं और भीड़ में भी अकेलापन महसूस करते हैं। जब आप भीड़ में अकेले होते हैं, तो आपका भय बढ़ने लगता है। दुनिया के कई हिस्सों में लोग अनिश्चित भविष्य से डरते हैं। वे अपनी पहचान खोने से डरते हैं और उन अजनबियों से भी डरते है जिन्हें उन्हें बुरा और खतरनाक बताकर प्रस्तुत किया गया है।''

अरेज़ो ने कहा कि सबसे दुखद बात यह थी कि दोनों पक्ष एक ही कहानी बता रहे थे - दोनों तरफ का भय एक हथियार बन गया था। लेकिन भय को न तो भागकर हराया जा सकता है और न ही आक्रामकता से। रात में अंधेरे या किसी आवाज़ से डरने वाले एक बच्चे का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे भय सशस्त्र सुरक्षा से नहीं बल्कि जानकारी से दूर होते हैं। ज्ञान ही शांति की ओर पहला कदम है। और यही एक रोटरी शांति केंद्र का उद्देश्य है, जो भय को समझ में बदलने और भ्रम को स्पष्टता में परिवर्तित करने में मदद करता है। यह ऐसे कौशल सिखाता है जो संघर्ष को कम करने और सहयोग को बढ़ावा देने के साथ लोगों को ध्यान से सुनने, विश्वास जीतने और बिना हिंसा के विवाद सुलझाना सिखाता है।

अरेज़ो ने कहा कि अच्छे इरादे महत्वपूर्ण तो होते हैं मगर पर्याप्त नहीं और शांति अपने आप नहीं आती। शांति निर्माण के लिए कौशल, अभ्यास और ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो कठिन परिस्थितियों में शांत मन और दृढ़ हृदय के साथ काम करने के लिए प्रशिक्षित हों। एक शांति केंद्र एक मजबूत तंत्र भी तैयार करता है। इस शांति केंद्र में प्रशिक्षित लोग अकेले नहीं होते। वे कई देशों और संस्कृतियों में इस कार्य को करने वाले अन्य लोगों से जुड़े होते है। जब शांति केवल एक व्यक्ति के कंधे पर टिकी होती है तो वह नाजुक होती है, लेकिन जब शांति मिलकर आगे बढ़ाई जाती है तो वह अधिक मजबूत होती है।

रोटरी शांति केंद्रों में इसीलिए निवेश करती है ताकि सिर्फ आज के लिए ही नहीं बल्कि लंबे भविष्य के लिए भी शांति का निर्माण किया जा सके। इस वर्ष की उनकी थीम - *Unite for Good* - केवल एक नारा नहीं थी। यह अपने भीतर, अपने समुदायों में और अपनी दुनिया में शांति स्थापित करने की एक चुनौती है। 'अच्छाई के लिए एकजुट होने' का अर्थ यह नहीं है कि हम सभी एक जैसे बन जाएँ या अपने मतभेदों को मिटा दें। इसका अर्थ यह है कि हम मतभेदों को दुश्मन के रूप में देखना बंद करें और एक साथ मिलकर काम करने का निर्णय लें - विशेष रूप से तब, जब यह आसान न लगता हो।

रो ई अध्यक्ष ने कहा कि एक विश्वविद्यालय केवल सीखने का स्थान नहीं होता बल्कि सुनने का भी स्थान होता है। यह ऐसा स्थान है जहाँ प्रश्नों, बहस और सत्य के लिए जगह होती है क्योंकि शांति को ऐसे ही वातावरण की आवश्यकता होती है। आज

अगर हमें दुनिया में शांति चाहिए, तो हमें दूसरे के प्रति अपने डर का सामना करना होगा – उस दूसरे व्यक्ति का, दूसरी संस्कृति का, और जीवन जीने के दूसरे तरीके का। हमें आधुनिक जीवन की उन प्रवृत्तियों का विरोध करना होगा जो हमें एक-दूसरे से अलग, अकेला और संकीर्ण बना देती हैं।

फ्रांसेस्को अरेज़ो
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

क्या पेशकश है

सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, पुणे में स्थापित नवीनतम रोटरी शांति केंद्र अपने विद्यार्थियों को शांति और विकास अध्ययन में एक वर्ष का पूर्णतः वित्तपोषित पीजी डिप्लोमा कार्यक्रम प्रदान करेगा। रोटरी के शांति कार्यक्रम विशेष रूप से मध्यम स्तर (मिड-करियर) के उन पेशेवरों के लिए तैयार किए गए हैं, जो सरकार और निजी क्षेत्रों में कल्याण, विकास, कानून-व्यवस्था, न्यायिक प्रणाली आदि से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। पुणे स्थित यह केंद्र एशिया और एशियाई समुदायों के पेशेवरों को एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेगा।

एसआईयू में इस पीजी डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए आवेदन 1 फरवरी से 15 मई, 2026 तक खुले रहेंगे। रोटरी पीस फेलोशिप कार्यक्रमों के बारे में अधिक जानकारी और आवेदन प्रक्रिया जानने के लिए rotary.org/peace-fellowships पर जाएँ।

वर्तमान में रोटरी दुनिया भर से समर्पित शांति और विकास नेताओं को विश्वभर में अपने आठ शांति केंद्रों में अध्ययन करने के लिए प्रति वर्ष अधिकतम 170 पूर्णतः वित्तपोषित फेलोशिप प्रदान करता है।

हमने इस नए रोटरी शांति केंद्र का उद्घाटन किया है और हम इस सरल विश्वास को फिर से दोहराते हैं कि शांति उद्देश्यपूर्ण तरीके से बनाई जा सकती है - न तो जल्दबाजी में, न ही परिपूर्ण रूप से, बल्कि सीखने, प्रशिक्षण और साझेदारी के माध्यम से सुनियोजित प्रयासों द्वारा।

रोटरी एक ऐसा संगठन है जो मित्रता, एक-दूसरे को जानने, समझने और एक-दूसरे की परवाह करने के सिद्धांतों पर बना है। जब हम सीमाओं के पार मित्रता का निर्माण करते हैं, तब हम शांति का निर्माण करते हैं। शांति निर्माण के लिए आत्मचिंतन भी आवश्यक है। यदि हम दुनिया में शांति चाहते हैं, तो हमें दूसरों के प्रति अपने भय का सामना करना होगा - दूसरे व्यक्ति का, दूसरी संस्कृति का और अलग जीवन-शैली का। हमें आधुनिक जीवन की उन प्रवृत्तियों का विरोध करना होगा जो हमें अलग-थलग करके खुद में समेट कर रख देती हैं।

शांति उन छोटे-छोटे कदमों से आती है, जो मिलकर आपसी सम्मान और समझ की ओर बढ़ाए जाते हैं। शांति मूल रूप से ज्ञान है, अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूकता है और अपने तथा दूसरों के अधिकारों की समझदारी से रक्षा करना है। यह एक साझा मार्ग है, जो लंबा और कठिन हो सकता है लेकिन यदि हम इसपर साथ मिलकर चलते है तो इसे आसानी से पार किया जा सकता है।

अपने आठवें शांति केंद्र का उद्घाटन करके रोटरी सीखने, साझेदारी करने और सेवा करने के लिए एक द्वार खोल रहा है। यह एक ऐसे स्थायी स्थल का निर्माण करना है, जहाँ शांति केवल चर्चा का विषय नहीं होगी बल्कि उसे सीखा जाएगा, अभ्यास में लाया जाएगा और दुनिया तक पहुँचाया जाएगा।

सभा को संबोधित करते हुए टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष होल्गर नेक ने कहा कि रोटरी शांति केंद्र रोटरी के लिए गर्व का विषय हैं और एक ऐसे भविष्य में निवेश हैं जो न्याय, समझ और समस्याओं के समाधान की नींव पर निर्मित है।

टीआरएफ, अपने उदार दानदाताओं के सहयोग से रोटेरियनों को करुणा को कर्म में बदलने में सहायता करने के लिए अस्तित्व में है और यह केंद्र पुणे में तथा यहाँ अध्ययन और विकास करने वाले लोगों के हृदय और करियर में शांति निर्माण का एक नया घर बनेगा। फाउंडेशन रोटेरियनों को अपने सर्वश्रेष्ठ विचारों को वास्तविकता में बदलने में सक्षम बनाता है - व्यापक स्तर पर, मजबूत निगरानी के साथ और दीर्घकालिक प्रभाव के साथ। हम ऐसी परियोजनाओं और कार्यक्रमों में निवेश करते हैं जो स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं, अवसरों का विस्तार करते हैं और समुदायों को सशक्त बनाते हैं। और हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हमारा विश्वास है कि गरिमा और आशा कोई दुर्लभ विशेषाधिकार नहीं बल्कि मानव जीवन की सामान्य और स्वाभाविक परिस्थितियाँ होनी चाहिए।

यही कारण है कि शांति रोटरी के मिशन का एक आधारस्तंभ है। उसके शांति केंद्रों ने **1,800 से अधिक शांति निर्माताओं** को प्रशिक्षित किया है ताकि वे सरकार, शिक्षा और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में अपने करियर के माध्यम से शांति के प्रभावी प्रेरक बन सकें। इसीलिए आज का दिन इन कठिन समयों में इतना महत्वपूर्ण है। एक नए शांति केंद्र का अर्थ है ज्ञान का एक नया स्रोत, प्रशिक्षित नेताओं का एक नया तंत्र और एक ऐसा नया स्थान जहाँ रोटरी के मूल्य लोगों के विचारों और कार्यों में जड़ें जमा सकें - ताकि वे इन्हें इस परिसर से आगे भी लेकर जा सकें।

नेक ने कहा कि रोटरी शांति केंद्र उतना ही मजबूत है जितनी मजबूत वह संस्था है जो उसकी मेज़बान है। इसीलिए हम सिम्बायोसिस विश्वविद्यालय के प्रति अत्यंत आभारी हैं, जिसका शिक्षा, सेवा और समुदायों के बीच समझ विकसित करने के प्रति स्पष्ट संकल्प है। ये मूल्य रोटरी के मूल्यों के बहुत निकट हैं, जो मित्रता और सेवा पर आधारित हैं, ठीक वैसे ही जैसे सिम्बायोसिस सीखने और संबंधों पर आधारित है। साथ मिलकर हम एक अत्यंत सशक्त संयोजन हैं। हम इसे केवल एक साधारण समझौता नहीं मानते। हम इसे एक दीर्घकालिक साझेदारी के

यूनिवर्सिटी में पीस पोल लगाने के बाद ट्रस्टी चेयर नेक, सुज़ैन, रो ई अध्यक्ष अरेज़ो, अन्ना, ट्रस्टी पांड्या और माधवी, PRIDs महेश कोटबागी और अनिरुद्धा रॉयचौधरी, DG संतोष मराठे, PDG मंजू फड़के, प्रोफेसर मजूमदार और विद्या येरवडेकर।

बाएँ से: TRF ट्रस्टी पांड्या, प्रोफेसर मजूमदार, ट्रस्टी चेयर नेक, रो ई अध्यक्ष अरेज़ो और विद्या येरवडेकर।

रूप में देखते हैं - ऐसी साझेदारी जिसे हम महत्व देंगे, संरक्षित रखेंगे और आगे बढ़ाएँगे।

न्यासी प्रमुख ने भारत से टीआरएफ न्यासी भरत पंड्या का भी आभार व्यक्त किया जिन्होंने रोटरी को सिम्बायोसिस से जोड़कर एक सशक्त साझेदार की पहचान करने में सहायता की। ऐसी साझेदारियाँ केवल संयोग से नहीं बनतीं बल्कि इसके लिए बहुत परिश्रम की आवश्यकता होती है। उन्होंने रो ई मंडल 3141 और 3131 के सदस्यों को भी धन्यवाद दिया, जिन्होंने इस केंद्र में आने वाले शांति निर्माताओं की मेज़बानी की जिम्मेदारी स्वीकार की है। उन्होंने कहा कि मेज़बानी केवल व्यवस्थाओं तक सीमित नहीं है; इसका अर्थ है उनका स्वागत करना और उनका समर्थन करना। इसका अर्थ यह सुनिश्चित करना है कि विभिन्न स्थानों से आने वाले लोग यहाँ अपनापन महसूस करें और यहाँ सफलता प्राप्त कर सकें। आपकी भूमिका उनके अनुभव को आकार देने में मदद करेगी और इस शांति केंद्र के भविष्य को भी दिशा देगी। और इस कार्य में टीआरएफ आपके साथ खड़ा रहेगा।

एक नया शांति केंद्र केवल एक संस्था नहीं, बल्कि ज्ञान का नया स्रोत है; प्रशिक्षित नेतृत्व का एक नया सशक्त नेटवर्क है; और ऐसा स्थल है जहाँ रोटरी के मूल्यों की जड़ें लोगों के विचारों और कर्मों में गहराई तक उतर सकें – ताकि वे इन मूल्यों को इस परिसर से आगे, व्यापक समाज तक लेकर जाएँ।

होल्गर नेक
ट्रस्टी चेयर

उन्होंने अभ्यर्थियों को आश्वस्त किया कि हर शांति निर्माताओं के पीछे सहयोग का एक मजबूत तंत्र होता है - जिसमें संकाय सदस्य, मार्गदर्शक, रोटेरियन, सामुदायिक साझेदार और दानदाता शामिल होते हैं। रोटरी इसी तरह काम करती है। हम दुनिया भर में और सेवा करने की इच्छा रखने वाले लोगों के लिए सहयोग की एक सुदृढ़ व्यवस्था तैयार करते हैं।

ऐसे शांति केंद्रों को संभव बनाने वाले टीआरएफ के उदार दानकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए नेक ने उन्हें आश्वासन दिया कि उनके योगदान का उपयोग सावधानीपूर्वक, पारदर्शिता और वास्तविक प्रभाव के साथ किया जाएगा। जब हम कहते हैं कि हम शांति के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो इसका अर्थ यह भी है कि हम उस कठिन परिश्रम के प्रति भी प्रतिबद्ध हैं, जिसकी शांति के लिए अनेक वर्षों तक आवश्यकता होती है। यह तो केवल एक शुरुआत है नए शांति-निर्माताओं के लिए कुछ नया सीखने और नई मित्रताएं करने की शुरुआत, जो दुनिया में संघर्षों को कम करने एवं विश्वास जीतने के लिए बेहतर तैयारी के साथ जाएँगे।

न्यासी प्रमुख ने आगे कहा कि रोटरी का मिशन स्थायी परिवर्तन लाना है और उस मिशन का केंद्र शांति है। यह नया रोटरी शांति केंद्र एक-एक साथी, एक-एक समुदाय और एक-एक साझेदारी के माध्यम से जीवन बदलने में मदद करेगा।

एसआईयू के संस्थापक एवं कुलाधिपति प्रोफेसर एस बी मजूमदार ने कहा कि वह अक्सर यह प्रशंसा सुनते रहते हैं कि उन्होंने एक अद्भुत विश्वविद्यालय की स्थापना की है। उनका जन्म महाराष्ट्र के कोल्हापुर ज़िले के एक छोटे से गाँव में हुआ था। वहाँ न बिजली थी, न टावर; न फोन, न टीवी और न ही रेडियो। मैंने अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा दो छोटे सरकारी स्कूलों से पूरी की। और उन स्कूलों की सबसे बड़ी खूबसूरती यह थी कि वहाँ गरीब और अमीर, विभिन्न जातियों और धर्मों के माता-पिता के बच्चे एक साथ पढ़ते थे।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वह 1963 में पुणे के फर्ग्युसन कॉलेज में शामिल हुए और बाद में सिम्बायोसिस की स्थापना की। इस यात्रा के दौरान उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा और उन्हें बहुत दुखद और कड़वे अनुभव हुए। एक बार उन्होंने

घाना के एक छात्र से पूछा, तुम अपने जीवन में क्या करना चाहते हो? उसने कहा, मैं आपके शहर से जितनी जल्दी हो सके भाग जाना चाहता हूँ। उन्होंने पूछा, क्यों? उसने जवाब दिया, सुबह जब मैं बाथरूम जाता हूँ, तो आपके भारतीय छात्र या तो अपनी आँखें बंद कर लेते हैं या अपना सिर घुमा लेते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि सुबह-सुबह काला रंग देखना अशुभ होता है। जब मैं लोकल बस में यात्रा करता हूँ, तो भारतीय लड़कियाँ मेरे पास बैठने के बजाय खड़े रहना पसंद करती हैं।

केन्या, युगांडा, तंजानिया, वियतनाम, थाईलैंड और श्रीलंका से आए कई विद्यार्थियों से ऐसे ही अनुभव सुनने के बाद वह अत्यंत व्यथित और निराश हुए। वह सोचने लगे कि ये छात्र पुणे, भारत और हमारी संस्कृति के बारे में अपने देश में हमारी क्या छवि लेकर जाएंगे। इसीलिए उन्होंने 10x12 के एक छोटे से कमरे में एक केंद्र की शुरुआत की। वनस्पति विज्ञान के शिक्षक होने के कारण *सिम्बायोसिस* शब्द स्वाभाविक रूप से उनके मन में आया। उन्हें यह एहसास हुआ कि भले ही उनके रंग और संस्कृति अलग हों लेकिन उनका रक्त भी हमारी तरह लाल ही है। उन्होंने सोचा कि यदि हम इन विदेशी विद्यार्थियों को शिष्टाचार और अच्छा व्यवहार करके घर से दूर एक घर जैसा वातावरण दें, तो वे दुनिया में हमारे सांस्कृतिक राजदूत बनेंगे। और इसी प्रकार सिम्बायोसिस इंटरनेशनल कल्चरल सेंटर की स्थापना हुई ताकि सांस्कृतिक शिक्षा उनके चुने हुए किसी भी शैक्षणिक क्षेत्र के साथ-साथ चल सके।

कृतज्ञ प्रोफेसर मुजुमदार ने कहा कि जब सिम्बायोसिस अपने शुरुआती संघर्षों से गुजर रहा था, तब रोटरी ने ही हमारे सहयोग के लिए आगे आकर हमें सिम्बायोसिस एजुकेशनल सेंटर शुरू करने के लिए ₹1 लाख दिए। हमारी साझेदारी 1973 से शुरू हुई और विभिन्न रूपों में निरंतर जारी रही।

रोटरी क्लबों और सिम्बायोसिस इंटरनेशनल के विद्यार्थियों के बीच नियमित रूप से आदान-प्रदान भी होते रहे। यह वैश्विक समझ को बढ़ावा देने का एक छोटा और सरल तरीका है, जो शायद विश्व शांति की ओर ले जा सकता है।

2002 में इस संस्था को विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ और अब इसके ऑफ-कैंपस केंद्र बेंगलुरु, हैदराबाद, नोएडा, नागपुर, नासिक और मुंबई में हैं और हाल ही में दुबई में भी स्थापित किए गए हैं। भारत में 1,053 विश्वविद्यालय और 50,000 से अधिक कॉलेज हैं। लेकिन सिम्बायोसिस में विशेष जोर अंतर्राष्ट्रीयकरण पर है; यहाँ 85 देशों और भारत के सभी राज्यों से विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। वे साथ खेलते हैं, साथ पढ़ते हैं, साथ गाते हैं और अक्सर साथ झगड़ते भी हैं।

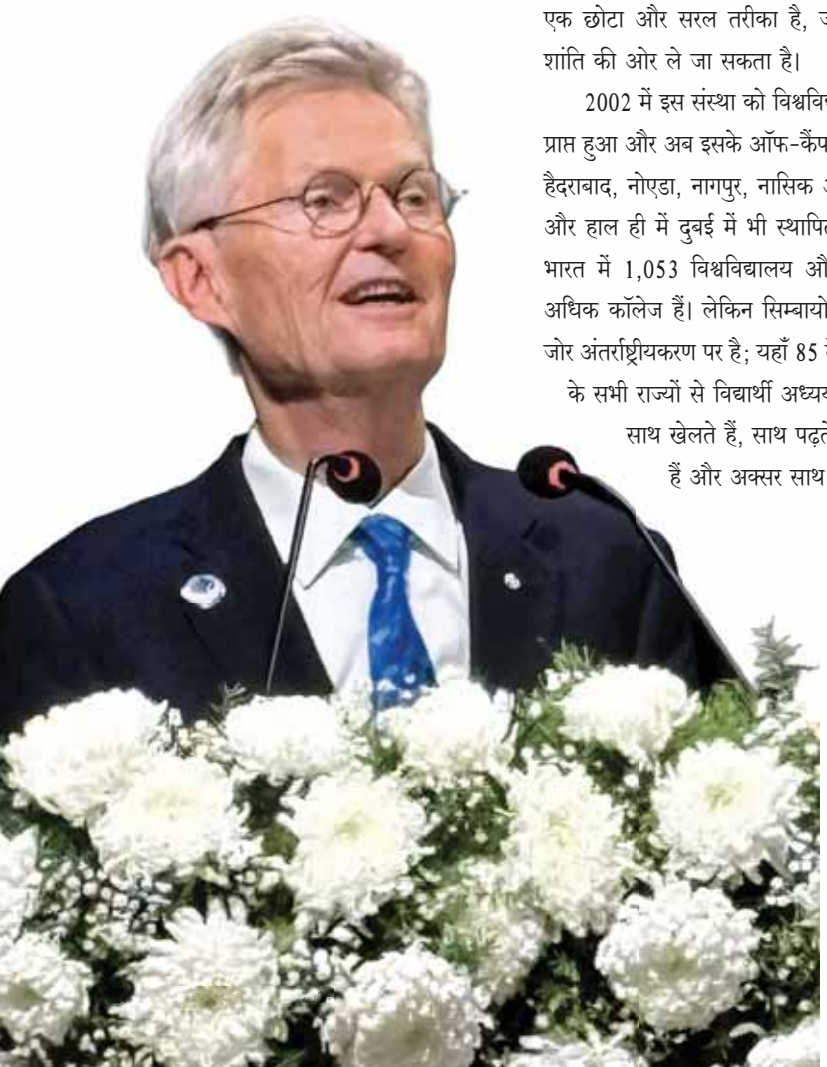

उनसे अक्सर उनके भावी लक्ष्य के बारे में पूछा जाता है और उनका जवाब होता है - वैश्विक नागरिकों का निर्माण करना। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि रोटरी शांति केंद्र वैश्विक विद्यार्थियों के लिए एक वैश्विक संदेश देगा कि शांति ही मानवता की सच्ची आकांक्षा है। युद्ध और लड़ाइयाँ मानव समस्याओं का समाधान नहीं हैं।

उन्होंने उपस्थित रोटेरियनों को आश्वासन दिया कि यह शांति केंद्र निरंतर विकसित होगा और समृद्धि प्राप्त करेगा तथा यहाँ से उत्तीर्ण होने वाले साथी दुनिया भर में शांति दूत बनेंगे।

टीआरएफ न्यासी भरत पंड्या ने कहा कि भारत के 42 रो ई मंडलों में से 23 का इस शांति केंद्र के उद्घाटन समारोह में प्रतिनिधित्व करना इस बात का प्रमाण है कि रोटेरियन शांति को कितना महत्व देते हैं।

आज की दुनिया में वैश्विक संघर्षों ने एक बड़ा संकट पैदा कर दिया है। दुनिया भर में 17 मिलियन से अधिक शरणार्थी और विस्थापित लोग हैं। 2024 में यह अनुमान लगाया गया था कि संघर्षों, विस्थापित लोगों और शरणार्थियों का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव 19.97 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया है।

आर्थिक क्षति इस विशाल संकट का केवल एक हिस्सा है; रोटरी केवल शांति की बात ही नहीं करती बल्कि शांति से जुड़े सभी क्षेत्रों में कार्य करती है - जैसे स्वास्थ्य, आर्थिक और सामुदायिक विकास, जल और स्वच्छता, रोगों की रोकथाम तथा पर्यावरण संरक्षण - ताकि ऐसी परिस्थितियाँ बनाई जा सकें, जिनसे शांति फल-फूल सके।

एक और महत्वपूर्ण कदम उसके शांति केंद्र और शांति छात्रवृत्ति कार्यक्रम हैं। उभरते युवा नेताओं और विचार-निर्माताओं को सशक्त बनाकर तथा उन्हें संघर्ष समाधान और सतत विकास के कौशल से सुसज्जित करके, रोटरी स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर प्रभाव पैदा करने में सहायता कर रही है। आर्च क्लम्प ने एक बार कहा था कि यदि आप मंदिर, चर्च और मस्जिदें बनाते हैं, तो वे समय के साथ खंडहर में बदल जाएँगे। यदि आप स्मारक बनाते हैं तो समय उन्हें भी मिटा देगा। लेकिन यदि आप लोगों के मन के साथ काम करते हुए उनमें करुणा, ईमानदारी, जिम्मेदारी, सहयोग और समझ की भावना

भरते हैं, तो आप कुछ ऐसा करते है जो अविनाशी है और आने वाली सदियों तक कायम रहेगा।

अपने शांति केंद्रों की स्थापना करने में यही रोटरी का उद्देश्य है। पांड्या ने इस शांति केंद्र की मेज़बानी करने के लिए एसआईयू और उसके नेतृत्व का धन्यवाद किया तथा हमारे संघर्षग्रस्त विश्व में शांति के फलने-फूलने के लिए इस महत्वपूर्ण बीज को बोने हेतु मंडल 3141 और 3131 के रोटेरियनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

एसआईयू की प्रो-कुलाधिपति डॉ. विद्या येरेवडेकर ने कहा कि इस नए शांति केंद्र का उद्घाटन एसआईयू के 55वें स्थापना दिवस का भी प्रतीक है। उन्होंने बताया कि इस शांति केंद्र की स्थापना के लिए दुनिया भर से कई आवेदन प्राप्त हुए थे और एक कठिन चयन प्रक्रिया के बाद एसआईयू का चयन किया गया। संभवतः रो ई समिति की प्रोफेसर मुजुमदार और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के साथ हुई बातचीत ने इस निर्णय को अंतिम रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ''इस विश्वविद्यालय पर इतना विश्वास और भरोसा दिखाने के लिए रोटरी का धन्यवाद,'' उन्होंने कहा।

उन्होंने रोटेरियनों को आश्वस्त किया कि उनके संगठन के मूल मंत्र और एसआईयू के मार्गदर्शक सिद्धांत, विशेषकर उसका आदर्श वाक्य वसुधैव कुटुम्बकम (अर्थात् पूरी दुनिया एक परिवार है) पूर्णतः सामंजस्य में हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि वर्ष 2027 में इस केंद्र में प्रवेश लेने वाले रोटरी शांति साथी पर्याप्त कौशल और ज्ञान से सुसज्जित होंगे, जो उन्हें विश्व शांति को बढ़ावा देने में सहायता करेंगे।

ट्रस्टी चेयर नेक, प्रोफेसर मजूमदार और रो ई अध्यक्ष अरेज़ो ने सिम्बायोसिस यूनिवर्सिटी में रोटरी पीस सेंटर का उद्घाटन किया।

रोटरी शांति केंद्र की प्रमुख सुदक्षिणा सेन ने कहा कि सिम्बायोसिस में इस केंद्र की स्थापना और भी अधिक महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि ये दोनों संस्थाएँ समाज की सेवा, विविधता के सम्मान और शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता जैसे आधारभूत मूल्यों को साझा करती हैं।

उन्होंने आगे कहा कि यह केंद्र व्यापक एशिया क्षेत्र की आवश्यकताओं को पूरा करेगा, जिसमें अंतर्विषयक दृष्टिकोण को अनुभवात्मक शिक्षा के साथ जोड़ा जाएगा। यह डिप्लोमा कार्यक्रम मिश्रित शिक्षण पद्धति (ब्लेंडेड लर्निंग) के माध्यम से प्रदान किया जाएगा ताकि शांति और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत मध्यम स्तर के पेशेवरों को सशक्त बनाया जा सके और वे एशिया में सामाजिक परिवर्तन के लिए सतत एवं क्रियान्वित किए जा सकने वाले परिणामों की दिशा में अपनी भागीदारी को आगे बढ़ा सकें, उन्होंने आगे कहा।

पूर्व रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने पुणे के रोटेरियनों और एसआईयू के बीच लंबे संबंधों को याद किया, विशेषकर स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में, जहाँ रोटरी ने सिम्बायोसिस अस्पताल को धन और उपकरण दोनों के माध्यम से सहायता प्रदान की थी। विशेष रूप से 35 मशीनों वाले डायलिसिस केंद्र की स्थापना में सहयोग किया गया, जहाँ गरीब मरीजों को निःशुल्क सेवा दी जाती है। उन्होंने घोषणा की कि डायलिसिस इकाईयों की संख्या 35 से बढ़ाकर 50 की जाएगी। बैठक में उपस्थित रो ई मंडल 3234 के मंडल गवर्नर विनोद सारोगी ने तुरंत यह प्रतिबद्धता जताई कि वह इसके लिए आवश्यक धन की व्यवस्था करेंगे।

चित्र: रशीदा भगत

रोटरी पीस फेलोशिप आवेदन

रोटरी पीस फेलोशिप के लिए 2027-28 शैक्षणिक वर्ष हेतु आवेदन 15 मई, 2026 से पहले रोटरी फाउंडेशन को जमा करें।

प्रतिस्पर्धी आवेदन तैयार करने के लिए:

- रोटरी पीस सेंटर्स के पाठ्यक्रम और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। मास्टर कार्यक्रम के लिए आपसे उन दो केंद्रों को प्राथमिकता देने के लिए कहा जाएगा जिन्हें आप प्राथमिकता देते हैं।
- अपने निकटतम रोटरी या रोटरेक्ट क्लब का पता लगाने के लिए Club Finder *(https://my.rotary.org/club-search)* का उपयोग करें।
- उम्मीदवारों को अपने व्यक्तिगत अनुभव, ज्ञान और प्रेरणा पर आधारित मौलिक और प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करनी होगी। जनरेटिव एआई को कड़े रूप से हतोत्साहित किया जाता है। साहित्यिक चोरी करने पर आवेदन रद्द कर दिया जाएगा।
- आवेदन के लिए रिज्यूमे, अकादमिक और/या पेशेवर अनुशंसा पत्र, व्यक्तिगत विवरण का वीडियो और निबंध, उच्च शिक्षा संस्थानों और विश्वविद्यालयों से प्राप्त ट्रांसक्रिप्ट (केवल मास्टर डिग्री के लिए), अंग्रेजी भाषा प्रवीणता परीक्षा के अंक (केवल मास्टर डिग्री के लिए), और सामाजिक प्रभाव योजना (केवल प्रमाणपत्र के लिए) आवश्यक हैं। यदि आपके कार्यक्रम के लिए आवश्यक हो, तो विश्वविद्यालय ट्रांसक्रिप्ट प्राप्त करने और आईईएलटीएस या टॉफेल परीक्षा के लिए पंजीकरण करने के लिए समय निकालें। सभी सामग्री अंग्रेजी में होनी चाहिए।
- यदि आपका चयन फैलोशिप के लिए होता है, तो आपको नवंबर में सूचित किया जाएगा कि आपकी पढ़ाई के लिए कौन-सा रोटरी पीस सेंटर निर्धारित किया गया है।
- फेलोशिप के लिए चयनित उम्मीदवार उस विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन करेंगे जहां उनका शांति केंद्र स्थित है।

प्रमाणपत्र कार्यक्रम पात्रता

मेकरेरे यूनिवर्सिटी, कंपाला, युगांडा, या बहसेसीर यूनिवर्सिटी, इस्तांबुल, तुर्किये, या सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, पुणे, इंडिया में सर्टिफिकेट प्रोग्राम के लिए कैंडिडेट या तो उस देश के होने चाहिए, या उन्होंने वहां या उस इलाके के समुदायों या महाद्वीप के बाहर की कोशिशों के साथ काम किया हो, या वे उस इलाके के बाहर के भी हो सकते हैं, लेकिन उन्हें उस इलाके में शांति बनाने के तरीकों के बारे में सीखने में गहरी दिलचस्पी दिखानी होगी।

चयन प्रक्रिया

रोटरी पीस सेंटर्स कमेटी, जिसमें रोटरी सदस्य और विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि शामिल होते हैं, शीर्ष उम्मीदवारों की समीक्षा करती है और उन अंतिम उम्मीदवारों का चयन करती है, जिनसे विश्वविद्यालय द्वारा साक्षात्कार के लिए संपर्क किया जा सकता है।

आवेदन पत्रों की समीक्षा निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर की जाती है:

- पात्रता आवश्यकताओं के आधार पर योग्यता निर्धारण
- अंग्रेज़ी भाषा दक्षता
- शांति और विकास के प्रति प्रतिबद्धता
- नेतृत्व क्षमता
- फेलोशिप के उद्देश्यों के साथ सामंजस्य तथा रोटरी के मूल्यों के अनुरूपता
- शैक्षणिक रिकॉर्ड और पसंदीदा विश्वविद्यालय कार्यक्रम के साथ अनुकूलता
- सामाजिक परिवर्तन पहल की व्यवहार्यता और प्रभाव (केवल प्रमाणपत्र)

पात्रता संबंधी प्रतिबंध

रोटरी पीस फैलोशिप का उपयोग डॉक्टरेट की पढ़ाई के लिए नहीं किया जा सकता है। निम्नलिखित व्यक्ति इस फैलोशिप के लिए पात्र नहीं हैं:

रोटरी के सक्रिय सदस्य, या रोटरेक्ट के सदस्य जो रोटरी के भी सदस्य हैं। रोटरेक्ट क्लब के सदस्य जो रोटरी क्लब के सदस्य नहीं हैं, वे भी आवेदन करने के पात्र हैं।

- रोटरी क्लब या मंडल, रो ई, या अन्य रोटरी संस्था के कर्मचारी
- इन श्रेणियों में आने वाले किसी भी जीवित व्यक्ति के जीवनसाथी, वंशज (खून के रिश्ते से या कानूनी रूप से गोद लिए गए बच्चे या पोते-पोती), वंशजों के जीवनसाथी, या पूर्वज (खून के रिश्ते से माता-पिता या दादा-दादी)
- रोटरी के पूर्व सदस्य और उनके रिश्तेदार जैसा कि ऊपर वर्णित है (उनके इस्तीफे के 36 महीनों के भीतर)

मास्टर डिग्री के उम्मीदवारों के पास अपनी नवीनतम शैक्षणिक डिग्री कार्यक्रम के पूरा होने और फैलोशिप के लिए उनकी इच्छित प्रारंभ तिथि के बीच कम से कम तीन साल का अंतराल होना चाहिए।

रोटरी पीस फेलोशिप के वे सदस्य जिन्होंने सर्टिफिकेट या मास्टर प्रोग्राम या ग्लोबल ग्रांट स्कॉलरशिप पूरी कर ली है, उन्हें उस कार्यक्रम की समाप्ति तिथि और फेलोशिप के लिए अपनी इच्छित प्रारंभ तिथि के बीच तीन साल का इंतजार करना होगा।

https://on.rotary.org/3LjPXGO पर जाएँ।

Rotary Club of VIRUDHUNAGAR

UNITE FOR GOOD

PROJECT FOCUS

A Pioneering Initiative for the Youth of Tamil Nadu

A LEGACY OF IMPACT

16+ Districts Covered • 14,000+ Students Benefited • Leading Institutions Served in Tamilnadu

Project Focus is a pioneering project aimed at helping the school and college students, with two objectives in FOCUS, one is guiding the school students to achieve their goals and the other is empowering the college students to overcome their fear of public speaking.

Goal Setting

For School Students

Size : Min 50 Students - Max 500 Students
Duration : 2 Hours
Medium of Training : Tamil & English
Audience : Government, Government Aided and Private school students

Program that guides the school children to fix their goals and focus on them to taste the success and contentment in their lives. Through this initiative, students will have the opportunity to develop action plans and work towards realizing their dreams, with the guidance of our Pilot Faculty. Through his mentorship and other forms of support, this transformative initiative is dedicated to helping students achieve their full potential.

We are waiting to partner with you.

As on Feb 10, 2026

No. of. Programs
142
No. of. Beneficiaries
14,225

Do you want to conduct **" Project Focus "** in your Town, City, District?

Effective Public Speaking

For College Students

Size : Min 40 Students - Max 60 Students
Duration : 6 Hours
Medium of Training : Tamil & English
Audience : Government and Private College Students

Program that empowers the youth to come out of their fear, hesitation, anxiety in public speaking. It emphasizes the importance of effective communication skills in their personal, professional and family life. It regulates their pattern of speaking, delivery skills, presentation tactics, content drafting and aligning with the objective/purpose of their speech. It helps the students to voice out their ideas, opinions and wishes in front of others, enabling them to compete with large audience. It in turn equip the college students to crack their placement interviews with confidence in speaking and answering the questions.

LEKHA ads/Mar 26/Inner

Contact

Project Chairman
Rtn.M.A.P.R. Rengasamy
Pilot Faculty & JCI Area Trainer - 99444 11961

IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

चेन्नई में रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट ऑफिस में रोटरी क्लब विरुदुनगर द्वारा आयोजित 'Be an entrepreneur RYLA' से सफल हुए आन्ट्रप्रनुर्स।

Rotary PEOPLE OF ACTION

RYLA

के माध्यम से उद्यमिता की चिंगारी प्रज्वलित करना

रशीदा भगत

जब अहमद इब्राहीमशा वर्ष 2021 में मदुरै के कामराज कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में अंतिम वर्ष के छात्र थे, तब उन्हें विरुधुनगर रोटरी क्लब द्वारा आयोजित RYLA - *Be an entrepreneur* - के बारे में जानकारी दी गई।

उन्हें यह तीन दिवसीय कार्यक्रम पूरी तरह अलग लगा; यह बहुत ही व्यावहारिक और प्रत्यक्ष अनुभव देने वाला था, युवा उद्यमी कहते हैं, जो रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के बोर्ड रूम में बैठे थे। कमरे में मौजूद छह अन्य उद्यमी भी एक साथ सहमति में सिर हिलाते हैं।

वे सभी तमिलनाडु के विभिन्न हिस्सों में रोटरी क्लब विरुधुनगर द्वारा आयोजित RYLA सत्रों में भाग लेने के बाद उद्यमी बनकर उभरे हैं। इन सत्रों को रो ई मंडल 3212 के पीडीजी वी आर मुत्तु के स्वामित्व वाले खाद्य तेल ब्रांड, इधायम द्वारा प्रायोजित किया गया था।

अहमद हमेशा से खाद्य उद्योग से आकर्षित थे, लेकिन तीन वर्ष पहले उन्हें पर्यटन क्षेत्र में नौकरी मिल गई, और अब उन्होंने अपनी स्वयं की कंपनी ब्लू गेटवेज़ शुरू की है, जो दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों और भारत के कई राज्यों से आने-जाने वाली यात्राओं का संचालन करती है। यह कंपनी विशेष रूप से तमिलनाडु के मंदिरों की यात्रा में रुचि रखने वाले लोगों के लिए सेवाएँ प्रदान करती है, खासकर मदुरै-रामेश्वरम क्षेत्र में।

अहमद इब्राहिमशा

तो RYLA से उन्होंने क्या सीखा? मैंने सीखा कि जब आप किसी चीज़ के प्रति जुनूनी होते हैं, तो आप बिना थके काम करते हैं आप समय की परवाह नहीं करते और इसी से आपको सफलता मिलती है। अब उन्होंने फूड टूरिज्म में भी हाथ आज़माना शुरू कर दिया है और उनका सपना है कि वे इसे और आगे बढ़ाएँ साथ ही एक होटल भी खोलें।

कनिष्का सागदेवन चेन्नई से हैं और उन्होंने RYLA के तीसरे बैच में भाग लिया। 19 वर्ष की आयु से रोटारेक्टर रहीं कनिष्का ने जाना कि RYLA सत्र युवाओं को यह व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए आयोजित किए जा रहे हैं कि नौकरी खोजने के बजाय उद्यमी कैसे बनें और रोजगार का सृजन कैसे करें।

वीआईटी, चेन्नई से एमबीए करने वाली कनिष्का हमेशा से उद्यमी बनना चाहती थीं। दो अन्य साझेदारों के साथ मिलकर उन्होंने लिंक्डइन जैसा एक डाटाबेस प्लेटफ़ॉर्म विकसित किया, फर्क इतना है कि हम केवल व्यक्तियों से सत्यापित डेटा ही प्रदान करते हैं। इन तीनों युवाओं ने एक प्रोटोटाइप तैयार किया और नोशैक सॉल्यूशंस की शुरुआत की जिसमें कुल ₹12 लाख का निवेश किया गया। कनिष्का ने अपने हिस्से के ₹4 लाख अपनी माँ से प्राप्त किए। लेकिन इसे बड़े स्तर पर ले जाने के लिए हमें और अधिक धन की आवश्यकता थी, जो हमारे पास नहीं था इसलिए हमने एक अन्य व्यवसाय में कदम रखा।

इस व्यवसाय का नाम ड्रीमर्स किट है, जो उपहार के रूप में कस्टमाइज़्ड स्टोरी बुक्स प्रदान करता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी जीवन गाथा पर आधारित एक किताब बनवाकर किसी को उपहार में देना चाहता है तो वह हमें आवश्यक जानकारी प्रदान करता है और हम उसे एक सुंदर डिज़ाइन की गई किताब में बदलकर उस व्यक्ति को प्रस्तुत करते हैं।

उनकी मार्केटिंग पिच है: ड्रीमर्स किट में हम किसी व्यक्ति के जीवन के सबसे अर्थपूर्ण क्षणों को

कनिष्क सगदेवन

संजोने के लिए पर्सनलाइज़्ड स्टोरीबुक तैयार करते हैं। हर पुस्तक को बड़े ध्यान से बनाया जाता है ताकि उस व्यक्ति की जीवन-यात्रा को खूबसूरती से दर्शाया जा सके और वह एक यादगार स्मृति बन सके। पन्नों की संख्या के आधार पर प्रत्येक किताब की औसत कीमत लगभग ₹2,000 होती है और अब तक वे 500 ऐसी कस्टमाइज़्ड पुस्तकें तैयार कर चुके हैं। लेखन के हिस्से के लिए ये युवा ए आई का उपयोग करते हैं, जिससे प्रति पुस्तक लगभग ₹1,600 का बढ़िया लाभ प्राप्त होता है।

इस उद्यम से होने वाला लाभ उनकी मुख्य कंपनी नोशैक सॉल्यूशंस में लगाया जाता है, जो हमें सीधे पैसा नहीं देती। यह हमारे लिए कुछ-कुछ सामाजिक सेवा जैसा है! इसी वजह से हमने दूसरा मॉडल शुरू किया। दो साल बाद हम कुछ कमाई करेंगे और फिर किसी नए मॉडल में कदम रखेंगे। हमारे पास बहुत सारे विचार हैं, वह मुस्कुराते हुए कहती हैं।

वेंकटसुब्रमणियन और निशांतिनी राजा ने चेन्नई में लैब एन बॉक्स की स्थापना की है, जो बच्चों के लिए डीआईवाई (खुद करके सीखने वाले) साइंस किट्स उपलब्ध कराता है और मज़ेदार विज्ञान कार्यक्रम आयोजित करता है। वेंकटसुब्रमणियन, जिन्हें उनके साथी उद्यमी वेंकट के नाम से जानते हैं, एक मेकेनिकल इंजीनियर हैं। कॉलेज खत्म करते ही मैंने एक स्टार्टअप शुरू कर दिया था क्योंकि कॉलेज के दिनों में ही मैं स्टार्टअप इकोसिस्टम से जुड़ चुका था। मैं अपने इंजीनियरिंग कॉलेज के कैंपस में चलने वाली एक स्टेशनरी शॉप की कोर टीम का हिस्सा था। उनके परिवार की पिछली कुछ पीढ़ियाँ केवल सरकारी सेवा में रही थीं, इसलिए यह सब उनके लिए बिल्कुल नया और रोमांचक था। 2020 में कॉलेज से निकलने से ठीक पहले, उनकी टीम ने एक एयर कूलर मॉडल तैयार करने के लिए AICTE द्वारा आयोजित स्मार्ट इंडिया हैकेथान जीता था। लेकिन हम अपने इस नवाचार को एक व्यावसायिक उद्यम में नहीं बदल सके क्योंकि मेरी टीम में स्टार्टअप शुरू करने के लिए केवल मैं ही तैयार था।

इसलिए उन्होंने एक नौकरी शुरू की मगर उसे एक महीने के अंदर ही छोड़ दिया। उनका मानना था कि हमें हमारी युवावस्था में ही जोखिम उठाना चाहिए क्योंकि बाद में जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं। इसके बाद उन्होंने लैब एन बॉक्स की शुरुआत की और कुछ समय बाद अपनी कॉलेज की सीनियर निशांतिनी के साथ साझेदारी की। निशांतिनी एक बायोमेडिकल इंजीनियर हैं और पहले से ही 16 ग्रुप्स इनोवेशन लैब्स नामक एक कंपनी चला रही थीं, जो बच्चों के लिए विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करती थी।

निशांतिनी मुस्कुराते हुए कहती हैं, मुझे बच्चों से बहुत प्यार है और मैं ऐसा कुछ करना चाहती थी जिससे बच्चों के साथ लगातार जुड़ाव बना रहे। दोनों ने निधीयन प्राप्त करने के लिए कई इन्क्यूबेटरों का रुख किया। संयोग से उनकी मुलाकात खाद्य वैज्ञानिक पशुपति से हुई, जिन्होंने उनका परिचय पीडीजी वी आर मुत्तु से कराया।

जब इस जोड़ी की मुलाकात पीडीजी मुत्तु से हुई तो उन्होंने तुरंत समझ लिया कि हम अपने काम के प्रति कितने जुनूनी हैं और कहा कि हमारे जैसे शिक्षा से जुड़े उत्पादों के लिए मार्केटिंग बहुत ज़रूरी है इसलिए उन्होंने हमसे उस RYLA सत्र में शामिल होने की सिफारिश की, जिसे वह रोटरी मंडल गवर्नर के रूप में आयोजित कर रहे थे। पशुपति, मुत्तु द्वारा शुरू की गई एक अन्य पहल *विज्ञान रथम* (Science on Wheels) के परियोजना निदेशक हैं।

उन्होंने 2023 में जिस RYLA सत्र में भाग लिया, वह उनके लिए अपने उत्पादों को बेहतर ढंग से विकसित करने और उनकी मार्केटिंग रणनीति को मजबूत बनाने में बेहद उपयोगी साबित हुआ। उनका उद्देश्य विज्ञान को छोटे बच्चों के लिए एक मज़ेदार और सीखने की एक रोचक गतिविधि बनाना है। निशांतिनी

वेंकटसुब्रमण्यम और निशांतिनी राजा

कहती हैं: *लैब एन बॉक्स* विज्ञान को जीवंत बना देता है - ऊर्जावान साइंस पार्टियों, आकर्षक स्कूल साइंस शो और सोच-समझकर डिज़ाइन किए गए साइंस किट्स के माध्यम से। हमारी साइंस पार्टियाँ उत्सव को एक प्रत्यक्ष अनुभव वाली रोमांचक यात्रा में बदल देती हैं, जहाँ बच्चे प्रयोग करते हैं, खोज करते हैं और भरपूर आनंद लेते हैं।

वेंकट आगे कहते हैं: स्कूलों में हमारे संवादात्मक साइंस शो पढ़ाई को रोमांचक बना देते हैं और विद्यार्थियों में जिज्ञासा जगाते हैं। हमारी घर ले जाने वाली साइंस किट्स कार्यक्रम के बाद भी सीखने की प्रक्रिया को जारी रखती हैं, जिससे बच्चे अपनी गति से वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझ सकें। हमारे आदर्श वाक्य *लैब एन बॉक्स: फन साइंस अनबॉक्स्ड* के मार्गदर्शन में हम विज्ञान को आनंददायक, सुलभ और अविस्मरणीय बनाते हैं।

वह समझाते हैं कि डीआईवाई साइंस बॉक्स में जब कोई बच्चा डिब्बा खोलता है, तो उसमें से 10 या 20 अलग-अलग सामग्री निकलती हैं और उनके साथ खेलते हुए वह कई रोचक वैज्ञानिक तथ्यों की खोज करता है। इस बातचीत के दौरान एक दिलचस्प तथ्य यह सामने आता है कि लड़कियाँ विज्ञान में लड़कों की तुलना में अधिक रुचि दिखाती हैं। लड़के ज़्यादा खेलकूद और गतिविधियों की ओर आकर्षित होते हैं लेकिन लड़कियाँ विज्ञान से बेहद प्रभावित होती हैं। वे हमारे फॉरेंसिक बॉक्स में बहुत दिलचस्पी दिखाती हैं, जो फॉरेंसिक जांच पर आधारित है। उनके बॉक्स/किट की सामग्री के अनुसार, इनकी कीमत ₹500 से ₹1,200 के बीच होती है।

वेंकट को उनका RYLA सत्र एक ट्रिगर जैसा... फैकल्टी आपके मन में इतने सारे विचार बो देती है। पूरा अनुभव आपके भीतर एक चिंगारी जगा देता है उद्यमिता की एक चिंगारी। व्यक्तिगत रूप से मुझे लगा कि ये RYLA सत्र हर किसी के लिए उपयुक्त हैं यहाँ तक कि उनके लिए भी, जिन्हें ङ्गबिज़नेसफशब्द का अर्थ तक नहीं पता।

डीआईवाई अब साइंस पार्टीज़ नाम से एक नया पैकेज भी पेश करता है, जो अपने बच्चों का जन्मदिन मनाने वाले माता-पिता के बीच काफी लोकप्रिय हो रहा है। इसकी लागत प्रति बच्चे ₹990 है और न्यूनतम 10 बच्चों की आवश्यकता होती है। प्रति अभिभावक औसत बिलिंग लगभग ₹20,000 तक पहुँच जाती है। आदर्श आयु वर्ग 4 से 8 वर्ष के बच्चों का है यह वह उम्र होती है जब बच्चे के भीतर आश्चर्य की भावना अभी भी जीवित और प्रबल होती है।

तो क्या ये पैकेज लड़कियों के जन्मदिन के लिए अधिक लोकप्रिय हैं या लड़कों के लिए?

वेंकट कहते हैं, हाल ही के दिनों में ज़्यादातर लड़कियों के लिए; पहले यह अधिकतर बेटों के लिए होता था। लेकिन आजकल लड़कियों की जन्मदिन पार्टियाँ काफी प्रीमियम और बड़े बजट वाली होती हैं। बेटियों के माता-पिता केवल प्रीमियम पैकेज ही चुनते हैं और वे सौंदर्य की दृष्टि से भी आकर्षक होने चाहिए। हाल ही में एक बेटी के जन्मदिन के लिए माता-पिता ने लगभग ₹55,000 का भुगतान किया।

जॉन थॉमस कहते हैं, चीज़ें बनाना ही मेरी पहचान है! उन्होंने 2022 में RYLA सत्र में भाग लिया था और उस समय वह शिवकाशी के अपने कॉलेज के रोटरेक्ट क्लब के अध्यक्ष थे। किसी ने मुझे इस कार्यक्रम में भाग लेने का सुझाव दिया और मैंने हिस्सा ले लिया, बिना यह जाने कि यह वास्तव में किस बारे में है।

उस समय वह मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कर रहे थे; इससे पहले वह चेन्नई के दो प्रतिष्ठित कॉलेजों - लोयोला कॉलेज और मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज - को बीच में ही छोड़ चुके थे। लोयोला कॉलेज में पढ़ाई के दौरान उन्होंने एक अन्य छात्र के साथ मिलकर 2019 में एक ईवी स्कूटर तैयार किया था। मुझे चीज़ें बनाना बहुत पसंद था LEGO और इस तरह की चीज़ें मेरी सबसे पसंदीदा थीं। यही एक चीज़ थी जिसके प्रति मैं सच में जुनूनी था और मैं इसे जीवन भर करना चाहता था।

लेकिन उनके पिता, जो एक इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट कंसल्टेंट थे, इससे सहमत नहीं थे। उनके बेटे की ट्रेडिंग में कोई रुचि नहीं थी और लोयोला में बीबीए डिप्लोमा कोर्स करते हुए भी वह दूसरे विभाग के एक छात्र के साथ ईवी मॉडल पर काम करते रहते थे। आख़िरकार उन्होंने बीबीए छोड़ दिया और एमसीसी में बीए इतिहास में प्रवेश लिया, लेकिन उसमें भी उनकी रुचि नहीं जगी। अपने एमसीसी के दिनों में भी मैंने कई और ईवी प्रोटोटाइप बनाए - और यह सब मैंने 23 साल की उम्र से पहले कर लिया था! मेरे पास मोटरों के कुछ सेट थे और मैं चेसिस को बनाता, तोड़ता और फिर नए तरीके से तैयार करता रहता था।

इतिहास विषय से भी संतुष्ट न होने पर वह शिवकाशी लौट आए और अपनी एक छोटी-सी वर्कशॉप में काम शुरू किया। शुरुआत में मेरे पिताजी ने कुछ आर्थिक सहायता दी लेकिन उन्हें लगता था कि मैं लापरवाह हूँ। उनके लिए नवाचार या प्रयोग जैसी चीज़ें लगभग वर्जित थीं और वह हमेशा मुझे सुरक्षित रास्ता अपनाने की सलाह देते थे और कहते थे: मेरा एक स्थापित व्यवसाय है, तुम उसे ही क्यों नहीं संभाल लेते?

लेकिन बेटे को उसमें रुचि नहीं थी और उन्होंने अपने गृहनगर के एक पॉलिटेक्निक में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करने का निर्णय लिया और ईवी को मुख्यधारा के व्यावसायिक संचालन के रूप में अपनाने की योजना बनाई। लेकिन जैसा कि आप

जॉन थॉमस

जानते हैं, यह बहुत पूंजी-गहन व्यवसाय है। मेरे पिता ने कहा: 'अगर तुम्हें ईवी के क्षेत्र में जाना है तो टाटा मोटर्स जैसी किसी कंपनी में नौकरी कर लो। या तो कहीं काम करो या फिर किसी छोटे स्तर से शुरुआत करो।'

डिप्लोमा पूरा करने के छह महीने बाद ही, 23 वर्ष की उम्र में थॉमस की शादी हो गई। अब उनकी एक बेटी भी है। इससे मेरी बाहर जाकर खोजबीन करने और अतिरिक्त प्रयोग करने की स्वतंत्रता खत्म हो गई। मेरे पिताजी ने अपने साझेदारों से कुछ मशीनें उधार लीं और मुझे अपनी पुरानी औद्योगिक इमारतों में से एक दे दी और कहा कि ईवी के बजाय स्टील स्ट्रक्चर बनाओ।

उन्होंने कुछ परियोजनाएँ शुरू कीं, जो सफल नहीं हो पाईं। बाद में वह स्टील के फर्नीचर रैक, कुर्सियाँ आदि बनाने में सफल हुए, जिन्हें घर पर ही जोड़ा (असेंबल) किया जा सकता है - ठीक IKEA शैली में। इसके अलावा वह कृषि उपकरण और अन्य मशीनें भी बनाते हैं। लेकिन यह वास्तव में उनकी रुचि का क्षेत्र नहीं था और वह कहते हैं, मुझे काफ़ी नुकसान हो रहा था क्योंकि कई तकनीकी और व्यावसायिक बारीकियाँ थीं जिन्हें मैं समझ नहीं पा रहा था।

एक समय ऐसा भी आया जब उनके पिता ने साफ़ कह दिया कि अगर उन्हें आगे कुछ करना है, तो अपने गहने गिरवी रखकर पूंजी जुटाएँ। उनकी पत्नी ने भी अपने गहने देकर उनका साथ दिया। इसके अलावा उन्होंने एक समानांतर व्यवसाय के माध्यम से भी धन जुटाया - सोलर सिस्टम खरीदने और स्थापित करने का काम। हम सोलर पैनल, इन्वर्टर और बैटरियाँ खरीदते हैं और मेरी एक टीम है जो संपूर्ण सोलर सिस्टम इंस्टॉल करती है। यह एक लाभदायक व्यवसाय है।

उनके स्टार्टअप का नाम ट्रिनिटी आईसीआर एंटरप्राइजेज है। यह एक विविधीकृत विनिर्माण और इंजीनियरिंग कंपनी है जो इनोवेशन, कंज़र्वेशन और रिफॉर्मेशन पर केंद्रित है। यह कंपनी सोलर सिस्टम इंस्टॉलेशन और सटीक रूप से तैयार किए गए स्टील उत्पादों जैसे डिज़ाइनर स्टील फर्नीचर, कृषि उपकरण और मशीनरी, सोलर माउंटिंग स्ट्रक्चर (जो उनकी ही साइट पर बनाए जाते हैं) तथा थोक कस्टम-इंजीनियर्ड कंपोनेंट्स जैसे मजबूत औद्योगिक क्षेत्रों पर आधारित है। डिज़ाइन, प्रोटोटाइपिंग और स्केलेबल प्रोडक्शन के व्यावहारिक दृष्टिकोण के साथ, वह शिवकाशी जैसे टियर-3 शहरों को विनिर्माण सेवाएँ प्रदान करते हैं।

हालाँकि वह तकनीक और डिज़ाइन-आधारित विनिर्माण दोनों को बेहतर बनाना चाहते हैं और सटीक, टिकाऊ तथा कुशल औद्योगिक उत्पाद तैयार करना चाहते हैं, लेकिन उनका दिल अब भी ईवी व्यवसाय में ही लगा है, जिसमें कृषि-उपयोगी ईवी मशीनरी भी शामिल है। उन्होंने छोटे ईवी ट्रैक्टर बनाना भी शुरू कर दिया है। अभी यह एक संघर्ष है लेकिन मुझे विश्वास है कि मैं अंततः वही करने में सफल होऊँगा जिसका मुझे हमेशा से जुनून रहा है - और वह है उत्पाद निर्माण। मैं टाटा मोटर्स जैसी कंपनियों और अन्य ग्राहकों के लिए ओईएम कंपोनेंट्स बनाना चाहता हूँ, थॉमस आत्मविश्वास के साथ कहते हैं।

किरुबाकरन सत्यसीलन, जिन्होंने 2017 में सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक किया, तमिलनाडु के राजापालयम से हैं। चार से अधिक वर्षों तक उन्होंने इंजीनियरिंग क्षेत्र में काम किया। बाद में उन्हें अपने जिले (विरुदुनगर) के एक रोटरी क्लब द्वारा आयोजित RYLA के बारे में जानकारी मिली और उन्होंने नवंबर 2021 में एक सत्र में भाग लिया।

जब उनसे पूछा गया कि इस तीन दिवसीय सत्र ने उनकी किस तरह मदद की, तो उन्होंने कहा कि जिस तरीके से इसका मॉडल तैयार किया गया है, वह हमें आसानी से आगे बढ़ने में मदद करता है। और यह बहुत ही व्यावहारिक है; वे आपको 10 कारक देते हैं और आपको अपनी पसंद के अनुसार उन पर टिक करना होता है। वे आपको यह नहीं बताते कि आपको कौन-सा व्यवसाय चुनना चाहिए या कौन-सा उद्यम आपको कितने करोड़ कमाने में मदद करेगा। लेकिन यदि आप किसी विशेष क्षेत्र में आठ कारकों पर टिक करते हैं, तो वे आपको बताते हैं कि उस विशेष व्यवसाय में आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और उन्हें हल करने के लिए आप कौन-से यथार्थवादी कदम उठा सकते हैं। इसीलिए हम सभी बार-बार यह कहते हैं कि यह प्रशिक्षण बहुत ही व्यावहारिक है।

तो वे वास्तव में सपने नहीं बेच रहे हैं मैं अपने युवा साक्षात्कारकर्ताओं से पूछता हूँ और वे एक स्वर में कहते हैं: बिल्कुल; हम यही कहना चाहते हैं कि यह RYLA कोर्स इतना व्यावहारिक है।

किरुबाकरन ने प्रशिक्षण के बाद स्पिरुलिना कैप्सूल के निर्माण का निर्णय लिया। वे बताते हैं कि इन कैप्सूल्स में प्रोटीन, विटामिन B12, E, K और ओमेगा-3 जैसे पोषक तत्व होते हैं। यह एक सुपरफूड है और उन लोगों के लिए आवश्यक है जिन्हें अपने दैनिक भोजन से पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता।

किरुबाकरन सत्यसीलन

उन्होंने लगभग ₹3 लाख की पूंजी निवेश की, जो उन्हें उनकी माँ ने दी थी। वह बताते हैं कि RYLA में इन्वेस्टमेंट मेंटरिंग भी होती है, जो उस बिज़नेस प्लान का हिस्सा है जिसे हमें तैयार करना होता है।

वह स्वीकार करते हैं कि स्पिरुलिना के निर्माण और विपणन के दौरान उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने उन्हें संभाल लिया। उनका मार्केटिंग कार्य मुख्यतः ऑनलाइन और प्रदर्शनियों के माध्यम से होता है। भविष्य को लेकर आत्मविश्वास के साथ वह गर्व से कहते हैं: हम उच्च गुणवत्ता वाली स्पिरुलिना का निर्माण करते हैं और कैप्सूल, टैबलेट तथा चॉकलेट जैसे वैल्यू-एडेड उत्पाद प्रदान करते हैं, जो फिटनेस प्रेमियों, स्वास्थ्य के प्रति सजग व्यक्तियों और पर्यावरण के प्रति जागरूक लोगों के लिए उपयुक्त हैं। हमारा उत्पाद पोषक तत्वों से भरपूर और सतत स्रोतों से प्राप्त होता है, जो स्वास्थ्य-सचेत उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करता है। गुणवत्ता और नवाचार पर ध्यान केंद्रित करते हुए हमारा लक्ष्य स्पिरुलिना को सभी के लिए सुलभ और आनंददायक बनाना है, यही उनकी मार्केटिंग पिच है।

मधुसूदन राजरानी त्रिची से हैं और निर्माण व्यवसाय में कार्यरत हैं, जहाँ वह रियल एस्टेट के साथ-साथ इंटीरियर्स का काम भी संभालते हैं। जब उन्होंने 2023 में रोटरी क्लब त्रिची द्वारा आयोजित RYLA सत्र में भाग लिया, तब वह तीन वर्षों से पहले ही व्यवसाय में सक्रिय थे। उनका प्रारंभिक व्यवसायिक सपना एक स्व-निर्भर टाउनशिप मॉडल विकसित करना था।

लेकिन क्या इसके लिए बहुत बड़े निवेश की आवश्यकता नहीं होगी? हाँ, लेकिन मैं एक स्ट्रक्चरल इंजीनियर हूँ और यह मेरा कॉलेज के दिनों से सपना रहा है। उन्होंने चेन्नई में, जहाँ उन्होंने सिविल इंजीनियरिंग में पीजी किया था, एक वर्ष तक काम किया। लेकिन जब कोविड

मधुसूदन राजरानी

आया, तो वह अपने गृहनगर लौट आए। वह खाली बैठना नहीं चाहते थे इसलिए उन्होंने अपना खुद का रियल एस्टेट व्यवसाय शुरू किया। हम पाँच या छह घर बनाते और तैयार होने पर उन्हें बेच देते थे।

इसके लिए उन्होंने लगभग ₹60 लाख का ऋण लिया, लेकिन बैंक से नहीं। यह एक असुरक्षित ऋण था, जिस पर चौंकाने वाली मासिक 2.5 प्रतिशत की ब्याज दर लगती थी!

मैंने हैरानी से कहा क्या? वह मुस्कुराते हुए कहते हैं, हाँ, वह बहुत बड़ी गलती थी। मैं पूरी तरह भटक गया था। वह स्वीकार करते हैं कि उन्होंने यह कदम तब उठाया, जब 30 वर्षों से व्यवसाय में रहने वाले उनके परिवार ने उन्हें इस तरह के जल्दबाज़ी भरे निर्णय न लेने की सलाह दी थी। उन्होंने मुझे चेतावनी दी थी, लेकिन मैंने उनकी बात नहीं सुनी और सीधे इसमें कूद पड़ा।

आख़िरकार उन्होंने जॉइंट वेंचर का रास्ता अपनाया। मधुसूदन कहते हैं कि उनकी सबसे बड़ी गलती यह थी कि वह अपनी तय कीमत पर अड़े रहे और उसी के मिलने तक बिक्री टालते रहे। इसी कारण ऊँची ब्याज दर के चलते उनका सारा मुनाफ़ा खत्म हो गया। लेकिन जब मैं RYLA सत्र में गया, तो उन्होंने मुझे बताया कि पैसों के मामले में अहंकार नहीं होना चाहिए। यदि कोई चीज़ आपके व्यवसाय को नुकसान पहुँचा रही है, तो उससे बाहर निकलना ज़रूरी है। सच कहूँ तो, RYLA में आने से पहले मैं पूरी तरह भटक चुका था, उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया।

मुझ पर आर्थिक दबाव बहुत ज़्यादा था। मेरी कंपनी को निर्माण, इंटीरियर्स आदि जैसी अन्य परियोजनाओं से जो भी मुनाफ़ा हो रहा था, वह सब ऊँची ब्याज दर को चुकाने में चला जाता था। इस तरह का ब्याज उचित नहीं होता इसलिए मैं ठीक से सोच ही नहीं पा रहा था कि अपने व्यवसाय को आगे कैसे बढ़ाऊँ। मैं इसे छोड़ भी नहीं पा रहा था क्योंकि मुझे पूरा कर्ज़ चुकाना था।

वह अपने माता-पिता से मदद भी नहीं मांगना चाहते थे, क्योंकि शुरू में मैंने उनकी बात ही नहीं मानी थी। आख़िरकार उन्होंने अपने बनाए हुए घरों को बेस प्राइस पर बेचकर उस गड्ढे से बाहर निकलना शुरू किया, जिसमें वह खुद ही फँस गए थे। इस तरह वह लगभग ₹70 लाख के अपने कर्ज़ का लगभग 80 प्रतिशत चुका पाए। उन्होंने करीब ₹55 लाख चुका दिए मगर अभी भी लगभग ₹15 लाख बाकी थे। लेकिन अब वह स्थिति संभाल पाए क्योंकि मूल पूंजी का बड़ा हिस्सा चुकाने के बाद ब्याज की राशि कम हो गई और वह फिर से मुनाफ़े में आ गए।

उन्होंने अपने व्यवसाय प्रारूप में भी बदलाव किया है। अब वह अपनी परियोजनाओं में निवेशकों को शामिल करते हैं और व्यक्तिगत घरों के बजाय अपार्टमेंट बनाते हैं, जिनमें निवेशकों को मुनाफ़े में हिस्सा मिलता है। मधुसूदन मुस्कुराते हुए कहते हैं, अब मुझे ब्याज नहीं चुकाना पड़ता।

लेकिन उनका सपना अब भी वही है - सस्टेनेबल टाउनशिप का निर्माण करना, और उन्हें पूरा विश्वास है कि एक दिन वह इसे ज़रूर साकार करेंगे!

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

RYLA के उत्साही समर्थक

RYLA में प्रशिक्षित उद्यमियों में से एक, जॉन थॉमस के लिए यह सत्र तीन दिन के एक क्रैश कोर्स जैसा था - एक ऐसा एमबीए जिसमें कहीं अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण था। मुझे यह स्पष्ट समझ मिल गई कि मैं कौन-सा व्यवसाय करना चाहता हूँ। जब उनसे पूछा गया कि वह एक छोटे से RYLA सत्र की तुलना क्रैश एमबीए कोर्स से कैसे कर सकते हैं, तो थॉमस बताते हैं कि प्रत्येक प्रतिभागी को ₹400 दिए जाते हैं, जिनसे उन्हें कच्चा माल खरीदना होता है, उसे एक उत्पाद में बदलना होता है और फिर स्थानीय बाज़ार में बेचकर दिखाना होता है। उदाहरण के तौर पर, फल खरीदकर फ्रूट सलाद बनाना या कागज़, गोंद आदि लेकर पेपर हैंडीक्राफ्ट तैयार करना। हमें उस बाज़ार में आने वाले ग्राहकों की प्रोफ़ाइल और उनकी खर्च करने की आदतों के बारे में पहले ही जानकारी दे दी जाती है।

इन उत्पादों की श्रेणी फ्रूट सलाद और रोज़ मिल्क से लेकर पानी पुरी या पेपर क्राफ्ट्स तक होती है। एक बार कुछ प्रतिभागियों ने पेपर ईयररिंग्स बनाए, यह सोचकर कि किशोर लड़कियाँ उन्हें खरीदेंगी। लेकिन उनके वास्तविक ग्राहक निकले वे लड़के, जिन्होंने ये ईयररिंग्स अपनी गर्लफ्रेंड्स के लिए खरीदे!

मार्केटिंग की गतिशीलता की बात ही कुछ और है!

प्रतिभागी अपनी तकनीकी क्षमताओं का भी विपणन कर सकते हैं; जैसे एक मिनट की डिजिटल रील बनाकर उसे अपने सोशल मीडिया पर शुल्क लेकर प्रमोट करना। संदेश स्पष्ट है: एक व्यवसाय मॉडल तैयार करो और कमाई करो! मेज़ के चारों ओर सहमति में सिर हिलते हैं और चर्चा इस बात की ओर मुड़ जाती है कि RYLA के बाद के बैच हमसे कहीं बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। हर नया RYLA पहले से बेहतर होता जा रहा है, - यह सभी की एकमत राय है।

जो प्रतिभागी उद्यमी बन चुके हैं, वे RYLA Starter Stars नामक एक व्हाट्सऐप समूह के

रश्मिदा भगत

माध्यम से लगातार संपर्क में रहते हैं। इस समूह में 328 सदस्य हैं। यदि किसी को कोई व्यावसायिक आवश्यकता होती है, तो वह इस समूह में साझा कर सकता है और जो सदस्य प्रतिक्रिया देता है, उससे सीधे जुड़ सकता है।

हर बैच से दो स्टार प्रतिभागियों का चयन सिंगापुर यात्रा के लिए किया जाता है, जहाँ उनके लिए विशेष बैठकों की व्यवस्था की जाती है। इसका उद्देश्य उन्हें वहाँ की व्यावसायिक संस्कृति से परिचित कराना है और यह समझने का अवसर देना है कि उस देश की अर्थव्यवस्था इतनी अच्छी तरह कैसे विकसित हुई है।

अहमद, कनिष्का, किरुभाकरन और मधुसूदन सिंगापुर पहुँचे और उन्होंने उस अनुभव का भरपूर आनंद लिया। कनिष्का कहती हैं: RYLA का अनुभव हमें संवाद करना सिखाता है यह आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है और दिशा दिखाता है। आपको खुद ही चलना और दौड़ना होता है। वे केवल मार्गदर्शन करते हैं और यह भी सिखाते हैं कि समस्याओं से कैसे निपटना है क्योंकि हर व्यवसाय में समस्याएँ होती हैं। उनका सामना करो।

वेंकट आगे बताते हैं कि आजकल बहुत कम उम्र के युवा, यहाँ तक कि विद्यार्थी भी RYLA से जुड़ रहे हैं। वे हमें डिजिटल मार्केटिंग सेवाएँ प्रदान करते हैं। जब हम उनसे संपर्क करते हैं, तो वे कहते हैं कि हम दूसरे या तीसरे वर्ष के छात्र हैं और यदि आप हमें एक निश्चित राशि दें, तो हम आपके लिए बहुत सारे इंस्टाग्राम पोस्ट डिज़ाइन कर देंगे। उनके पास कोई निवेश नहीं है, लेकिन वे अपने समय को ही कमाई का साधन बना रहे हैं।

अपने द्वारा स्नेहपूर्वक पोषित और आर्थिक रूप से समर्थित इस कार्यक्रम से अपनी अपेक्षाओं और उसके परिणाम के बारे में पूछे जाने पर पीडीजी मुत्तु कहते हैं: युवा लोगों को आत्मविश्वासी और सक्षम उद्यमियों के रूप में विकसित होते देख मुझे गहरा संतोष मिलता है - वे नवाचार करते हैं, रोजगार सृजित करते हैं और भारत की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हैं। उन्हें नेतृत्व संभालते हुए और आत्मविश्वासी, सक्षम व्यवसायी के रूप में आगे बढ़ते देख मुझे अपार आनंद और गर्व होता है।

फैकल्टी सदस्य ए ए जयरामन, जो प्रमुख उद्योगों के सलाहकार हैं और जिन्हें RYLA प्रतिभागी बेहद पसंद करते हैं, कहते हैं कि इस कार्यक्रम की एक विशिष्ट विशेषता उसका दृष्टिकोण है। इस कार्यक्रम से पहले प्रत्येक प्रतिभागी की प्रोफ़ाइल, व्यावसायिक रुचि, व्यावहारिक विचार और वे जिन विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर चाहते हैं, उन्हें दर्ज किया जाता है। हम सुनिश्चित करते हैं कि इन प्रश्नों का सार्थक रूप से समाधान किया जाए, ताकि उनका उद्देश्य और अधिक सुदृढ़ हो और उनके विचारों को परिष्कृत किया जा सके।

वह बताते हैं कि उद्योग कार्यशालाओं में उपयोग किए जाने वाले टेम्पलेट्स और डायग्नोस्टिक टूल्स का ही यहाँ भी प्रयोग किया जाता है ताकि प्रतिभागियों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप समाधान मिल सकें और उन्हें अपने व्यवसायिक विचारों के बारे में स्पष्टता प्राप्त हो। इस कार्यक्रम के बाद प्रतिभागी यह विश्वास लेकर लौटते हैं कि उनका व्यवसायिक विचार व्यावहारिक है। उन्हें एक सुव्यवस्थित व्यवसाय योजना मिलती है, जो भविष्य की दिशा तय करने में मदद करती है, साथ ही जयरामन द्वारा तैयार की गई एक उपयोगी सामग्री किट भी दी जाती है। इसके अतिरिक्त, उन्हें यह आश्वासन भी मिलता है कि कार्यशाला के बाद भी उनकी टीम परामर्श और मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध रहेगी।

जयरामन आगे कहते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह वास्तव में केवल तीन दिवसीय कार्यशाला नहीं है। प्रतिभागियों के साथ हमारा जुड़ाव उनके पंजीकरण करते ही शुरू हो जाता है। कार्यशाला से छह दिन पहले हम पूर्व प्रशिक्षण अभ्यास शुरू कर देते हैं, जिनमें आंकलन और अन्य गतिविधियाँ शामिल होती हैं, ताकि जब वे हमारे साथ जुड़ें, तो हम उन्हें सीधे मुख्य प्रवाह में सम्मिलित कर सकें।

साथ ही, ये तीन दिन बेहद विस्तृत और गहन होते हैं। चूँकि प्रतिभागी पहले से ही उद्यमिता की यात्रा के लिए मानसिक रूप से तैयार होकर आते हैं, इसलिए हमें एक मजबूत परिवर्तन दर देखने को मिलती है। इस प्रकार, तीन केंद्रित और गहन दिन बीज बोने के लिए पर्याप्त होते हैं - बशर्ते उसके बाद ईमानदार और गंभीर फॉलो-अप किया जाए। हमारी टीम प्रत्येक प्रतिभागी के मार्गदर्शन की जिम्मेदारी लेती है और उनकी प्रगति पर नज़र रखती है। इसी व्यवस्था ने हमें वास्तविक आवश्यकताओं के आधार पर अपने कार्यक्रम की रूपरेखा को लगातार विकसित करने में मदद की है।

उद्यमी भी इस बात की पुष्टि करते हैं; उनमें से एक ने उत्साहपूर्वक बताया कि कल ही मेरी जयरामन सर के साथ 45 मिनट तक लंबी बातचीत हुई।

और क्या उन्हें वह याद है?

बिल्कुल, उन्हें हर वह RYLA याद है जिसे उन्होंने आयोजित किया है, ऐसा जवाब मिला।

रशीदा भगत

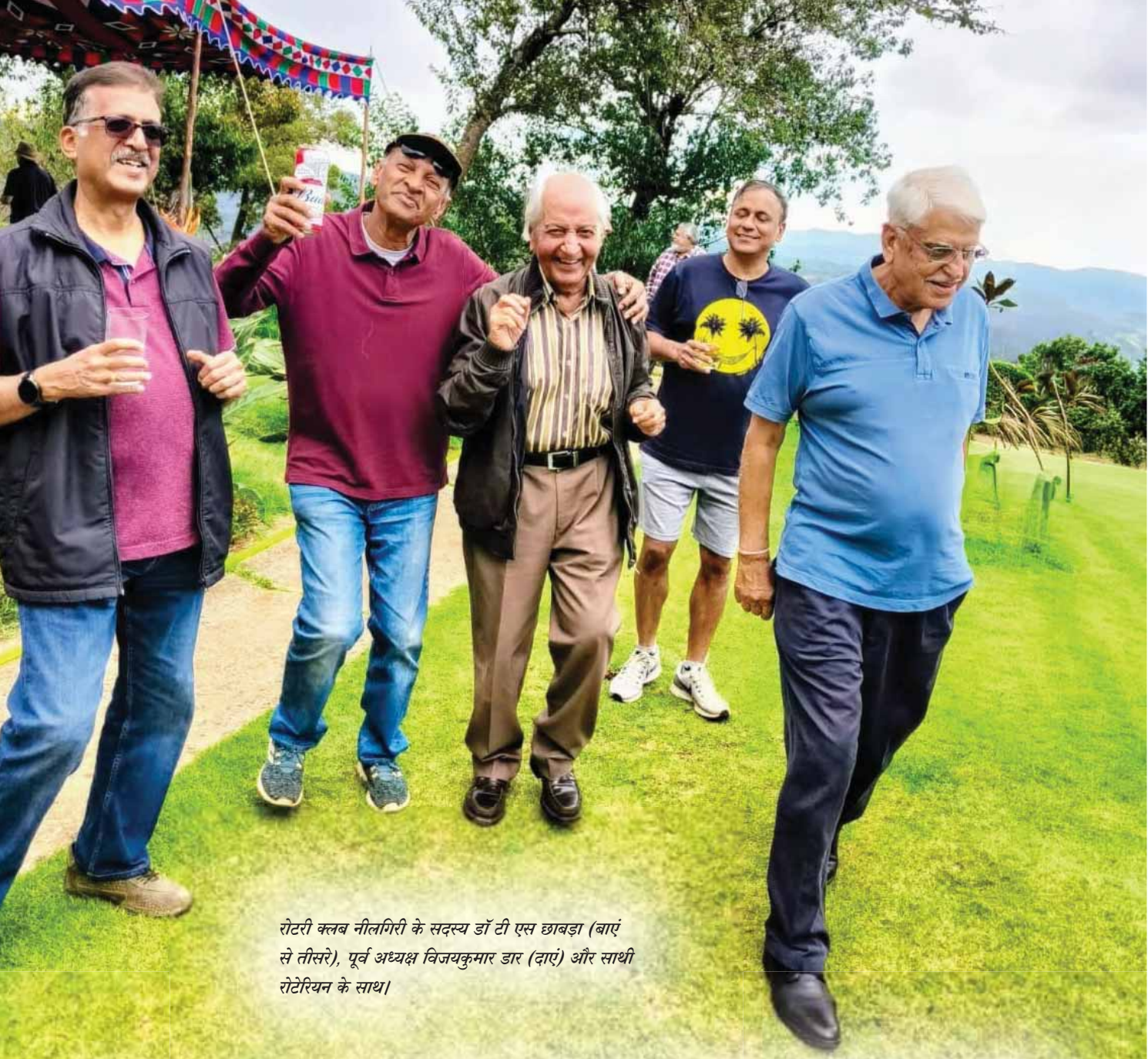

रोटरी क्लब नीलगिरी के सदस्य डॉ टी एस छाबड़ा (बाएं से तीसरे), पूर्व अध्यक्ष विजयकुमार डार (दाएं) और साथी रोटेरियन के साथ।

99 वर्ष की आयु में भी सेवा में सक्रिय

जयश्री

99 वर्ष की आयु में, जब अधिकांश लोग सार्वजनिक जीवन से विमुख हो जाते हैं, डॉ टी एस छाबड़ा आज भी नीलगिरि के कुन्नूर स्थित रोटरी क्लब की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेते हैं। यह अनुभवी दंत चिकित्सक, सेना अधिकारी और रोटेरियन उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनके लिए सेवा मात्र एक नारा नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका थी। रोटरी में 57 वर्ष और लगभग एक शताब्दी का जीवन अनुभव रखने वाले वे नीलगिरि रोटरी क्लब (रो ई मंडल 3203) के सबसे वरिष्ठ और सम्मानित सदस्यों में से एक हैं।

अविभाजित भारत में जन्मे छाबड़ा के प्रारंभिक जीवन पर स्वतंत्रता आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा। 1944 से 1947 के बीच, जब वे लाहौर में दंत चिकित्सा की पढ़ाई कर रहे थे, तब वे आज़ादी की मांग कर रहे युवा भारतीयों के देशभक्ति जोश से गहराई से प्रभावित हुए। वे याद करते हुए कहते हैं, हम जोश से भरे हुए थे और प्रेरित थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विरोध प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

1947 के विभाजन ने उनके परिवार को विस्थापित कर दिया। लाखों अन्य लोगों की तरह वे

भी शरणार्थी बनकर स्वतंत्र भारत में आ गए। उन्होंने बंबई के जेजे अस्पताल में अपनी शिक्षा पुनः शुरू की और 1948 में दंत चिकित्सा की पढ़ाई पूरी की। इसके कुछ ही महीनों बाद, जनवरी 1949 में, भारतीय सेना ने योग्य दंत चिकित्सकों को कमीशन अधिकारी के रूप में भर्ती होने के लिए आमंत्रित किया। छाबड़ा ने तुरंत आवेदन किया। वे स्वतंत्रता के बाद भारतीय सेना के दंत कोर में कमीशन प्राप्त करने वाले पहले दंत चिकित्सकों में से एक थे, यह उपलब्धि वे सहजता से, लेकिन गर्व के साथ स्वीकार करते हैं।

दो दशकों तक उन्होंने वर्दी में रहकर सेवा की और ऐसे सबक सीखे जो सेवानिवृत्ति के बाद भी लंबे समय तक उनके साथ रहे। उनकी तैनातियों में नीलगिरी के वेलिंगटन स्थित सैन्य अस्पताल में दो कार्यकाल शामिल थे, पहले मेजर के रूप में और बाद में लेफ्टिनेंट कर्नल के रूप में। 1966-67 में, संघर्ष के दौर में उन्हें संयुक्त राष्ट्र के एक कार्य के तहत गाजा पट्टी में भेजा गया था, एक ऐसा अनुभव जिसने मेरे विश्वदृष्टिकोण को व्यापक बनाया और मानवीय सेवा के प्रति मेरी प्रतिबद्धता को और गहरा किया। सेना ने मुझे अनुशासन, वफादारी और भाईचारा सिखाया। हम जाति या धर्म के किसी भेदभाव के बिना पूरे देश से आए थे। हम एक विस्तारित परिवार थे, वे याद करते हैं।

1969 में समय से पहले सेवानिवृत्ति लेने के बाद, छाबड़ा ने कुन्नूर में बसने का फैसला किया।

डीजी बी धनसेकर और उनकी पत्नी अमुदप्रिया ने डॉ छाबड़ा को उनकी 55 साल की रोटरी सेवा के लिए सम्मानित किया। क्लब के अध्यक्ष एच हरिकृष्णन दाईं ओर चित्र में शामिल हैं।

नीलगिरि रोटरी क्लब की मैत्रीभावना और सेवा भावना से प्रभावित होकर उन्होंने सितंबर 1969 में इसकी सदस्यता स्वीकार कर ली। वे याद करते हुए कहते हैं, मैंने पाया कि रोटरी दो मजबूत स्तंभों - सेवा और मैत्री - पर आधारित है। यही बात मुझे इसकी ओर आकर्षित करती है। पांच दशकों से अधिक समय बाद भी, ये स्तंभ उन्हें सहारा देते रहते हैं।

आज वे रोटरी को अपना विस्तारित परिवार बताते हैं, जो उनके जीवन के अंतिम वर्षों में भावनात्मक और शारीरिक शक्ति का स्रोत है। वे नियमित रूप से बैठकों में भाग लेते हैं, अक्सर अपनी बेटी सुनैना के साथ, जो अपनी माँ के निधन के बाद रोटरी में शामिल हुईं। छाबरा परिवार के लिए सेवा हमेशा से एक साझा विरासत रही है। उनकी पत्नी अनीता 1970 के दशक की शुरुआत में इनर व्हील की संस्थापक सचिवों में से एक थीं।

रोटरी की कई पहलों में से, छाबरा को दंत चिकित्सा शिविरों और निःशुल्क क्लीनिकों से जुड़ने पर विशेष गर्व है। हालांकि, एक अनुभव सबसे अलग है: रोटरी इंटरनेशनल के स्वयंसेवी दंत चिकित्सक के रूप में सेवा करना। इस भूमिका ने उन्हें कई देशों की यात्रा करने का अवसर दिया, जिससे उन्हें दुनिया भर के रोटेरियनों के साथ बातचीत करने का मौका मिला और रोटरी की वैश्विक भाईचारे में उनका विश्वास और मजबूत हुआ। वे मुस्कुराते हुए कहते हैं, मुझे ये कार्य बहुत पसंद आए और रोटरी से जुड़कर मुझे बहुत संतुष्टि मिली।

वे 1991 में तत्कालीन रो ई अध्यक्ष राजेंद्र सबू की यात्रा को याद करते हैं, जब रोटरी क्लब नीलगिरिस ने अपनी स्वर्ण जयंती मनाई थी। श्रीलंका, बांग्लादेश और पाकिस्तान से प्रतिनिधिमंडल आए थे। छाबड़ा मुस्कुराते हुए कहते हैं, पाकिस्तान से आए रोटरी प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्य पंजाबी थे, और वे मुझे अपनी भाषा बोलते हुए देखकर बहुत खुश

डॉ छाबड़ा अपने परिवार सहित, अपने शुरुआती वर्षों में।

हुए। यह निश्चित रूप से एक यादगार अवसर था, और उन्होंने मुझे पाकिस्तान में अपने गांव आने का निमंत्रण भी दिया।

पिछले कई दशकों में, उन्होंने रोटरी के विकास को देखा है - एक पुरुष-प्रधान संगठन से एक अधिक समावेशी और जीवंत आंदोलन तक की यात्रा। इस प्रगति का स्वागत करते हुए, वे एक हल्की सी चेतावनी भी देते हैं। वे कहते हैं, हमें सदस्यों को चुनते समय सावधानी बरतनी चाहिए। क्लबों को ऐसे लोगों की पहचान करनी चाहिए जिनके पास रोटरी के मूल्यों में शामिल होने के लिए समय और रुचि हो। जब हम रोटरी में शामिल होते हैं, तो हम केवल रोटरी के सदस्य बनते हैं। जब हम इसमें सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तभी हम सही मायने में रोटेरियन बनते हैं।

डॉ छाबड़ा (बाएं से दूसरे) मिस्र में UNEF कैंप में इंटरनेशनल डेंटल ऑफिसर्स के साथ।

अपनी पत्नी और हाल ही में पोते के निधन सहित व्यक्तिगत हानियों के बावजूद, छाबड़ा दृढ़ और आत्मनिर्भर बने हुए हैं। उनका दिन पढ़ने, संगीत सुनने, सामाजिक मेलजोल और अपने दिमाग को सक्रिय रखने के लिए कुन्नूर क्लब में सप्ताह में एक बार ब्रिज खेलने में व्यतीत होता है। उनके बेटे तरुण, जो पूर्व में दंत चिकित्सक थे और अब टोडा संस्कृति के संरक्षण के लिए पूर्णकालिक पर्यावरणविद् के रूप में कार्यरत हैं, उनसे नियमित रूप से मिलने आते हैं।

युवा पीढ़ी को उनकी सलाह है - धीमे चलो। हम पैसे के गुलाम बन गए हैं। समय ईश्वर ने बनाया है, जबकि जल्दबाजी इंसान ने पैदा की है। वे युवा पेशेवरों से महत्वाकांक्षा और सहानुभूति के बीच संतुलन बनाए रखने का आग्रह करते हैं। पैसा कमाओ, लेकिन मानवीय भावना को कभी मत खोओ। अपने परिवार से बात करो। उन्हें बताओ कि तुम उनकी परवाह करते हो। यह आज ही करो, कल शायद कभी न आए।

अन्य रोटेरियन सदस्यों के लिए भी उनका संदेश उतना ही स्पष्ट है: नेतृत्व सामूहिक होना चाहिए, सेवा विनम्र होनी चाहिए और टीमवर्क ईमानदारी के साथ किया जाना चाहिए।

क्लब में उनका प्रभाव गहराई से महसूस किया जाता है। क्लब की सदस्य दीपिका उन्नी ने बिल्कुल सही कहा है, 99 वर्ष के युवा और रोटरी में 55 वर्षों से अधिक का अनुभव रखने वाले छाबड़ा अंकल हमें याद दिलाते हैं कि सेवा की कोई सेवानिवृत्ति आयु नहीं होती। मुझे रोटरी के लिए विदेशों में की गई उनकी सेवा की कहानियाँ और एक रोटेरियन होने का उनका आनंद सुनना बहुत अच्छा लगता है।

रोटेरियन जैकब मैथ्यूज उनकी असाधारण बुद्धिमत्ता से चकित हैं। आज भी, उन्हें दशकों पुरानी घटनाएँ असाधारण विस्तार से याद हैं। उनका हास्य तीक्ष्ण, सजीव और कभी दोहराया नहीं जाता। उनकी दृष्टि आज भी बेहद तेज है और वे बिना चश्मे के पढ़ते हैं। 97 वर्ष की आयु तक वे खुद गाड़ी चलाते रहे। वे आगे कहते हैं कि छाबड़ा क्लब में एक प्रतीकात्मक स्थान रखते हैं - पहली पंक्ति के बिल्कुल बाएँ कोने में। हममें से कई लोगों के लिए, वे एक पिता तुल्य हैं, जो शब्दों के बजाय शांत उपस्थिति से मार्गदर्शन देते हैं। उन्हें जानने के इतने वर्षों में, मैंने उन्हें कभी क्रोधित नहीं देखा। शालीनता और गरिमा ही उनका जीवन जीने का तरीका है।

पूर्व अध्यक्ष विजयकुमार डार, जो उन्हें लगभग दो दशकों से जानते हैं, कहते हैं, वे ऐसे व्यक्ति जो युवा और बुजुर्ग दोनों के लिए प्रेरणास्रोत हैं; जिनकी रोटरी सेवा आधी सदी से भी अधिक समय तक फैली है; जिनकी स्मृति नीलगिरी के हाथियों से भी अधिक मजबूत है; जिनके हास्यबोध में आज भी शरारत की झलक है - एक ऐसा व्यक्ति जिससे जीवन में एक बार ही मुलाकात होती है। छाबड़ा परिवार को जानना वास्तव में एक दुर्लभ आशीर्वाद है। ■

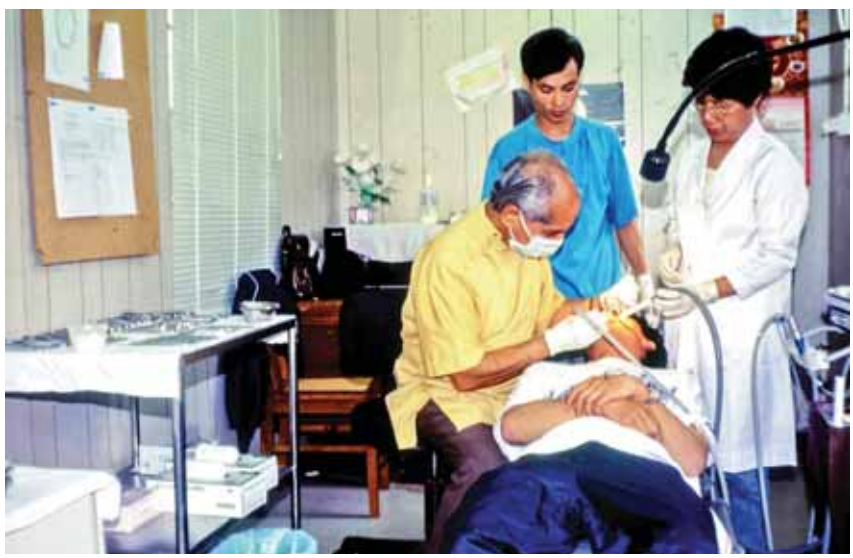

कुन्नूर में उनके क्लिनिक में।

रोटरी क्लब मद्रास में इतिहास की एक जीवित कड़ी

किरण ज़ेहरा

बाएँ से: PRID पी टी प्रभाकर, जॉन एमस्ट्रांग और उनकी पत्नी पेन्नी, क्लब के सदस्य एम बालासुब्रमण्यम और पूर्व अध्यक्ष एन के गोपीनाथ।

चेन्नई में रोटरी क्लब मद्रास (आरसीएम), रो ई मंडल 3234, की 28वीं साप्ताहिक बैठक का मुख्य आकर्षण आरसीएम के चार्टर अध्यक्ष सर गॉडफ्रे जॉर्ज आर्मस्ट्रांग के पोते, रोटेरियन जॉन आर्मस्ट्रांग की उपस्थिति थी। क्लब के पूर्व अध्यक्ष एन के गोपीनाथ ने कहा, 1929 में सर गॉडफ्रे द्वारा हमारे क्लब की स्थापना में मदद करने के लगभग एक सदी बाद, उनके पोते आज हमारे सामने खड़े हैं, जो आज के रोटरी क्लब ऑफ मद्रास को इसकी जड़ों से जोड़ रहे हैं।

एक पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के जरिए सर आर्मस्ट्रांग के जीवन को दर्शाया गया, जिसकी शुरुआत 23 साल की उम्र में उनके पहली बार भारत आने और दक्षिण भारतीय रेलवे में ट्रैफिक कंट्रोलर के रूप में काम करने से हुई थी। जब 1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा, तो उन्होंने फ्रांस में लेफ्टिनेंट के रूप में सेवा की और बाद में नॉर्मैंडी में बटालियन कमांडर बने।

1920 में, वह भारत लौटे, जहाँ उन्होंने मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और फिर 1929 में रोटरी क्लब मद्रास की स्थापना की।

गोपीनाथ ने भारत में रोटरी के शुरुआती वर्षों को याद किया। आरसीएम की स्थापना रोटरी क्लब बॉम्बे के ठीक दो महीने बाद हुई थी, जिससे यह देश के सबसे पुराने क्लबों में से एक बन गया। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि आरसीएम के एफ इ जेम्स बाद में क्लब से पहले मंडल गवर्नर बने, उस समय जब भारत एक एकल रोटरी मंडल - मंडल 89 - के रूप में कार्य करता था। वह 1933-34 में रो ई निदेशक बने, जो क्लब के इतिहास में एक गौरवपूर्ण अध्याय है। बैठक में क्लब की कुछ महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर भी प्रकाश डाला गया।

जब उनसे पूछा गया कि अपने दादा की जड़ों से जुड़कर उन्हें कैसा महसूस हो रहा है, तो लंदन के रोटरी कलब चिस्विक और ब्रेंटफोर्ड के सदस्य जॉन आर्मस्ट्रांग ने जवाब दिया, मुझे यहाँ आकर बहुत खुशी हो रही है। उन्होंने कई साल पहले अपनी पिछली मद्रास यात्रा को याद किया और मज़ाक में कहा, उस समय भीषण गर्मी थी, लेकिन वर्तमान मौसम कहीं सुहावना है। बैठक में पीआरआईडी पी टी प्रभाकर और डीजीएनडी एस रवि भी उपस्थित थे। प्रभाकर ने कहा, यह केवल एक साप्ताहिक बैठक नहीं थी, बल्कि यह याद दिलाने वाला अवसर था कि रोटरी केवल सेवा परियोजनाओं और नेतृत्व पर ही नहीं, बल्कि कहानियों, संबंधों और निरंतरता पर भी आधारित है। स्थापना के लगभग सौ वर्ष बाद भी, रोटरी क्लब मद्रास अपने अतीत का सम्मान करते हुए अपने भविष्य को सुदृढ़ कर रहा है।

बैठक में पर्वतारोही जफर इस्माइल के साथ एक जीवंत प्रश्नोत्तर सत्र भी हुआ। उनकी पर्वतारोहण यात्रा 2012 में माउंट किलिमंजारो से शुरू हुई थी और बाद में दुनिया भर की ऊंचाइयों को छूने के जुनून में बदल गई। मई 2024 में, उन्होंने अपना सबसे बड़ा मील का पत्थर - माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई सफलतापूर्वक पूरी की।

इस्माइल ने अपनी पुस्तक, *एम्ब्रेसिंग एवरेस्ट, कॉन्क्वरिंग सेल्फ* के बारे में भी बात की, जो न केवल एक कठिन चढ़ाई को, बल्कि उनके व्यक्तिगत परिवर्तन को भी बयां करती है।

क्लब के सेक्रेटरी प्रसन्ना राजगोपालन और अध्यक्ष निखिल राज, जॉन आर्मस्ट्रांग के साथ।

चित्र: किरण ज़ेहरा

नाइजीरिया में स्वस्थ परिवारों के लिए एक साथ

ओलुबुनमी अफोलाबी

नाइजीरिया में मातृ मृत्यु दर को कम करने के कार्यक्रम की सफलता को केवल आंकड़ों से ही नहीं मापा जाता है।

हेल्थ मेले में आने वालों को सर्विस देते हुए।

आंकड़े भले ही कागज़ पर निर्जीव से लगें: नाइजीरिया में प्रति 100,000 गर्भवती महिलाओं पर 512 मौतें होती हैं, जो वैश्विक स्तर पर मातृ मृत्यु दर में से एक है। लेकिन मेरे लिए ये आंकड़े बेजान नहीं हैं। मैं उन माताओं को देखता हूँ। मैं शिशुओं को देखता हूँ। मैं उन कमरों में खड़ा रही हूँ जहाँ ये संख्याएँ या तो त्रासदी बन जाते हैं या विजय।

मैं नाइजीरिया में 'टुगेदर फॉर हेल्दी फैमिलीज' नामक संस्था के साथ काम करता हूँ, जो रोटरी फाउंडेशन के मप्रोग्राम्स ऑफ स्केलफ अनुदान से वित्त पोषित एक पहल है। अभी-अभी अपने तीसरे वर्ष को पूरा कर चुकी इस पहल का उद्देश्य नाइजीरिया के चुनिंदा क्षेत्रों में मातृ एवं नवजात मृत्यु दर को 25 प्रतिशत तक कम करना है। इसके लिए हम सामुदायिक संवाद और घर-घर जाकर परामर्श कर रहे हैं ताकि अधिक से अधिक परिवार घर पर इलाज कराने के बजाय क्लीनिक में स्वास्थ्य सेवाएँ लेना पसंद करें। साथ ही, हम स्वास्थ्य कर्मियों को अतिरिक्त प्रशिक्षण देकर इन सेवाओं की गुणवत्ता को भी बेहतर बना रहे हैं।

हाल ही में आपातकालीन प्रसूति एवं नवजात देखभाल प्रशिक्षण के दौरान, आये स्थित एक नज़दीकी स्वास्थ्य केंद्र में प्रसव पीड़ा से जूझ रही एक महिला लाई गई। यह महिला पहले पाँच बार गर्भवती हो चुकी थी और इस बार वह 36 सप्ताह से अधिक की जुड़वां गर्भावस्था लिए हुए थी।

हालात तनावपूर्ण थे। अस्पताल में कर्मचारियों की कमी थी और प्रभारी अधिकारी, एक नर्स दाई, अनुपस्थित थीं। ऐसे में एक सामुदायिक स्वास्थ्य विस्तार कार्यकर्ता ने प्रसव की ज़िम्मेदारी संभाली। वह प्रशिक्षण से दाई नहीं थीं, लेकिन हमारे कार्यक्रम का हिस्सा थीं और आपातकालीन देखभाल प्रशिक्षण के माध्यम से जीवन रक्षक कौशल से लैस थीं।

पहला जुड़वा बच्चा सिर के बल तेज़ी से बाहर आ गया। नवजात शिशु के रोने की आवाज़ से कमरा गूंज उठा और एक पल के लिए हमें राहत मिली। लेकिन दूसरा जुड़वा बच्चा इतना सहयोग नहीं कर रहा था। वह उल्टा था और सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता के तमाम प्रयासों के बावजूद प्रसव आगे नहीं बढ़ पा रहा था। समय मानो धीमा हो गया था। कमरे में चिंता का माहौल छा गया।

तुरंत परामर्श किया गया, और पहले से मौजूद प्रशिक्षण और समन्वय के कारण, कार्यशाला में भाग

ऊपर: नवंबर में एक सामुदायिक संवाद में मातृ स्वास्थ्य के बारे में बात करते हुए एक सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता गर्भवती महिला की नकल करती हुई।
नीचे: रोटरी फाउंडेशन की ट्रस्टी इजेओमा पर्ल ओकोरो (बाएं से दूसरी) और रोटरी फाउंडेशन के ट्रस्टी अध्यक्ष होल्गर नेक (दाएं से सबसे आगे) प्रशंसा पुरस्कार प्राप्त करते हुए, उनके साथ (बाएं से) किंग्सले ओकोरो, लानरे एडेडॉयिन और जॉय एनकेवाई ओकोरो भी चित्र में शामिल हैं।

ले रहे स्वास्थ्य अधिकारी और एक नर्स ने बिना किसी हिचकिचाहट के कार्रवाई की। उन्होंने मिलकर महिला को इयिन एकिती शहर के जनरल अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया।

कुछ घंटों बाद, मैं उसके बिस्तर के पास खड़ा था जब दूसरे जुड़वां बच्चे का जन्म सुरक्षित रूप से हुआ। लेकिन संकट अभी टला नहीं था। मरीज को रक्तस्राव होने लगा। उसे प्रसवोत्तर रक्तस्राव हो रहा था, जो नाइजीरिया में मातृ मृत्यु का एक प्रमुख कारण है। उसे तुरंत कई दवाएँ दी गईं और रक्तस्राव पर नियंत्रण पा लिया गया। माँ का जीवन बच गया, और दोनों बच्चे, भले ही छोटे थे, स्थिर रूप से सांस ले रहे थे।

उस रात जब मैं लेटा, तो मुझे उसका चेहरा याद आया पीला उसका चेहरा याद आया हुआ और उसके पास लिपटे हुए उसके नन्हे बच्चों के छोटे-छोटे शरीर। मुझे उस सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता की याद आई जिसकी ट्रेनिंग ने उसे मुश्किल हालात में कारगर साबित होने वाली रेफरल प्रणाली को आजमाने का साहस दिया था, और उस अस्पताल टीम की याद आई जिसने मां और बच्चों के सुरक्षित होने तक हार नहीं मानी।

मेरे लिए, यह नौकरी पर एक और दिन से कहीं बढ़कर था। यह मेरे कर्तव्य की पुष्टि थी। इस अनुभव ने मुझे याद दिलाया कि हर आंकड़े के पीछे एक कहानी होती है: एक माँ, एक बच्चा, एक परिवार, एक भविष्य।

ओलुबुनमी अफोलाबी नाइजीरिया में 'टुगेदर फॉर हेल्दी फैमिलीज' की संचार अधिकारी हैं और रोटरी ई-क्लब ऑफ नाइजीरिया न्यू डॉन की सदस्य हैं।

चित्र: लाइट ओरिये

©Rotary

908

आपातकालीन प्रसूति एवं नवजात शिशु देखभाल में प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी

आंकड़े 30 जून, 2025 तक के हैं

542

विभिन्नप्रसूति देखभाल में प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी

133

गर्भनिरोधक, दवाइयाँ और अन्य आवश्यक सामग्री स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँचाई गईं

38,783

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने हेतु घर-घर जाकर मुलाकात करना

408

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के बारे में निवासियों को शिक्षित करने के लिए सामुदायिक संवाद

51,350

चार लक्षित राज्यों में सामुदायिक संवादों के माध्यम से लोगों तक पहुंचा गया

उम्मीदों का निवेश

जयश्री

रोई मंडल 3233 द्वारा चेन्नई में टीआरएफ न्यासी प्रमुख हॉलगर नेक के सम्मान में आयोजित "Million Dollar Opportunity' शीर्षक वाली टीआरएफ बैठक प्रेरणा और नए संकल्प से भरी एक शाम थी। इस अवसर पर रोटरी नेताओं ने बताया कि उदारता, विश्वास और रणनीतिक दान किस प्रकार दुनिया भर में लोगों के जीवन को निरंतर बदल रहे हैं।

रोटरी वास्तव में बहुत लोगों के लिए अवसरों के द्वार खोलती है, नेक ने कहा। जहाँ रोटरी अपने सदस्यों को मित्रता, नेतृत्व और साझा मूल्यों का मंच प्रदान करती है, वहीं इस संस्थान की सबसे बड़ी भूमिका उन लोगों के लिए अवसरों का सृजन करना है, जिनकी वह सेवा करती है। उन्होंने मंडल के प्रमुख दानकर्ताओं, एकेएस सदस्यों और सीएसआर साझेदारों को उनकी उदारता के लिए धन्यवाद दिया। यह केवल पैसे के बारे में नहीं है। यह इस बारे में है कि उस पैसे से क्या हो रहा है। लेकिन सच कहूँ तो हाँ, यह पैसे के बारे में भी है। क्योंकि उसके बिना कुछ भी संभव नहीं होगा, उन्होंने स्पस्ट रूप से कहा। उनके अनुसार दान के पीछे सबसे बड़ा कारण विश्वास है। रोटरी फाउंडेशन एक विश्वसनीय संस्थान है। यह हमारा संस्थान है। इसे हम ही चलाते हैं।

अपनी बात की विश्वसनीयता को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने बिल गेट्स का उदाहरण दिया, जिनकी संस्था रोटरी के पोलियो उन्मूलन अभियान के लिए 2:1 अनुपात में राशि मिलान करती है। जब हम 50 मिलियन डॉलर एकत्र करते हैं, तो गेट्स फाउंडेशन हमारे खाते में 100 मिलियन डॉलर स्थानांतरित करता है। इसे ही सच्चा विश्वास कहते है, उन्होंने कहा।

नेक ने बर्लिन के एक 93 वर्षीय दानकर्ता का किस्सा साझा किया, जिन्होंने ओवरहेड लागत पर सवाल उठाया था। इस संदर्भ में उन्होंने समझाया कि रोटरी प्रबंधन, निगरानी और मूल्यांकन पर विशेष ध्यान क्यों देती है। योजना बनाना, आंकलन करना और उसे मापना ओवरहेड नहीं हैं। ये प्रभाव सुनिश्चित करते हैं, उन्होंने कहा। इनपुट, आउटपुट, आउटकम और इम्पैक्ट के ढाँचे को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया कि रोटरी यह मूल्यांकन कैसे करती है कि उसकी परियोजनाएँ वास्तव में दीर्घकालिक और स्थायी बदलाव ला रही हैं या नहीं।

चाहे वह डायलिसिस मशीनें हों जो रोगियों को सम्मानपूर्वक जीवन जीने में सहायता करती हैं या किसानों के समर्थन कार्यक्रम हो जो परिवारों की आजीविका को सुदृढ़ बनाते हैं, रोटरी अब मापने योग्य और दीर्घकालिक परिणामों पर विशेष ध्यान दे रही है। हम अब केवल धन पर नहीं बल्कि उसके प्रभाव पर अधिक ज़ोर दे रहे हैं, उन्होंने कहा।

पूर्व रो ई अध्यक्ष क्लिफ दोचटरमेन की थीम सच्ची खुशी दूसरों की सहायता करने में है को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा, हम अपने रोटरी संस्थान के माध्यम से ठीक यही कर रहे हैं। इस फाउंडेशन के जरिए दाता स्वच्छ जल, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे अपने सपनों को वास्तविकता में बदल सकते हैं।

पोलियो का अंत उनकी सबसे गहरी आकांक्षा बना हुआ है। हालांकि भारत पिछले एक दशक से अधिक समय से पोलियो-मुक्त है, फिर भी उन्होंने हाल ही में जर्मनी में इस वायरस के पाए जाने के बाद किसी भी प्रकार की लापरवाही न करने की चेतावनी दी। उन्होंने जोर देकर कहा, आइए हम अपना वादा निभाएँ कि अब कोई भी बच्चा फिर कभी पोलियो के कारण विकलांग नहीं होगा।

टीआरएफ को रोटरी की रीढ़ और बाहरी दुनिया की ओर हमारी खिड़की बताते हुए न्यासी भरत पांड्या

TRF ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक DG डी देवेंद्रन के साथ दीप जलाते हुए, सुज़ैन नेक, अर्चना देवेंद्रन और गीतारानी अंबलावनन भी चित्र में शामिल हैं।

DG देवेंद्रन, ट्रस्टी-इलेक्ट ए एस वेंकटेश का स्वागत करते हुए, ट्रस्टी भरत पांड्या, PDG N नंदकुमार और DGN गणपति सुरेश भी चित्र में शामिल हैं।

ने कहा कि फाउंडेशन के माध्यम से रोटरी का वैश्विक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है - गुजरात में स्कूलों के उन्नयन और चेन्नई में प्रोजेक्ट ऑरेंज से लेकर नेपाल में WASH परियोजनाओं तथा अफ्रीका में चिकित्सा मिशनों तक। फाउंडेशन के कार्य और सदस्यता के बीच संबंध पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने सर्वेक्षण के निष्कर्ष साझा किए, जिनसे पता चला कि जो रोटेरियन वैश्विक अनुदान में भाग लेते हैं, वे अधिक सक्रिय और संतुष्ट रहते हैं। मानवीय अनुदान सदस्यों को आकर्षित करने, उन्हें जोड़ने और बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम हैं, उन्होंने कहा।

पांड्या ने अपने क्लब की नेत्र देखभाल पहल का उदाहरण साझा किया। रोटरी क्लब बोरिवली में हम एक नेत्र बैंक और प्रोसेसिंग सेंटर चलाते हैं। जबकि कई नेत्र बैंक दान किए गए नेत्र एकत्रित करते हैं पर बहुत कम ऐसे केंद्र हैं जो कॉर्निया का ट्रांसप्लांटेशन के लिए मूल्यांकन और प्रोसेसिंग कर सकते हैं। मुंबई में ऐसे केवल तीन केंद्र हैं और इनमें से एक हमारे क्लब द्वारा संचालित है, उन्होंने कहा।

पिछले एक दशक से अधिक समय से इस केंद्र ने 2,500 से अधिक लोगों को दृष्टि लौटाई है। लेकिन एक अनुभव विशेष रूप से यादगार रहा। पिछले वर्ष क्लब के सदस्य मुंबई के एक बाहरी क्षेत्र में स्थित एक स्कूल गए, जहाँ 150 दृष्टिहीन बलिकाएं पढ़ती थी ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या उनमें से किसी का चिकित्सीय रूप से उपचार किया जा सकता है। जांच के बाद उन्होंने पाया कि 12 लड़कियाँ कॉर्नियल अंधेपन से पीड़ित थी जिसका उपचार संभव था। सभी 12 लड़कियों की सफल सर्जरी हुई। आज वे पूरे आत्मविश्वास और स्वतंत्रता के साथ नियमित स्कूलों में पढ़ रही हैं। यही रोटरी के कार्य की शक्ति है - वास्तव में जीवन परिवर्तक।

उन्होंने टीआरएफ के गुणक प्रभाव की भी बात की और याद किया कि उनके क्लब का 1,000 डॉलर का योगदान मिलान अनुदान के माध्यम से 117,000 डॉलर की परियोजना में कैसे बदल गया। उन्होंने रो ई मंडल 3140 में गर्वनर के रूप में अपने कार्यकाल को भी याद किया जब यह मंडल दुनिया का सबसे बड़ा योगदानकर्ता बन गया। उन्होंने कहा कि इससे भारत की दान क्षमता के प्रति धारणा बदल गई। हमने साबित कर दिया कि भारतीय सिर्फ लेने में नहीं बल्कि देने में भी सक्षम हैं।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम ने न्यासी प्रमुख हॉलगर नेक और न्यासी पांड्या को सिंबायोसिस यूनिवर्सिटी, पुणे में रोटरी पीस सेंटर का उद्घाटन करने पर बधाई दी। उन्होंने चार मार्ग परीक्षण को उद्धृत करते हुए सदस्यों से अपनी कही गई बात को निभाने का आग्रह किया और उन्हें याद दिलाया कि रोटरी एक विस्तारित परिवार है जो साझा मूल्यों से बंधी है। रोटरी के सात ध्यानाकर्षण क्षेत्रों को वैश्विक चुनौतियों से जोड़ते हुए उन्होंने कहा, जहाँ शिक्षा की कमी है, वहाँ गलतफहमी है। जहाँ स्वास्थ्य खराब है, वहाँ कष्ट है। जहाँ बच्चों की सुरक्षा नहीं है, वहाँ भविष्य अनिश्चित है - और यहीं रोटरी हस्तक्षेप करती है।

इससे पहले न्यासी प्रमुख का परिचय देते हुए पीआरआईडी ए एस वेंकटेश ने उनके युवा कार्यक्रमों के प्रति प्रेम और रोटरी के साथ लंबे समय से जुड़ाव को उजागर किया। उन्होंने बताया कि हॉलगर नेक और सुज़ेन ने 45 युवा विनिमय छात्रों की मेज़बानी की है।

डीजी डी देवेंद्रन ने टीआरएफ के योगदान को मानवता में निवेश बताते हुए सदस्यों से आग्रह किया कि दान केवल अधिशेष से नहीं बल्कि सहानुभूति से किया जाना चाहिए। मंडल रोटरी फाउंडेशन के प्रमुख एल नीलकंठन ने साझा किया कि यह मंडल विभाजन के बाद बना और अभी इसे बने केवल दो वर्ष ही हुए है और इसने पिछले वर्ष टीआरएफ को 1.03 मिलियन डॉलर का योगदान दिया। उन्होंने प्रोजेक्ट ऑरेंज, मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयाँ और स्मार्ट क्लासरूम जैसी पहलों का हवाला देते हुए कहा, हम केवल अनुदान नहीं दे रहे हैं, हम एक प्रणाली तैयार कर रहे हैं। इस वर्ष, हम फाउंडेशन के तीन स्तंभों - वार्षिक निधि, अक्षय निधि, पोलियो निधि और अनुदान - में 1.2 मिलियन डॉलर का लक्ष्य हासिल कर रहे हैं। हर एक डॉलर वास्तविक प्रभाव में बदल जाएगा। ■

दाएं से: ट्रस्टी चेयर नेक, ट्रस्टी भरत पांड्या, रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम और DG देवेंद्रन।

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी युवा वैज्ञानिकों को तैयार करता है

वी मुत्तुकुमारन

पथ-प्रदर्शक वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ जन्म से नहीं होते; वे निरंतर कठिन अध्ययन, अथक शोध और असफलताओं के बावजूद सतत प्रयास की प्रक्रिया में तैयार किए जाते हैं। भविष्य के नवाचारकों को तैयार करने के उद्देश्य से, यंग साइंटिस्ट्स फोरम 2025 (वाईएसएफ) ने तमिलनाडु, केरल और मुंबई के 42 स्कूलों के लगभग 340 विद्यार्थियों को एक मंच प्रदान किया। इन छात्रों ने तमिलनाडु के पोल्लाची में आयोजित एक दिवसीय प्रदर्शनी में अपने प्रोजेक्ट डेमो स्टॉल पर वैज्ञानिक मॉडलों, प्रोटोटाइप और संकल्पनात्मक विचारों के माध्यम से अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

रोटरी क्लब पोलाची, रो ई मंडल 3203 और आर्कोम टेक सॉल्यूशंस (बच्चों को व्यावहारिक तकनीकी कौशल प्रदान करने वाला एक ज्ञान-आधारित गैर सरकारी संगठन) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित वाईएसएफ का आयोजन कोयंबटूर के कोवई विद्याश्रम स्कूल में किया गया। क्लब के अध्यक्ष वी. सतीश चंद्रन ने कहा, ''पहली बार हमने आर्कोम के साथ साझेदारी की है, जो पिछले तीन वर्षों से तमिलनाडु भर के स्कूल विद्यार्थियों के लिए विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन कर रहे हैं। अब रोटरी के सहयोग से वाईएसएफ का दायरा और पहुंच दोनों ही उल्लेखनीय रूप से बढ़ गए हैं, जिससे क्षेत्र के स्कूलों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।''

वाईएसएफ के लिए आर्कोम द्वारा लगभग 5-6 वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया गया था। इन विशिष्ट सदस्यों ने प्रतिभागियों के साथ बातचीत की और उन्हें बहुमूल्य सुझाव दिए, जिससे प्रतिभागियों को अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाने का आत्मविश्वास मिला। उन्होंने कहा, वैज्ञानिकों के साथ आमने-सामने की चर्चा के दौरान विद्यार्थियों को नई तकनीकी अवधारणाओं के वास्तविक जीवन में उपयोग की भी झलक देखने का अवसर भी मिला।

वैज्ञानिक जिज्ञासा

प्रोजेक्ट वाईएसएफ की शुरुआत को याद करते हुए क्लब सचिव श्रीकांत वेंकट ने कहा, ''मैंने 2024 में आर्कोम प्रदर्शनी का दौरा किया और विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वास्तविक जीवन में उपयोग होने वाली समस्याओं को सुलझाने की अवधारणाओं को बढ़ावा देने में स्कूली छात्रों पर उनके प्रभाव को देखकर मैं दंग रह गया। क्लब की बोर्ड बैठक में हमने स्कूलों के लिए वार्षिक विज्ञान मेले के आयोजन में इस संस्था के साथ साझेदारी करने पर चर्चा की और इस तरह नवंबर 2025 में हमारे पहले संयुक्त वाईएसएफ का जन्म हुआ।''

वेंकट ने बताया, यह एक प्रतिस्पर्धी कार्यक्रम है जिसमें छात्रों को उनकी कक्षाओं (कक्षा 5-12) के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है, और इसका

मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के भीतर वैज्ञानिक जिज्ञासा और नवाचार की भावना पैदा करना है। उन्होंने आगे बताया, वाईएसएफ ने प्रतिभागियों को कक्षा और पाठ्यपुस्तकों से परे सोचने के लिए प्रेरित किया और उनकी कल्पना को पंख दिए, जिससे वे एआई-आधारित मॉडल, आईओटी (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) एप्लिकेशन जैसे स्मार्ट होम, डिजिटल ऑफिस आदि जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित कर सके। उन्हें उन अवसरों से अवगत कराया गया जो विज्ञान उभरती समस्याओं और सामाजिक मुद्दों को हल करने के लिए खोल सकता है।

वाईएसएफ ने मेरे लिए सीखने का एक शानदार अवसर प्रदान किया। अपना डेमो मॉडल प्रस्तुत करने के बाद, मुझे विशेषज्ञों से बातचीत करने का मौका मिला और वैज्ञानिक समुदाय में वास्तविक परिस्थितियों से रूबरू होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, पोल्लाची के अरोकियामादा एचएस स्कूल के कक्षा 9 वर्षीय मुभासिर ने कहा। केरल के चित्तूर स्थित विजयमाथा कॉन्वेंट एचएस स्कूल की कक्षा 8 वर्षीय वनिश्री के पिता प्रकाश ने रोटरी और आकॉम की सराहना करते हुए आयोजकों को एक सुव्यवस्थित और प्रेरक कार्यक्रम के लिए धन्यवाद दिया, जिसने छात्रों को रचनात्मक रूप से सोचने, प्रश्न पूछने और वैज्ञानिक मानसिकता विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

एक अन्य पहल के तहत, क्लब ने *प्रोजेक्ट हील* का आयोजन किया, जिसके तहत प्रमुख अस्पतालों के सहयोग से पोलाची में आयोजित दो जांच शिविरों में 130 ग्रामीण महिलाओं की स्तन तथा गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर की जांच की गई। वेंकट ने बताया, हमने कोवई मेडिकल सेंटर और अस्पताल के सहयोग से आयोजित पहले शिविर में 60 महिलाओं की स्तन कैंसर की जांच के लिए रोटरी क्लब मेट्टुपालयम से मैमोग्राफी वैन मंगाई। इसके बाद एक और शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 70 महिलाओं की स्तन और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर (पैप स्मीयर टेस्ट के माध्यम से) की जांच की गई। दूसरे शिविर में गंगा मेडिकल सेंटर और अस्पताल ने सहयोग प्रदान किया।

ऑपरेशन क्लीन के तहत, रोटेरियन सदस्यों ने रोटरेक्टर्स के साथ मिलकर सात रविवारों तक वालपराई-अलियार वन क्षेत्र में पर्यटकों द्वारा फेंका गया प्लास्टिक कचरा और अन्य अपशिष्ट एकत्र किया। यह वन क्षेत्र जैव विविधता का एक प्रमुख केंद्र है। उन्होंने कहा, हमने लगभग 10 टन मलबा इकट्ठा किया, जो वन्यजीवों और पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहा था। हैदराबाद स्थित आईएचएल से प्राप्त सी एस आर निधि (₹37.5 लाख) से वाझैकोम्बु नागूर (एक आदिवासी बस्ती) के सरकारी माध्यमिक विद्यालय में एक नए कक्षाकक्ष का निर्माण कार्य चल रहा है। डीजी बी धनसेकर ने दिसंबर में इस परियोजना की आधारशिला रखी। चंद्रन ने बताया, उसी दिन हमने विद्यालय के 80 आदिवासी बच्चों को ₹15,000 मूल्य के नए कपड़े और स्कूल यूनिफॉर्म वितरित किए।

एक व्यापक सामुदायिक सेवा कार्यक्रम के तहत, क्लब ने यातायात निरीक्षकों, नर्सों, विशेष शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सरकारी ड्राइवरों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं और सांस्कृतिक कलाकारों जैसे 25

बाएं से घड़ी की दिशा में: *RID 3203 के DG बी धनसेकर (बाएं से चौथे) और उनकी पत्नी अमुदप्रिया सरकारी स्कूल के बच्चों को नए कपड़े बांटते हुए। चित्र में (दाएं से) रोटरी क्लब पोलाची के सेक्रेटरी श्रीकांत वेंकट और अध्यक्ष वी सतीश चंद्रन चित्र में शामिल हैं; स्कूल के स्टूडेंट्स अपने साइंटिफिक मॉडल दिखाते हुए; DG धनसेकर एक बड़ी सफाई ड्राइव में वलपराई-अलियार फॉरेस्ट रेंज में एक प्लास्टिक की बोतल को एक बड़े लिटर बिन में डालते हुए। साथ में दिख रहे हैं क्लब के प्रेसिडेंट चंद्रन (बाएं), अमुदप्रिया और सेक्रेटरी वेंकट (दाएं से दूसरे); रोड सेफ्टी अवेयरनेस ड्राइव के दौरान ट्रैफिक नियमों का पालन कर रहे एक गाड़ी चलाने वाले को मिठाई का डिब्बा और एक थैंक यू नोट दिया गया।*

अग्रणी कार्यकर्ताओं को राष्ट्र निर्माता पुरस्कार प्रदान किए। एसटीसी कॉलेज में आरवाईएलए बैनर के तहत आयोजित *प्रोटीन फॉर द नेशन, प्रॉस्पेरिटी फॉर यूथ* शीर्षक वाली एक पोल्ट्री कार्यशाला में, 240 छात्रों को पशुधन क्षेत्र, फार्म प्रबंधन, पोषण, पशु चिकित्सा सेवा और आपूर्ति-श्रृंखला लॉजिस्टिक्स में करियर के अवसरों से अवगत कराया गया। पोल्ट्री फार्मर्स रेगुलेटरी कमेटी के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और स्थानीय युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए कुछ पोल्ट्री उद्यमियों को सम्मानित भी किया गया।

हरित विरासत स्थापित करने के उद्देश्य से पोलाची के निकट करप्पाड़ी गाँव में दो-चरणों में एक विशाल वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। चंद्रन ने बताया, दीर्घकालिक हरित आच्छादन और मृदा संरक्षण के लिए लगभग 1,000 ताड़ के बीज बोए गए, इसके बाद 600 स्थानीय प्रजातियों के पौधे लगाए गए, जिनसे गांव के 600 से अधिक लोगों को लाभ होगा। ग्रामीणों और युवा स्वयंसेवकों के साथ-साथ रोटेरियन सदस्यों की भागीदारी के कारण, हम इस छोटे से गाँव को एक हरे-भरे स्वर्ग में बदल देंगे और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ेंगे।

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराने के उद्देश्य से, *रोटरी रिले रन* का आयोजन रोटरेक्टर्स के साथ मिलकर मादक पदार्थों के दुरुपयोग के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए किया गया। लगभग 250 प्रतिभागियों ने पोलाची से इरोड तक 120 किलोमीटर की दूरी तय की, गांवों और कस्बों से गुजरते हुए जनता के बीच 'नशीली

DEI आउटरीच के हिस्से के तौर पर, 10 स्पेशल स्कूलों के 205 दिव्यांग बच्चों ने एक साथ योगा डांस किया।

क्लब के अध्यक्ष चंद्रन करप्पाडी गांव में पेड़ लगाने की मुहिम में शामिल हुए।

दवाओं को ना कहें' का सशक्त संदेश पहुंचाया, उन्होंने कहा। पोलाची नगर पालिका की अध्यक्ष एन श्यामला ने चंद्रन के साथ रिले मैराथन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर रो ई मंडल 3203 यातायात जागरूकता समन्वयक शिवानंता वदिवेल, रोटरेक्ट अध्यक्ष राजलक्ष्मी और डी आर आर सेल्वविग्नेश भी उपस्थित थे। स्थानीय शाखा, इंडियन डेंटल एसोसिएशन के सहयोग से कराप्पड़ी गांव में एक मौखिक स्वच्छता शिविर में 55 लोगों की जांच की गई।

विविधता, समावेशन और समावेशन (डीईआई) के लिए चलाए जा रहे अपने प्रयासों के तहत, भरथियार विश्वविद्यालय के न्यूब्रिज सेंटर के साथ संयुक्त कार्यक्रम में 10 विशेष विद्यालयों के 205 दिव्यांग बच्चों ने एक समन्वित योग-नृत्य प्रस्तुत किया। 10 मिनट के इस विशेष प्रस्तुति को वर्च्यू बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया।

वैश्विक अनुदान परियोजना

अब सबकी निगाहें उनके चल रहे वैश्विक अनुदान परियोजना (65,000 डॉलर) 'मिशन स्पार्कल' पर टिकी हैं, जिसके तहत पश्चिमी घाट की तलहटी में स्थित आदिवासी बस्ती और आरक्षित वन क्षेत्र अन्नामलाई शिक्षा ब्लॉक में 10 सरकारी प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में 10 लिंग-विभाजित शौचालय ब्लॉक बनाए जा रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया स्थित रोटरी क्लब बेलमोंट, रो ई मंडल 9423, इस परियोजना का वैश्विक भागीदार है।

शौचालय बनने के बाद इन 10 स्कूलों के 500 छात्रों को लाभ होगा, जिनमें कभी 1,000 से अधिक छात्र पढ़ते थे। वेंकट ने बताया, लेकिन खराब स्वच्छता और बदहाल स्थिति के कारण अनुपस्थिति और स्कूल छोड़ने वाले छात्रों की संख्या में पिछले कुछ वर्षों में भारी कमी आई है। उन्होंने आगे कहा, स्कूल के शिक्षक आशावादी हैं कि रोटरी शौचालयों के निर्माण के बाद नए प्रवेशों में बड़ी वृद्धि होगी। यह क्लब की दूसरी जीजी परियोजना है। पहली परियोजना 1995 में ₹2.5 करोड़ की लागत से एक इलेक्ट्रिक श्मशान घाट की स्थापना थी। हम अभी भी उस सुविधा का रखरखाव कर रहे हैं।

व्यापक दृष्टिकोण से देखें तो, चंद्रन मुस्कुराते हुए कहते हैं, हम अपना समय और दिल उन दूरदराज के गाँवों की सेवा में लगा रहे हैं जहां रोटरी की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। मानद रोटेरियन सहित 89 सदस्यों वाले इस 41 वर्षीय क्लब ने पांच रोटरेक्ट और दो इंटरेक्ट क्लबों को प्रायोजित किया है। कपड़ा उद्योगपति और परोपकारी, कुमारगुरु ग्रुप ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट्स के अध्यक्ष कृष्णराज वनवरयार, रोटरी क्लब पोलाची के संस्थापक अध्यक्ष थे। ■

केवल ताइपे में

आने वालों के लिए चाइनीज़ खाना और ओपेरा खास पेशकशों में से हैं।

रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में लोगों से जुड़ने और मनोरंजन करने के कई तरीके हैं।

प्रेरणादायक सम्मेलन कार्यक्रम के अलावा, 13-17 जून को ताइवान जाने पर आपको कई विशेष अनुभवों का आनंद लेने का अवसर मिलेगा। प्रमुख आकर्षणों में ओपेरा, रोटरी यूथ एक्सचेंज के पूर्व छात्रों और समर्थकों का एक विशेष मिलन, तथा पूरे द्वीप की साइकिल यात्रा भी शामिल है।

ताइपे में आपके दोस्तों ने नेशनल थिएटर फॉर ओपेरा और नेशनल सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा में रोटरी नाइट्स का आयोजन किया है। आपको एक शानदार भोज में आमंत्रित किया गया है, जहाँ आपको बेहतरीन चीनी व्यंजन और रोमांचक प्रस्तुतियाँ देखने को मिलेंगी। या फिर पोलियो उन्मूलन के लिए धन जुटाएँ: सम्मेलन से पहले पूरे द्वीप का चक्कर लगाने वाली एक सप्ताह लंबी साइकिल यात्रा या 13 जून को होने वाली 3 किलोमीटर या 12.5 किलोमीटर की दौड़ में से किसी एक को चुनें।

चीनी या अंग्रेजी भाषा में आयोजित नियोजित टूर के साथ दर्शनीय स्थलों को देखना आसान है। इनमें आधे दिन के ताइपे टूर से लेकर ताइवान के विविध भूदृश्यों की खोज में पांच दिन बिताने तक के विकल्प उपलब्ध हैं। कई छोटे ताइपे टूर में से कोई न कोई आपकी रुचियों के अनुरूप अवश्य होगा: राष्ट्रीय धरोहर स्थल, प्राकृतिक स्थान, खरीदारी के लिए पुरानी गलियां और पारंपरिक कलाएं, आदि।

रोटरी यूथ एक्सचेंज को दो टिकट-आधारित कार्यक्रमों में प्रमुखता दी जाएगी। 12 जून को आयोजित एक भव्य भोज में यूथ एक्सचेंज के नेता और पूर्व प्रतिभागी आपस में मेलजोल कर सकेंगे और वक्ताओं से यह सुन सकेंगे कि यह कार्यक्रम किस प्रकार वैश्विक समझ को बढ़ावा देता है। अगले दिन, रोटरी यूथ एक्सचेंज प्री-कन्वेंशन में नेताओं, प्रतिभागियों और इसमें शामिल होने के इच्छुक लोगों के साथ नेटवर्किंग का अवसर मिलेगा।

रोटरी अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो कहते हैं कि जब सदस्य सम्मेलन में एक साथ आते हैं तो कुछ खास होता है। वे कहते हैं, यह वह एहसास होता है कि कुछ भी संभव है। यह एहसास ताइपे में जीवंत हो उठता है, और अरेज़ो का एक अनुरोध है: आइए, हम सब मिलकर इसका अनुभव करें।

अधिक जानकारी प्राप्त करें और
convention.rotary.org
पर पंजीकरण कराएं।

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP

Statement about ownership and other particulars about Rotary Samachar to be published in the first issue of every year after the last day of February

1. Place of Publication	:	Chennai - 600 008
2. Periodicity of its publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
4. Publisher's Name	:	P T Prabhakar
Nationality	:	Indian
Address	:	15, Sivasami Street Mylapore Chennai 600 004
5. Editor's Name	:	Rasheeda Bhagat
Nationality	:	Indian
Address	:	No. 25 Jayalakshmipuram 1st Street Nungambakkam Chennai - 600 034
6. Name and address of individual who owns the newspaper and partner or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	Rotary News Trust Dugar Towers, 3rd Floor 34, Marshalls Road Egmore Chennai - 600 008

I, P T Prabhakar, declare that the particulars given are true to the best of my knowledge and belief.

Chennai - 600 008 — sd/-

1st March, 2026 — P T Prabhakar

स्कूल ऑन व्हील्स में क्लास लेते बच्चे।

Rotary PEOPLE OF ACTION

सड़क पर रहने वाले बच्चों के लिए शिक्षा का नया सवेरा

रशीदा भगत

कई भारतीय शहरों में सड़कों पर रहने वाले बच्चे कोई नई बात नहीं हैं और भुवनेश्वर भी इसका अपवाद नहीं है। यहाँ बड़ी संख्या में बच्चे रेलवे स्टेशन के आसपास, फुटपाथों पर तथा मंदिरों और बाज़ारों के पास बनी सड़कों पर अपना जीवन बिताते हैं। इन बच्चों का एक सामान्य काम कूड़ा बीनना है, जिसमें छह वर्ष तक के छोटे लड़के-लड़कियाँ भी कचरे में से छांटकर पुनर्चक्रण योग्य सामग्री इकट्ठा करते हैं। यदि वे अपने माता-पिता के साथ सड़कों पर रहते हैं, तो कम से कम कुछ भोजन मिल जाना सुनिश्चित होता है। लेकिन यदि वे अकेले हैं, तो उनका अगला भोजन भी निश्चित नहीं होता। जब व्यक्तिगत स्वास्थ्य और स्वच्छता सुनिश्चित नहीं हो पाती, तब शिक्षा तो उनके लिए एक दूर का सपना बन जाती है। ये बच्चे नशे की लत और गंभीर बीमारियों के शिकार होने के उच्च जोखिम में रहते हैं, भुवनेश्वर रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3262 के पूर्व अध्यक्ष एस हरिचन्दन कहते है।

ऐसे बच्चों के लिए किसी भी प्रकार की व्यवस्थित या नियमित शिक्षा केवल एक सपना ही बनी रहती है। इसके कारण वे विभिन्न प्रकार के शोषण और दुर्व्यवहार के प्रति असुरक्षित और संवेदनशील बने रहते हैं। वे छोटे-छोटे समूहों में रहते हैं, इसलिए उनके लिए औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम शुरू करना भी कठिन होता है। परिणामस्वरूप वे पूरी तरह से किसी भी प्रकार की शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, वह बताते हैं।

इस विशाल समस्या में कम से कम कुछ हद तक सुधार लाने और इन दुर्भाग्यपूर्ण बच्चों के जीवन में बदलाव लाने के उद्देश्य से वर्ष 2010 में एक दूरदर्शी शिक्षाविद स्वर्गीय इंदरजीत खुराना द्वारा रुचिका सोशल सर्विस ऑर्गनईज़ेशन (RSSO) की स्थापना की गई। विद्यार्थी उन्हें स्नेहपूर्वक मामा कहते थे। इसी उद्देश्य से वंचित बच्चों के लिए रुचिका स्कूल की भी स्थापना की गई। उनके निधन के बाद इस कार्य को RSSO के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) के रूप में डॉ बेनुधर सेनापति ने आगे बढ़ाया और उन्होंने *स्कूल ऑन व्हील्स* की परिकल्पना प्रस्तुत की। वर्ष 2021

में इंडिया टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन द्वारा तीन बैटरी से चलने वाले इलेक्ट्रिक रिक्शा (ओडिशा में जिन्हें Totos कहा जाता है) उपलब्ध कराए गए। इसके बाद डॉ सेनापति ने उस समय रोटरी क्लब भुवनेश्वर के अध्यक्ष रहे हरिचंदन से संपर्क कर इस परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए रोटरी की सहायता मांगी।

क्लब अध्यक्ष ने इस परियोजना पर क्लब के सदस्यों से चर्चा की। सभी की ओर से अत्यंत सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली और साझेदारी की पुष्टि कर दी गई। रुचिका के प्रतिनिधियों और हमारे बीच कई दौरों के गहन विचार-विमर्श के बाद एक संचालन बजट तैयार किया गया। साथ ही, इन सड़क बच्चों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं के वित्तीय पहलुओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई। हमारे पूर्व अध्यक्ष और सामुदायिक सेवा निदेशक, स्वर्गीय डॉ एस के रे ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्लब ने ₹1.5 लाख खर्च करने का निर्णय लिया। अगस्त 2021 में रुचिका और रोटरी के बीच एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुआ और इनर व्हील के सदस्य भी इस पहल से जुड़ गए, वह कहते है।

डॉ रे की अध्यक्षता में पहला *रोटरी स्कूल ऑन व्हील्स* अस्तित्व में आया। इस पहल में साझेदार के रूप में भुवनेश्वर का इनर व्हील क्लब भी शामिल हुआ और पूरे वर्ष खाद्य राशन उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी संभाली। इस परियोजना का उद्घाटन वर्ष 2021 में शिक्षक दिवस के अवसर पर तत्कालीन रो

बाएं से चौथे: PDG यज्ञानसिस मोहपात्रा और डी एन पाधी, और क्लब के पूर्व अध्यक्ष हरिचंदन (सबसे दाएं) स्टूडेंट्स के साथ।

रोटरी स्कूल ऑन व्हील्स में बच्चे, जो ई-रिक्शा से चलता है।

बिजय, ड्राइवर-कम-टीचर, बच्चों को पढ़ाते हुए।

ई मंडल 3262 के मंडल गवर्नर शांतनु कुमार पाणी द्वारा किया गया।

क्लब ने इस परियोजना की शुरुआत एक केंद्र और एक Toto से की थी। आज यह बढ़कर दो केंद्रों और दो Toto तक पहुँच गई है, जहाँ लगभग 60 विद्यार्थियों को लाभ मिल रहा है। क्लब ने इस परियोजना से निरंतर जुड़ाव बनाए रखा है और इसके लिए हर वर्ष ₹1.5 लाख अलग से निर्धारित किए हैं। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ बच्चों की बुनियादी स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाता है।

परियोजना के कार्य करने के तरीके को समझाते हुए हरिचंदन बताते हैं कि उनका *स्कूल ऑन व्हील्स* सड़कों या सड़क जैसी परिस्थितियों में रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा प्रदान करने की एक समेकित पहल है। हमारे दो केंद्र हैं, लेकिन यह परियोजना भुवनेश्वर शहर के विभिन्न हिस्सों में क्रियान्वित है, जिनमें पुराने विधान सौधा के पीछे की सड़क और शिशु भवन चौक के आसपास का क्षेत्र शामिल है - अर्थात जहाँ भी बच्चे सड़कों पर रहते हैं। मूल रूप से यह बच्चों के लिए 'डोरस्टेप एजुकेशन प्रोग्राम' है। एक बैटरी से चलने वाला ई-रिक्शा (Toto) बच्चों तक पहुँचता है, जिसे स्कूल की तरह सजाया गया है और जिसमें पठन सामग्री, खेल सामग्री, खिलौने, थोड़ा भोजन और प्राथमिक उपचार (फर्स्ट-एड) बॉक्स रखा होता है। टोतो के दोनों किनारों का उपयोग ब्लैकबोर्ड की तरह किया जाता है और उसके चारों ओर नक्शे व चार्ट लगाए

जाते हैं। क्लब ने बिजय को टोतो के चालक-सह-शिक्षक के रूप में नियुक्त किया है। वह टोतो को उस स्थान तक ले जाते हैं जहाँ बच्चे होते हैं और वहाँ लगभग एक घंटे तक उन्हें पढ़ाते हैं। इसके बाद वह अगले स्थान पर जाते हैं, जहाँ कम से कम पाँच या उससे अधिक बच्चे उपलब्ध हों। एक दिन में टोतो ऐसे चार स्थानों पर जाता है। बिजय बताते हैं, बच्चों को पढ़ाते समय उनकी रुचि जगाने और उसे बनाए रखने के लिए मुझे अक्सर गाना और नाचना पड़ता है ताकि किसी अवधारणा या पाठ को बेहतर ढंग से समझाया जा सके। बच्चों का ध्यान केंद्रित रखने और उन्हें विभिन्न विषय सिखाने के लिए खिलौनों का भी उपयोग किया जाता है।

संख्याएँ और शब्द सिखाने के अलावा वह बच्चों को शिक्षा के लाभों के बारे में परामर्श भी देते हैं और उन्हें औपचारिक सरकारी विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए प्रेरित करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर प्राथमिक उपचार की सुविधा भी प्रदान की जाती है और यदि बच्चे भूखे हों तो उन्हें भोजन भी दिया जाता है। चित्रकला और हस्तशिल्प कार्य को भी प्रोत्साहित किया जाता है। गीत, खेल और कठपुतली प्रदर्शन प्रतिदिन की शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा होते हैं क्योंकि ये गतिविधियाँ बच्चों को सीखने के विषयों की ओर आकर्षित करती हैं। सीखने की प्रक्रिया के अंत में शिक्षक बच्चों को कुछ गृहकार्य भी देते हैं ताकि वे पढ़ाई से जुड़े रहें और उनकी रुचि बनी रहे।

जब शिक्षक महसूस करते हैं कि कुछ बच्चे नियमित स्कूल में पढ़ाई के लिए तैयार हैं, तो उनके लिए सरकारी स्कूलों में प्रवेश की व्यवस्था की जाती है। इसके बाद भी शिक्षक उन बच्चों को स्कूल के बाद अकादमिक समर्थन प्रदान करना जारी रखते हैं ताकि वे नियमित स्कूल में सही ढंग से पढ़ाई कर सकें और पीछे न छूटें।

हरिचंदन पुष्टि करते हैं कि वर्तमान में कई बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे हैं और कुछ तो अपने हाई स्कूल की परीक्षा भी पास कर चुके हैं। लेकिन सड़क पर रहने वाले इन बच्चों को नियमित स्कूलों में दाखिला दिलाना आसान कार्य नहीं था। हमें पड़ोसी सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के साथ काम करना पड़ा और उन्हें सड़क पर रहने वाले इन बच्चों को अपने स्कूलों में दाखिला दिलाने और उन्हें स्कूल के माहौल का आनंद लेने का एक मौका प्रदान करने हेतु मनाना पड़ा। हमें इन स्कूलों के छात्रों के साथ कुछ सत्र भी आयोजित करने पड़े ताकि उन्हें यह समझाया जा सके कि इन बच्चों को अपने मित्र के रूप में स्वीकार करें, वह आगे कहते है।

यहाँ तक कि सीखने के केंद्रों में भी बच्चों को स्कूल में होने का अनुभव प्रदान करने के लिए रोटेरियनों ने प्रत्येक बच्चे को रोटरी लोगो वाली दो टी-शर्ट, साथ ही जूते, खिलौने, किताबें, दवाइयाँ आदि प्रदान किए। क्लब के एक सदस्य द्वारा *स्कूल ऑन व्हील्स* के लिए लगभग 50 खिलौने दान किए जाने के बाद एक खिलौना बैंक की स्थापना की गई। बच्चों को हर दिन अलग-अलग प्रकार के खिलौने खेलने के लिए मिलते हैं, जिससे उनकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहता।

हरिचंदन बताते हैं कि यह ङ्गस्कूलिंगफ परियोजना बच्चों पर शिक्षा से परे गहन प्रभाव डाल रही है। जब हम उन्हें भुवनेश्वर के रीजनल म्यूज़ीअम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री ले गए, तो हमने पाया कि वे बहुत अनुशासित और शालीन थे, जो हमारे लिए सुखद आश्चर्य था। संग्रहालय की यात्रा के दौरान उन्होंने विलुप्त हो चुके जानवरों, पक्षियों, बड़ी मछलियों और भारत के विभिन्न हिस्सों से एकत्रित पत्थरों को देखकर वास्तव में आनंद लिया। क्लब भविष्य में भी इसी तरह की यात्राएँ आयोजित करने की उम्मीद करता है।

एक भावपूर्ण टिप्पणी करते हुए वह कहते हैं कि जहाँ अन्य बच्चे बड़े चाव से अपने जन्मदिन के उत्सव की प्रतीक्षा करते हैं, वहीं सड़क पर रहने वाले कई बच्चों को तो यह भी नहीं पता होता कि उनका जन्म किस तारीख को हुआ था। पूर्व अध्यक्ष ज्ञान रंजन रथ के प्रयासों से एक प्रणाली शुरू की गई, जिसके तहत हर महीने की अंतिम तारीख को सभी बच्चों के जन्मदिन मनाए जाते हैं। सबसे छोटा बच्चा केक काटता है ताकि खुशी और मुस्कान फैल सके और बच्चों में केक बांटा जा सके। बाद में हमने देखा कि हर महीने की अंतिम तारीख को बच्चे केंद्र में साफ-सुथरी शर्ट पहनकर, बाल संवारकर, नाखून काटकर और चेहरे धोकर आते हैं!

आज भी क्लब हर महीने की अंतिम तारीख को बच्चों के जन्मदिन बड़े उत्साह और नियमित रूप से मनाता है, और बच्चे उस दिन केक खाने का बेसब्री से इंतजार करते हैं!

इन बच्चों के परिवारों के लिए क्लब के सदस्यों द्वारा उठाए गए अन्य कल्याणकारी कदमों में सर्दियों के दौरान परिवारों को कंबल प्रदान करना और अन्नपूर्णा दिवस आयोजित करना शामिल है, जब रोटेरियन बच्चों और उनके परिवारों को पका हुआ भोजन परोसते हैं।

इस परियोजना के माध्यम से कम से कम कुछ सौ बच्चों को लाभ हुआ। उन्हें न केवल बुनियादी शिक्षा मिली है बल्कि आवश्यकता पड़ने पर बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल, दवाइयाँ और प्राथमिक उपचार सेवाएँ भी प्रदान की गई हैं। इसके अलावा, बच्चों को साफ-सफाई और स्वच्छता के अच्छे अभ्यास

बच्चों और उनके परिवारों के लिए खाना।

के बारे में सिखाया गया है ताकि वे स्वस्थ और सुरक्षित रह सकें। उन्हें उनके अधिकारों और विभिन्न सरकारी संगठनों से मिलने वाली सहायता के बारे में भी जानकारी दी गई है। 2024 के अंत तक, 132 बच्चों को सरकारी स्कूलों में प्रवेश दिलाया गया और उन्हें किताबें व यूनिफॉर्म प्रदान किए गए।

आईपीडीजी यज्ञानसिस मोहापात्रे बताते हैं कि इस पहल के माध्यम से क्लब का मुख्य उद्देश्य यह है कि सड़क जैसी परिस्थितियों में रहने वाले अधिक से अधिक बच्चों तक पहुँचकर उन्हें आनंदपूर्ण और रचनात्मक सीखने का माहौल दिया जाए जिसमें बुनियादी शिक्षा, जीवन कौशल, स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता और स्वच्छता संबंधी ज्ञान शामिल हो। इसके साथ ही, इन संवेदनशील बच्चों को उनके अधिकारों की रक्षा के लिए उपलब्ध विभिन्न सरकारी सेवाओं से जोड़ा जाता है।

पूर्व अध्यक्ष श्रीचंदन मिश्रा इस परियोजना के ट्रिकल-डाउन प्रभाव के बारे में बात करते हैं। उनकी इस पहल के बाद दो और समान स्कूल ऑन व्हील्स की स्थापना को अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन और एक बेल्जियम संगठन द्वारा समर्थन मिला। क्लब इस परियोजना को अनेक मंडल गवर्नरों के सहयोग से सफलतापूर्वक संचालित करने में सक्षम रहा, जिन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान इन केंद्रों का दौरा किया। इनमें पीडीजी शांतनु पाणी, प्रभु सुबुद्धि, जयश्री मोहंती और यज्ञानसिस मोहापात्र शामिल हैं। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

जन्मे शिशुओं की नेत्र-देखभाल के लिए महत्वपूर्ण उपकरण

रशीदा भगत

रो ई मंडल 3132 के अंतर्गत आने वाले रोटरी क्लब जालना मिडटाउन ने महाराष्ट्र के शुरुआती अत्याधुनिक रेटकैम डायग्नोस्टिक सेंटर में से एक की स्थापना की है, जो नवजात गहन चिकित्सा इकाई (एनआईसीयू) में भर्ती शिशुओं के लिए समर्पित है। यह पहल समय से पहले जन्मे शिशुओं को दृष्टि खोने के खतरे से बचाने के लिए आवश्यक अत्यधिक विशेषज्ञ चिकित्सा सेवा में एक महत्वपूर्ण योगदान है ताकि वे सामान्य और स्वस्थ विकास की दिशा में आगे बढ़ सकें। यह उपकरण विशेष रूप से इस बात को सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया गया है कि नवजात शिशुओं को प्रिमेच्योर रेटिनोपैथी जैसी स्थिति का खतरा न हो, जो उनकी दृष्टि को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है।

यह केंद्र जालना के श्री गणपती नेत्रालय में स्थापित किया गया है, जो माहेको रिसर्च फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित एक नेत्र-चिकित्सा संस्थान है। यहाँ समय से पहले जन्मे शिशुओं में रेटिनोपैथी की पहचान और उपचार के लिए अत्याधुनिक उपकरण लगाए गए हैं। यह परियोजना लगभग 49,500 अमेरिकी डॉलर के एक वैश्विक अनुदान से संभव हो सकी जबकि श्री गणपति नेत्रालय ने भी लगभग ₹1.5 करोड़ का योगदान दिया।

अपनी परियोजना की शुरुआत और उसके पीछे के कार्य को स्पष्ट करते हुए क्लब के पूर्व अध्यक्ष अनूप करवा, जो ग्रांट लीड और रो ई मंडल 3132 ग्रांट सबकमेटी चेयर (DGSC,RY 24-25) हैं, ने बताया कि साझेदार अस्पताल के डॉक्टरों से बातचीत के दौरान रोटेरियनों को पता चला कि यह नेत्रालय प्रतिदिन कम से कम 3-4 नवजात शिशुओं की जाँच करता है, जिन्हें चिकित्सकीय भाषा में रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी (ROP) कहा जाता है। उन्होंने कहा कि चिंताजनक तथ्य यह था कि

इनमें से कई शिशु पहले ही स्टेज 5 ROP तक पहुँच चुके होते हैं, जहाँ रोग की स्थिति अत्यंत गंभीर और पूर्वानुमान (प्रोग्नोसिस) बहुत कमजोर होता है। यह तो केवल एक छोटा सा हिस्सा है क्योंकि कई शोध प्रकाशनों में ROP की दर को अत्यधिक उच्च बताया गया है। अनुमान है कि समय से पहले जन्मे शिशुओं में से लगभग एक-तिहाई इस स्थिति से प्रभावित होते हैं। उन्होंने आगे कहा कि दुर्भाग्यवश अधिकांश सरकारी अस्पतालों में इस रोग की पहचान और उपचार के लिए आवश्यक विशेषज्ञता उपलब्ध नहीं है। इसके लिए अत्यधिक प्रशिक्षित सर्जनों के साथ-साथ अत्याधुनिक उपकरणों और सुविधाओं की आवश्यकता होती है।

जालना जैसे ज़िलों और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत रेटिनल इमेजिंग सुविधाओं और प्रशिक्षित विशेषज्ञों की भारी कमी है। ऐसे में शिशुओं को दूर-दराज़ के शहरों में रेफ़र करना पड़ता था, जिससे बहुमूल्य समय नष्ट हो जाता था।

आरओपी एक ऐसी स्थिति है जो अंधत्व का कारण बन सकती है। यह उन समय से पहले जन्मे शिशुओं की रेटिना की रक्त वाहिकाओं को प्रभावित करती है जिनका वजन 1.5 किलोग्राम से कम होता है या जिनका जन्म 32 सप्ताह से पहले हुआ हो। संख्याओं का उल्लेख करते हुए वह बताते हैं कि पिछले दो दशकों में वैश्विक स्तर पर प्री-टर्म शिशुओं के जीवित रहने की दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, विशेषकर भारत जैसे देशों में, जहाँ प्रतिवर्ष 3.5 मिलियन से अधिक बच्चे समयपूर्व जन्म लेते हैं और जीवित रहते हैं। भारत जैसे घनी आबादी वाले देश में अंधत्व और दृष्टि-दोष का आर्थिक बोझ अत्यंत भारी और गंभीर है।

इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, रेटकैम डायग्नोस्टिक सेंटर स्थापित करने का हमारा सपना साकार हुआ, करवा कहते हैं। वह आगे कहते हैं कि इस परियोजना की योजना और क्रियान्वयन से जुड़े लोगों के लिए यह केवल एक उपकरण की खरीद नहीं थी बल्कि यह एक जीवनरक्षक और टिकाऊ प्रणाली की स्थापना थी, जो इस क्षेत्र में समय से पहले जन्मे शिशुओं के माता-पिता को आशा प्रदान करेगी।

इस यात्रा की शुरुआत रोटेरियनों, डॉक्टरों, नवजात विशेषज्ञों (नियोनेटोलॉजिस्ट) और नन्हे मरीजों के परिवारों के बीच हुई बातचीत से हुई। एनआईसीयू के दौरे के दौरान ऐसी कहानियाँ सामने आईं, जो मुलाकात समाप्त होने के बाद भी लंबे समय तक मन में बनी रहीं। हमारे लिए सबसे कठिन बात यह देखना था कि इतने सारे शिशु गंभीर दिनों से तो बच जाते हैं, लेकिन उसके बाद उनका भविष्य अंधकारमय होने की आशंका से घिर जाता है, वह कहते है।

पहला कदम वास्तविक आवश्यकता को समझना और समुदाय का गहन आंकलन करना था। यह कार्य

जालना और आस-पास के ग्रामीण इलाकों में एडवांस्ड रेटिनल इमेजिंग और ट्रेंड स्पेशलिस्ट की बहुत कमी है। बच्चों को दूर के शहरों में जाना पड़ता है, जिससे कीमती समय बर्बाद होता है।

अस्पतालों के अनेक दौरे और क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ विस्तृत चर्चाओं के माध्यम से किया गया। इन प्रक्रियाओं से एक गंभीर कमी सामने आई - आरओपी (रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी) के निदान के लिए स्वर्ण मानक मानी जाने वाली रेटकैम तकनीक का अभाव। आँकड़े एकत्र करने, केस हिस्ट्री का दस्तावेज़ीकरण करने और समस्या की व्यापकता का मूल्यांकन करने के बाद, हमें पूरा विश्वास हो गया कि यह आवश्यकता वास्तविक, अत्यंत तात्कालिक और असंदिग्ध है।

आवश्यकता के प्रति पूरी तरह आश्वस्त होने के बाद, कोर टीम के सदस्यों ने अमेरिका के कई अंतर्राष्ट्रीय रोटरी क्लबों से संपर्क किया। प्रस्तुतियों, प्रभावशाली कहानियों और आँकड़ों पर आधारित आवश्यकता मूल्यांकन के माध्यम से परियोजना का महत्व साझा किया गया। अनूप करवा ने रो ई मंडल 5330 के रोटरी क्लब कोरोना और रो ई मंडल 5870 के रोटरी क्लब ऑस्टिन के साथ इस परियोजना को साझा किया जहाँ उन्होंने वित्तीय प्रतिबद्धताएँ सुनिश्चित की और साझेदारी को मजबूत किया। लगभग 49,500 अमेरिकी डॉलर का वैश्विक अनुदान टीआरएफ द्वारा स्वीकृत किया गया जबकि गणपति नेत्रालय ने 1,70,000 अमेरिकी डॉलर (उस समय की प्रचलित विनिमय दर के अनुसार लगभग ₹1.5 करोड़) का योगदान दिया।

अत्याधुनिक इमेजिंग तकनीक से सुसज्जित इस केंद्र का उद्घाटन 2025 में मंडल गवर्नर सुधीर लातुरे की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर माहेको समूह के चेयरमैन राजेंद्र बरवाले, आईपीडीजी सुरेश साबू, पीडीजी स्वाति हेरकेल, क्लब अध्यक्ष अंकित अग्रवाल, श्री गणपति नेत्रालय के मेडिकल

श्री गणपति नेत्रालय में रोटरी कल्ब जालना मिडटाउन द्वारा लगाए गए RetCam इक्विपमेंट की मदद से एक प्रीमैच्योर बच्चे की रेटिनोपैथी के लिए स्क्रीनिंग की जा रही है।

डायरेक्टर डॉ ऋषिकेश नायगांवकर और अनूप करवा भी उपस्थित थे। अग्रवाल ने कहा कि यहाँ प्रदान की जाने वाली सेवाएँ पूर्णतः निःशुल्क होंगी, ताकि आर्थिक सीमाओं के कारण किसी भी बच्चे को उपचार से वंचित न रहना पड़े, अग्रवाल ने कहा।

उपकरण की खरीद और केंद्र के उद्घाटन के बाद, महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के सरकारी अस्पतालों की एनआईसीयू में भर्ती नवजात शिशुओं की जांच पहले ही शुरू हो चुकी है। यह जाँच कुशल और प्रशिक्षित तकनीशियनों द्वारा फंडस कैमरा की सहायता से की जा रही है। इस उपकरण को एक वातानुकूलित मोबाइल वैन में ले जाया जाता है जो टेलीमेडिसिन सुविधाओं से सुसज्जित है और पहले से ही साझेदार अस्पतालों के पास उपलब्ध है। यह जांच कार्य समय-समय पर नियमित रूप से जारी रखा जाएगा।

इस विशेष कैमरे से ली गई तस्वीरों को क्लाउड सर्वरों के माध्यम से जालना स्थित साझेदार अस्पताल में उपलब्ध उन रेटिना विशेषज्ञों के साथ साझा किया जाएगा जो आरओपी (रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी) के निदान और उपचार में प्रशिक्षित हैं।

दीवाली से अब तक इस पोर्टेबल उपकरण के माध्यम से जालना के आसपास के तीन शहरों में समय से पहले जन्मे 50 से अधिक शिशुओं की जांच की जा चुकी है। इनमें से आठ मामलों में स्टेज 1 और 2 की रेटिनोपैथी को समय पर आई ड्रॉप्स और उचित नेत्र-देखभाल के माध्यम से रोका गया। करवा ने बताया कि यदि इन मामलों का समय पर निदान नहीं किया जाता, तो आगे चलकर सर्जरी की आवश्यकता पड़ने के साथ ही अंधत्व का खतरा भी हो सकता था, करवा ने आगे कहा।

मोबाइल इक्विपमेंट को गांव के इलाकों में ले जाया जाएगा और स्पेशल कैमरे से ली गई इमेज को क्लाउड सर्वर के ज़रिए रेटिना स्पेशलिस्ट के साथ शेयर किया जाएगा ताकि समय पर डायग्नोसिस और ट्रीटमेंट हो सके।

जिन शिशुओं में इस बीमारी का निदान होगा और जिन्हें विशेष चिकित्सीय प्रबंधन की आवश्यकता होगी, उनका उपचार उसी एनआईसीयू में किया जाएगा जहाँ वे पहले से भर्ती हैं। जिन नवजातों को सर्जरी की आवश्यकता होगी, उन्हें श्री गणपती नेत्रालय, जालना रेफ़र किया जाएगा, जहाँ आवश्यक ऑपरेशन की सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। क्लब अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने बताया कि इन सर्जरियों की लागत राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत कवर की जाएगी।

अब अगला कदम डॉक्टरों की कार्यशालाएँ आयोजित करना है, जिनमें बाल रोग विशेषज्ञों (पीडियाट्रिशियन), नवजात विशेषज्ञों (नियोनेटोलॉजिस्ट) और नेत्र विशेषज्ञों (ऑफ्थैल्मोलॉजिस्ट) को इस बीमारी की पहचान के प्रति सजग रहने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा ताकि शीघ्र पहचान और त्वरित रेफ़रल संभव हो सके। करवा ने कहा, ''हम महाराष्ट्र के 10 से अधिक शहरों के एनआईसीयू डॉक्टरों के लिए एक कार्यशाला आयोजित करेंगे।'' साथ ही ग्रामीण महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के और अधिक एनआईसीयू से जुड़कर सार्वभौमिक जांच कवरेज सुनिश्चित करेंगे तथा समय पर पहचान एवं उपचार के लिए मोबाइल यूनिट को राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों तक भेजेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले वर्ष अपने डीजीएससी कार्यकाल के दौरान उन्होंने मंडल अनुदानों सहित कुल $700,000 डॉलर मूल्य के 15 वैश्विक अनुदान संपन्न किए।

उन्होंने आगे कहा कि महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों में और अधिक शिविर आयोजित किए जाएंगे। जो लोग इस परियोजना में स्वयंसेवक के रूप में जुड़ना चाहते हैं, वे नेत्रालय के डॉक्टरों के साथ यात्रा कर इस महत्वपूर्ण पहल में अपना योगदान दे सकते हैं।

महाराष्ट्र भर के एनआईसीयू और रोटरी नेत्र-चिकित्सा अस्पताल सहयोग के लिए rcjmidtown@gmail.com और anupkarwa@gmail.com पर संपर्क कर सकते हैं।

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

विद्यार्थियों ने ISRO में आरएच-200 प्रक्षेपण देखा

रोटरी क्लब तिरुपुर मेटल टाउन रो ई मंडल 3203 ने 50 सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) में आरएच-200 साउंडिंग रॉकेट के प्रक्षेपण को देखने के लिए प्रायोजित किया। क्लब के सदस्य बेन वीजी आनंदराम ने यात्रा और संबंधित खर्चों को वहन करने के लिए ₹1 लाख का योगदान दिया।

ISRO, तिरुवनंतपुरम में छात्र।

इंटरेक्टर्स ने कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर का आयोजन किया

रायपुर पिनैकल के इंटरेक्ट क्लब ने, रोटरी क्लब रायपुर क्वींस (रो ई मंडल 3261) के प्रायोजन से, रायपुर में चार दिवसीय कृत्रिम अंग दान शिविर का आयोजन किया। गुजरात की एक पेशेवर टीम ने कृत्रिम अंग फिटिंग का कार्य किया, जबकि इंटरेक्ट क्लब के सदस्यों ने पंजीकरण, व्यवस्था और पुनर्वास सहायता का प्रबंधन किया।

एक लाभार्थी आर्टिफिशियल पैर लगाते हुए।

बच्चों के लिए एक पार्क

रोटरी क्लब सोनारपुर, रो ई मंडल 3291 ने साउथ कोलकाता विजन (पूर्व अध्यक्षों का एक मंच) के साथ मिलकर बाल दिवस के अवसर पर कोलकाता के निकट सोनारपुर में समुदाय को एक नव विकसित बाल उद्यान भेंट किया। यह उद्यान क्लब के आरसीसी आश्रम आनंदम के सहयोग से बनाया गया है।

पार्क के उद्घाटन के मौके पर क्लब के सदस्य और बच्चे।

स्मार्ट कक्षाओं का निर्माण

रोटरी क्लब मैंगलोर नॉर्थ (रो ई मंडल 3181) और बैंगलोर विजयनगर (रो ई मंडल 3191) ने श्री रामकृष्ण एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, मैंगलोर में पांच स्मार्ट बोर्ड स्थापित किए हैं। यह स्थापना पिक्सल सॉफ्टेक्स के सीईओ रोटेरियन पी वी राय द्वारा प्रायोजित ₹5.8 लाख की सी एस आर परियोजना के अंतर्गत की गई है। इस पहल से डिजिटल क्लासरूम के बुनियादी ढांचे को मजबूती मिलेगी और इंटरेक्टिव लर्निंग को बढ़ावा मिलेगा।

PDG कृष्णा शेट्टी (बाएं) एक डिजिटल क्लासरूम का उद्घाटन करते हुए।

Rotary PEOPLE OF ACTION

कैनवास से कक्षा तक

किरण ज़ेहरा

क्रिम्ज़न डेथ्थ, गोल्डन ड्रीम्स नामक एक पेंटिंग की बिक्री से बेंगलुरु के वंचित छात्रों के लिए बने स्कूल रोटरी बैंगलोर विद्यालय में बच्चों की शिक्षा के लिए धन जुटाने में मदद मिली है। इस कलाकृति से प्राप्त आय का 30 प्रतिशत हिस्सा, रोटरी क्लब बैंगलोर (आरसीबी), रो ई मंडल 3192, की कला-आधारित धन जुटाने की पहल 'कला फॉर विद्या' के माध्यम से स्कूल को दिया गया।

यह पेंटिंग बेंगलुरु की कलाकार खुशबू टिबरेवाल द्वारा बनाई गई थी। उन्होंने सरकार की डॉ बी आर अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना (कर्नाटक सरकार की एक पूर्ण-वित्तपोषित पहल, जो अनुसूचित जाति के छात्रों को विदेशी विश्वविद्यालयों में मास्टर और डॉक्टरेट की पढ़ाई करने में सहायता करती है) के तहत ग्रामीण कर्नाटक का दौरा करने के बाद इसे तैयार किया। इन दौरों के दौरान, उन्होंने अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों से बातचीत की, जो शैक्षणिक रूप से होनहार थे, लेकिन उच्च शिक्षा के रास्तों के बारे में उनकी जानकारी सीमित थी। वह कहती हैं, कई छात्रों ने कभी बेंगलुरु में पढ़ने के बारे में भी नहीं सोचा था, और अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा तो उनके लिए लगभग नामुमकिन सी बात थी। उन्हीं मुलाकातों ने इस कलाकृति के विषय और उद्देश्य को आकार दिया। उनकी यह कलाकृति ₹41,000 में बिकी।

आर्टिस्ट खुशबू टिबरवाल अपनी पेंटिंग 'क्रिम्ज़न डेथ्थ, गोल्डन ड्रीम्स' के साथ।

कला फ़ॉर विद्या शिक्षा के लिए धन जुटाने हेतु कलाकृतियों की बिक्री का उपयोग करती है। पारंपरिक दान-आधारित अपीलों पर निर्भर रहने के बजाय, यह पहल कला की बिक्री का एक निश्चित हिस्सा शिक्षा के वित्तपोषण की ओर निर्देशित करती है, साथ ही यह भी सुनिश्चित करती है कि कलाकार को उसकी कमाई का अधिकांश हिस्सा प्राप्त हो।

आरसीबी ने हाल ही में *कला फ़ॉर विद्या* के 2025 संस्करण का समापन किया, जो इसका 18वां वार्षिक कला धन संचय संस्करण था। यह प्रदर्शनी बेंगलुरु इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी के माध्यम से नागदेवनहल्ली स्थित रोटरी बैंगलोर विद्यालय के लिए धन जुटाया गया, जो वंचित समुदायों के 450 से अधिक बच्चों की शिक्षा में सहायता प्रदान करता है।

प्रदर्शनी का उद्घाटन रोटेरियन सीतालक्ष्मी चिन्नप्पा, मीरा शंकर, श्रीचन्द राजपाल और शांति बालिगा ने किया। DG एलिज़ाबेथ चेरियन और DGE रविशंकर डाकोजू मौजूद थे। इस वर्ष के संस्करण में 155 कलाकारों द्वारा दी गई 201 पेंटिंग्स और 21 मूर्तिकलाएं प्रदर्शित की गईं, जो विभिन्न माध्यमों एवं शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करती हैं।

क्लब के अंतर्राष्ट्रीय सेवा निदेशक संदीप ओहरी का कहना है कि इस वर्ष क्लब ने बिक्री का एक विस्तारित मॉडल अपनाया। जबकि भौतिक प्रदर्शनी अक्टूबर में समाप्त हो गई थी, लेकिन कलाकृतियाँ 31 दिसंबर, 2025 तक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से उपलब्ध रहीं। वह आगे कहते हैं, यह तरीका उद्घाटन के सप्ताहांत की बिक्री पर निर्भरता को कम करने और संभावित खरीदारों के दायरे को व्यापक बनाने के लिए तैयार किया गया था।

ऑनलाइन चरण का समर्थन करने के लिए, क्लब ने एक व्यवस्थित डिजिटल अभियान विकसित किया, जिसमें कलाकृतियों का पेशेवर दस्तावेज़ीकरण और कलाकारों के प्रशंसापत्र शामिल थे। इसका उद्देश्य प्रस्तुति और मूल्य निर्धारण में निरंतरता बनाए रखते हुए दृश्यता में सुधार करना था।

लाभार्थी विद्यालय

कला फॉर विद्या के माध्यम से जुटाई गई राशि रोटरी बैंगलोर विद्यालय को सहयोग देती है, जो रोटरी क्लब ऑफ बैंगलोर चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित एक संस्था है। यह स्कूल प्री-नर्सरी से कक्षा 10वीं तक कन्नड़ और अंग्रेज़ी माध्यम में राज्य पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है।

नागदेवनहल्ली में स्थित और सार्वजनिक परिवहन से आसानी से सुलभ इस परिसर में कक्षाएँ, विज्ञान एवं कंप्यूटर प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, खेल के मैदान और सभागार शामिल हैं। विद्यालय की कंप्यूटर लैब को 2023 में आधुनिक प्रणालियों, लाइसेंस प्राप्त सॉफ़्टवेयर और डिजिटल लर्निंग सुविधाओं के साथ उन्नत किया गया। कक्षा 1 से 10 तक के छात्रों के लिए ई-लर्निंग सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

रोटरी बैंगलोर विद्यालय के छात्र।

नियमित मूल्यांकन, अनुभवी शिक्षण स्टाफ और समय-समय पर होने वाले अभिभावक-शिक्षक संवाद के माध्यम से शैक्षणिक प्रगति को सुदृढ़ किया जाता है। स्कूल पाठ्येतर गतिविधियों, शैक्षणिक भ्रमण, स्वच्छता एवं वार्षिक चिकित्सा जांच पर भी विशेष ध्यान देता है।

रोटरी क्लब बैंगलोर के सदस्यों से बनी एक टास्क फोर्स समिति हर महीने प्रशासनिक, शैक्षणिक, सुरक्षा और वैधानिक मामलों की समीक्षा करती है, जिसमें विद्यालय के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रधानाध्यापिका की भी भागीदारी होती है।

प्रदर्शनी में DGE रविशंकर डाकोजू।

कला फॉर विद्या की वित्तीय संरचना व्यावसायिक गैलरियों से अलग है, जो आमतौर पर बिक्री पर 50-60 प्रतिशत कमीशन रखती हैं। इस मॉडल के तहत, वैधानिक करों और भुगतान-प्रसंस्करण शुल्क के बाद, आय का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा शिक्षा की ओर निर्देशित किया जाता है, जबकि कलाकारों को अधिकांश हिस्सा प्राप्त होता है। जो कलाकृतियाँ नहीं बिकतीं, वे कलाकारों की संपत्ति बनी रहती हैं और उनका पूर्ण स्वामित्व व कॉपीराइट उन्हीं के पास रहता है, ओहरी बताते हैं।

भागीदारी शुल्क कलाकारों के करियर के विभिन्न चरणों को ध्यान में रखकर तय किया गया था, जिसमें प्रिंटमेकरों और उभरते कलाकारों के लिए कम शुल्क रखा गया। इन शुल्कों का उद्देश्य अतिरिक्त लाभ कमाना नहीं था, बल्कि आयोजन स्थल का किराया, बीमा और लॉजिस्टिक्स जैसे बुनियादी संचालन खर्चों की भरपाई करना था।

प्रदर्शनी में ऑइल, वाटरकलर, चारकोल, टेराकोटा, स्टुको और मिक्स्ड मीडिया में बनी कलाकृतियाँ शामिल थीं, जिनकी कीमतें ₹7,000 से ₹13.7 लाख तक थीं। 2025 संस्करण को मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया से उत्साहित होकर, रोटरी क्लब बैंगलोर इस कार्यक्रम को वार्षिक आयोजन के बजाय साल भर चलने वाले प्लेटफॉर्म में बदलने की संभावना पर विचार कर रहा है। इसका उद्देश्य कलाकारों को निरंतर दृश्यता प्रदान करना और रोटरी बैंगलोर विद्यालय के लिए शिक्षा हेतु सतत धन जुटाना है। कला संस्थानों और स्कूलों के साथ संभावित सहयोग पर भी चर्चा चल रही है, जिसमें सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों में कला शिक्षा को शामिल करना भी शामिल है। हालाँकि ये योजनाएँ अभी प्रारंभिक चरण में हैं, लेकिन यह पहल सांस्कृतिक सृजन को दीर्घकालिक सामाजिक निवेश से जोड़ने की दिशा में एक व्यापक बदलाव को दर्शाती है, ओहरी समझाते हैं। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी और आईआईटी-एम ने पैरा टी टी चैंपियनशिप की मेजबानी की

वी मुत्तुकुमारन

पिछले तीन वर्षों से पैरा टेबल टेनिस टूर्नामेंट की मेजबानी करने के बाद, रोटरी क्लब मद्रास चेन्नई पटना, रो ई मंडल 3234 ने अब आईआईटी-मद्रास के साथ मिलकर तमिलनाडु में पहली बार राष्ट्रीय पैरा रैंकिंग टेबल टेनिस चैंपियनशिप का संयुक्त रूप से आयोजन किया है। दिव्यांग पैडलर्स के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित यह इस प्रतियोगिता का तीसरा संस्करण है।

आईआईटी मद्रास में आयोजित इस दो दिवसीय कार्यक्रम में 20 राज्यों से आए लगभग 221 पैरा खिलाड़ियों, जिनमें 60 महिलाएँ शामिल थीं, ने भाग लिया। डीजी विनोद सराओगी ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा, हमारे मेजबान क्लब के हमारे सभी सदस्य यह सुनिश्चित करेंगे कि आप सभी को कोई परेशानी न हो। रोटरी और आईआईटी के समन्वयकों की एक टीम ने आवास, भोजन और अन्य व्यवस्थाओं का ध्यान रखा। आईआईटी परिसर स्थित अध्ययन गतिविधि केंद्र के आधुनिक इनडोर स्टेडियम में, आईआईटी मद्रास के सहयोग से, अनुभवी कोच और रेफरी जैसी शीर्ष सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं।

उन्होंने कहा कि अगले दो वर्षों में पैरा रैंकिंग टीटी चैंपियनशिप को अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में उन्नत करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

इस आयोजन के विकास के बारे में बताते हुए परियोजना अध्यक्ष राजशेखर रमन ने कहा कि रोटरी क्लब मद्रास चेन्नई पटना हर साल रोटेरियनों के लिए टीटी लीग मैच आयोजित करता था। प्रतिभागियों में जबरदस्त उत्साह और सौहार्द देखकर हमने सोचा कि क्यों न दिव्यांगों के लिए भी कुछ प्रेरणादायक और उपयोगी किया जाए। लगभग तीन साल पहले, इसी विचार ने हमें अखिल भारतीय पैरा टीटी ओपन टूर्नामेंट आयोजित करने के लिए प्रेरित किया।

पहले साल पैरा टीटी मीट में केवल 36 खिलाड़ियों ने भाग लिया। अगले साल यह संख्या बढ़कर 46 हो गई, लेकिन हमारे इवेंट की क्वालिटी के बारे में बात तेज़ी से फैल गई। इसलिए पिछले साल (2025) हमारे क्लब ने देशभर से 156 पैरा खिलाड़ियों की मेजबानी की। राजशेखर ने कहा, कुछ खिलाड़ी ने दो दिन ट्रेन से सफ़र किया, हर चुनौती का सामना करते हुए एक ज़बरदस्त जोश और जुनून के साथ हमें पैरा टीटी टूर्नामेंट को अगले लेवल पर ले जाने की प्रेरणा दी।

क्लब का पिछला रिकॉर्ड देखने के बाद, टेबल टेनिस फेडरेशन ऑफ इंडिया (टीटीएफआई) और तमिलनाडु टेबल टेनिस एसोसिएशन ने रोटरी क्लब

बाएं से दाएं: रोटरी क्लब मद्रास चेन्ना पटना के अध्यक्ष एंटनी कुमार, रो ई मंडल 3234 के ए जी आर रविशंकर, DG विनोद सरावगी, डिस्ट्रिक्ट सेक्रेटरी आर जे कुमरवेल और आर समगिरी, और जे गणेश नेशनल पैरा रैंकिंग टेबल टेनिस चैंपियनशिप के उद्घाटन पर।

लीग मैच।

मद्रास चेन्ना पटना को राष्ट्रीय पैरा रैंकिंग टीटी चैंपियनशिप आयोजित करने की जिम्मेदारी सौंपी।

आईआईटी-मद्रास के साथ साझेदारी

जब क्लब सही जगह और सहयोगी की तलाश कर रहा था, तब आईआईटी-मद्रास ने रोटरी के साथ मिलकर काम करने के लिए आगे आया। राजशेखर ने बताया, हमारे क्लब और इंस्टीट्यूट दोनों का पैरा खिलाड़ियों तक पहुंचने का एक ही विज़न था। आईआईटी-एम के निदेशक वी. कामकोटी तथा प्लानिंग, स्टूडेंट अफेयर्स से जुड़े अन्य डीन और प्रोफेसरों का चैंपियनशिप के आयोजन में जोश और समर्थन देखकर बहुत अच्छा लगा।

दो दिन के टूर्नामेंट के दौरान, आईआईटी के रिसर्च स्कॉलर्स सीसीटीवी लगाकर एआई और मोशन एनालिसिस के माध्यम से पैरा खिलाड़ियों के मूवमेंट्स की स्टडी करेंगे। इससे वे ऐसे असिस्टिव टेक प्लेटफॉर्म विकसित कर पाएंगे जो विशेष एथलीटों के प्रदर्शन, क्षमता और उनके ट्रेनिंग मॉड्यूल्स को बेहतर बनाने में सहायक होंगे।

छोटी-मोटी परेशानियाँ

पिछले पांच सालों से पैरा टीटी टूर्नामेंट में नियमित रूप से भाग ले रहीं सूरत की भाविका कुकड़िया (30) इस इवेंट में स्टैंडिंग कैटेगरी में से एक में हिस्सा ले रही थीं। उन्होंने इवेंट में दिए गए खाने, रहने और आने-जाने के इंतज़ाम की तारीफ़ की। भाविका ने 25 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक जीत चुकी हैं और एक फार्मा कंपनी में काम करती हैं।

उनकी दोस्त, यूपी के उन्नाव मंडल की प्राची पांडे, जो व्हीलचेयर पर पैडलर हैं, ने कहा, हॉस्टल से वेन्यू तक का सफ़र हमारे लिए मुश्किल था। व्हीलचेयर पर चलने वाले खिलाड़ियों के लिए लॉजिस्टिक्स के मामले में बहुत सुधार किया जा सकता है। प्राची ने पैरा टीटी में 37 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक जीते हैं। भाविका ने कहा, ऑर्गनाइज़र को पैरा खिलाड़ियों को होने वाली मोबिलिटी की दिक्कतों पर ध्यान देना चाहिए, और अगले एडिशन में इन दिक्कतों को ठीक करना चाहिए।

उच्चतम पुरस्कार राशि

रोटरी क्लब मद्रास के मुख्य आयोजक संजय माधवन ने कहा, पहली बार, आईआईटी मद्रास एलुमनाई चैरिटेबल ट्रस्ट की उदारता की वजह से नेशनल पैरा टीटी इवेंट के विजेताओं को सबसे ज़्यादा इनाम मिलेगा। 17 विजेताओं में से चुने गए सात खिलाड़ियों में से हर एक को एक मोटराइज्ड व्हीलचेयर (हर एक को ₹75,000) मिली, जिसमें से एक इनक्यूबेटर प्रोजेक्ट थ्राइव मोबिलिटी ने डोनेट की थी।

सभी 17 विजेताओं को ट्रॉफी, प्रमाणपत्र और हर एक को ₹5,000 का कैश प्राइज़ मिला; 17 उपविजेताओं को ₹3,000 का कैश प्राइज़, ट्रॉफी और प्रमाणपत्र मिला; और ₹1,500 के 34 विशेष पुरस्कार भी वितरित किए गए।

नौ बचे हुए विजेताओं (व्हीलचेयर पर बैठे लोगों को छोड़कर) को क्लब ने ₹10,000 का कैश प्राइज़ दिया; जबकि पुराने पैडलर शरद कमल के वर्ल्ड ऑफ़ टेबल टेनिस स्टोर ने इन बचे हुए विजेताओं को ₹2,000 का गिफ़्ट वाउचर दिया। माधवन ने कहा, इस पैरा टीटी इवेंट के कम से कम छह विजेताओं को कमल राज्य सरकार की सहायता से बनाए गए हाई परफ़ॉर्मेंस सेंटर में तीन दिन की कोचिंग देंगे।

रोटरी न्यूज़ से बात करते हुए, रोटरी क्लब मद्रास चेन्ना पटना के अध्यक्ष एंटनी कुमार ने कहा, डीईआई के सिद्धांत हमारे दिल के बहुत करीब हैं, क्योंकि हम कई कोशिशों के माध्यम से दिव्यांग लोगों तक पहुँचते हैं। हमारे 10 साल पुराने माइक्रोलोन प्रोजेक्ट ने 80 लाभार्थियों की सहायता की है, जिनमें ज़्यादातर दिव्यांग और एलजीबीटीक्यू समुदाय के सदस्य हैं। उन्हें ₹50,000 से ₹1 लाख तक का बिना ब्याज का लोन प्रदान किया गया है। इन छोटे लोन ने उन्हें स्वरोज़गार के लिए छोटा व्यवसाय या किराना दुकान स्थापित करने में मदद की है।

33 साल पुराना यह क्लब, जिसमें 40 सदस्य हैं, स्तन कैंसर की जांच और स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन के साथ-साथ जरूरतमंद बच्चों के लिए शैक्षिक परियोजनाओं के लिए भी जाना जाता है।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

Rotary PEOPLE OF ACTION

राहत के माध्यम से लोगों के जीवन को स्पर्श करना

जयश्री

दो दिनों के लिए, मध्य प्रदेश के सीहोर स्थित चंद्रशेखर आजाद गवर्नमेंट पीजी कॉलेज का शांत परिसर एक चहल-पहल भरे और पूरी तरह से कार्यरत अस्पताल में बदल गया। भोपाल हिल्स और सीहोर के रोटरी क्लबों (रो ई मंडल 3040) द्वारा आयोजित राहत (रोटरीज़ एक्टिव हैंड्स आर टचिंग) चिकित्सा शिविर के तहत, 5,000 से अधिक लोगों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों के लिए मुफ्त इलाज मिला, जिनमें से कई लोगों को अपने जीवन में पहली बार चिकित्सा सुविधा प्राप्त हुई।

शिविर के कुछ सबसे मार्मिक पलों को साझा करते हुए, परियोजना अध्यक्ष उमंग सक्सेना ने 12 वर्षीय राजू की कहानी सुनाई, जो जन्म से ही कटे होंठ के साथ जी रहा था। वह बहुत शांत रहता था और लोगों की ओर देखने में भी हिचकिचाता था। उसके माता-पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और उनके पास सर्जरी का खर्च उठाने के साधन नहीं थे। ऑपरेशन के बाद, जब वह पुनः जांच के लिए आया, तो उसने पहली बार खुलकर मुस्कुराया। उस मुस्कान ने हमारी सारी मेहनत को सार्थक कर दिया।

सक्सेना ने 68 वर्षीय सावित्री देवी के बारे में भी बात की, जिनकी मोतियाबिंद के कारण धीरे-धीरे दृष्टि कमजोर होती जा रही थी। लगभग पांच वर्षों तक, वह हर चीज के लिए अपने परिवार पर निर्भर रहीं। उन्होंने हमें बताया कि ठीक से दिखाई न देने के कारण उन्होंने घर से बाहर निकलना बंद कर दिया था। सर्जरी के बाद, जब पट्टी हटाई गई, तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर कहा, 'अब मैं अपने पोते को फिर से साफ देख सकती हूं।' यह हम सभी के लिए एक भावुक क्षण था।

परामर्श के साथ-साथ, कई मरीजों की कटे होंठ, पित्ताशय की पथरी और अन्य जटिल बीमारियों की सर्जरी भी शिविर स्थल पर ही की गई। शिविर की अवधि के लिए पैथोलॉजी और रेडियोलॉजी इकाइयों सहित एक संपूर्ण अस्पताल का ढांचा स्थापित किया गया था। सीटी स्कैनर को छोड़कर, सभी प्रमुख चिकित्सा उपकरण भोपाल के पीपुल्स हॉस्पिटल से लाए गए थे।

लगभग 20 चिकित्सा विशेषज्ञताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले करीब 220 डॉक्टरों, नर्सों और पैरामेडिकल कर्मचारियों ने स्वेच्छा से अपना समय और विशेषज्ञता दी। उन्होंने अपनी सेवाएँ पूरी तरह निःशुल्क प्रदान कीं। हमने उनके यात्रा, ठहरने और भोजन की व्यवस्था की, रोटरी क्लब भोपाल हिल्स के अध्यक्ष हर्ष वाई मित्तल ने कहा।

इसे सीहोर में आयोजित अब तक का सबसे बड़ा चिकित्सा शिविर बताते हुए मित्तल ने स्थान के चयन के बारे में बताया। उन्होंने कहा, सीहोर 100 से अधिक गांवों से घिरा हुआ है। यहां शिविर आयोजित करके हम उन हजारों लोगों तक पहुंच सकते हैं, जिनकी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच अन्यथा सीमित है।

दोनों क्लबों के स्वयंसेवकों ने एक सप्ताह तक 162 गांवों का दौरा किया, घर-घर जाकर अभियान चलाया और जागरूकता फैलाने के लिए सामूहिक बैठकें आयोजित कीं। उनके प्रयासों का फल भारी संख्या में लोगों की उपस्थिति के रूप में मिला। भीड़ को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने के लिए, 10 पंजीकरण काउंटर स्थापित किए गए, जिन्हें आंतरिक रूप से विकसित एक विशेष सॉफ़्टवेयर द्वारा समर्थित किया गया। उन्होंने कहा, अब हमारे पास प्रत्येक रोगी का डिजिटल मेडिकल रिकॉर्ड है, जो आगे के उपचार में सहायक होगा।

लगभग 180 मरीजों को आंखों की सर्जरी, हृदय संबंधी बीमारियों और अन्य गंभीर विकारों के उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी गई। उनका इलाज फिलहाल भोपाल के पीपुल्स हॉस्पिटल में निःशुल्क चल रहा है। क्लब मरीजों और उनके देखभाल करने वालों के लिए परिवहन, आवास और भोजन का खर्च भी वहन कर रहे हैं।

डीजी सुशील मल्होत्रा राहत कैंप में ब्लड टेस्ट करते हुए।

रोटरी क्लब भोपाल हिल्स ने दो मोबाइल क्लीनिक - नेत्र रोग और दंत चिकित्सा वैन - सेवा में लगाए, जिन्हें इस वर्ष की शुरुआत में जीजी के माध्यम से शुरू किया गया था। क्षेत्र में तंबाकू की अधिक खपत को देखते हुए मुख कैंसर की जांच को विशेष प्राथमिकता दी गई। संदिग्ध कैंसर रोगियों को बिना किसी शुल्क के उन्नत उपचार के लिए भेजा गया।

यह शिविर उमंग सक्सेना के पिछले अनुभव पर आधारित है, जिन्होंने मार्च 2024 में झाबुआ में राहत शिविर का आयोजन किया था, जिससे पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ के सहयोग से 1.5 लाख से अधिक लोगों को लाभ हुआ था। वे झाबुआ रोटरी क्लब के सदस्य हैं।

अपने 27वें वर्ष में प्रवेश कर चुके रोटरी क्लब भोपाल हिल्स ने हाल ही में पीपुल्स हॉस्पिटल में 10 बिस्तरों वाला डायलिसिस केंद्र स्थापित किया है। साथ ही, छह कुर्सियों, एक्स-रे, सीटी-स्कैन और मुख कैंसर का पता लगाने वाले उपकरणों से सुसज्जित एक दंत चिकित्सा क्लिनिक भी शुरू किया है। मोबाइल

कैंप में एक बच्चे का सुनने का टेस्ट करते हुए।

नेत्र और दंत चिकित्सा क्लीनिकों के साथ-साथ ये सभी चिकित्सा सुविधाएं जीजी के माध्यम से समर्थित हैं, जिसमें लगभग 40 प्रतिशत धनराशि क्लब द्वारा स्वयं प्रदान की जाती है।

मित्तल ने पीडीजी विजय पटेल (यूके) और मिशिगन के प्रमुख दानदाताओं डॉ रीता गर्ग और रमेश गर्ग के महत्वपूर्ण सहयोग को स्वीकार किया, जिन्होंने रो ई मंडल 3040 में सात जीजी का समर्थन किया है, जिनमें से चार रोटरी क्लब भोपाल हिल्स के लिए हैं। उन्होंने कहा, उनके बेटे आशीष गर्ग की स्मृति में किया गया उनका कुल योगदान लगभग 100,000 है।■

सेवा सभी बाधाओं को पार करती है

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई के निदेशक एम मुरुगानंदम ने विकलांग सदस्यों से बने एक नए क्लब - रोटरी क्लब सेलम डिवाइन हार्ट्स - के चार्टर प्रस्तुति समारोह में बोलते हुए कहा कि सेवा की भावना जाति, धर्म, भेदभाव, समय और सीमाओं से परे है क्योंकि यह एक नेक और पवित्र कार्य है।

उन्होंने कहा कि रोटरी में शामिल होकर, संस्थापक सदस्यों ने दुनिया को यह दिखा दिया है कि हम भी समाज के लिए प्रभावशाली सेवा कर सकते हैं। मुरुगानंदम ने प्रायोजक क्लब, रोटरी क्लब सेलम जिमखाना की अध्यक्ष ए जी के वासुमति, कामराज पिल्लई, सचिव सुरेश बाबू तथा अन्य सदस्यों के प्रयासों की सराहना की, जिन्होंने रो ई मंडल

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम ने रोटरी क्लब सेलम डिवाइन हार्ट्स के चार्टर अध्यक्ष पी मणिकंडन को सम्मानित किया गया।

2982 में अपनी तरह का पहला क्लब स्थापित करने के लिए एकजुट होकर काम किया।

अपने संबोधन में, डीजी पी. शिवसुंदरम ने कहा कि क्लब का स्थापना समारोह मएबिलिटी बियॉन्ड डिसएबिलिटीफ की थीम को दर्शाता है और यह नया क्लब रोटरी के डीईआई सिद्धांतों का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। पी मणिकंडन को अध्यक्ष, जाकिर हुसैन को सचिव और सी विजयकुमार को कोषाध्यक्ष के रूप में पदस्थापित किया गया। नए क्लब में 16 संस्थापक सदस्य हैं।

इस कार्यक्रम में डीजीएनडी एस सुरेश कुमार, पीडीजी आर गोविन्दराजन, धर्मेश पटेल, डीआरएफसी एम श्रीनिवासन, मंडल सदस्यता अध्यक्ष राजेश, सेवा परियोजना अध्यक्ष गौरी शंकर और जेनेसिस फाउंडेशन के अध्यक्ष कार्लिन एबे (जो एक रोटेरियन हैं) ने भाग लिया। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक हरित अस्पताल के लिए एक विशाल व्यंजन

टीम रोटरी न्यूज़

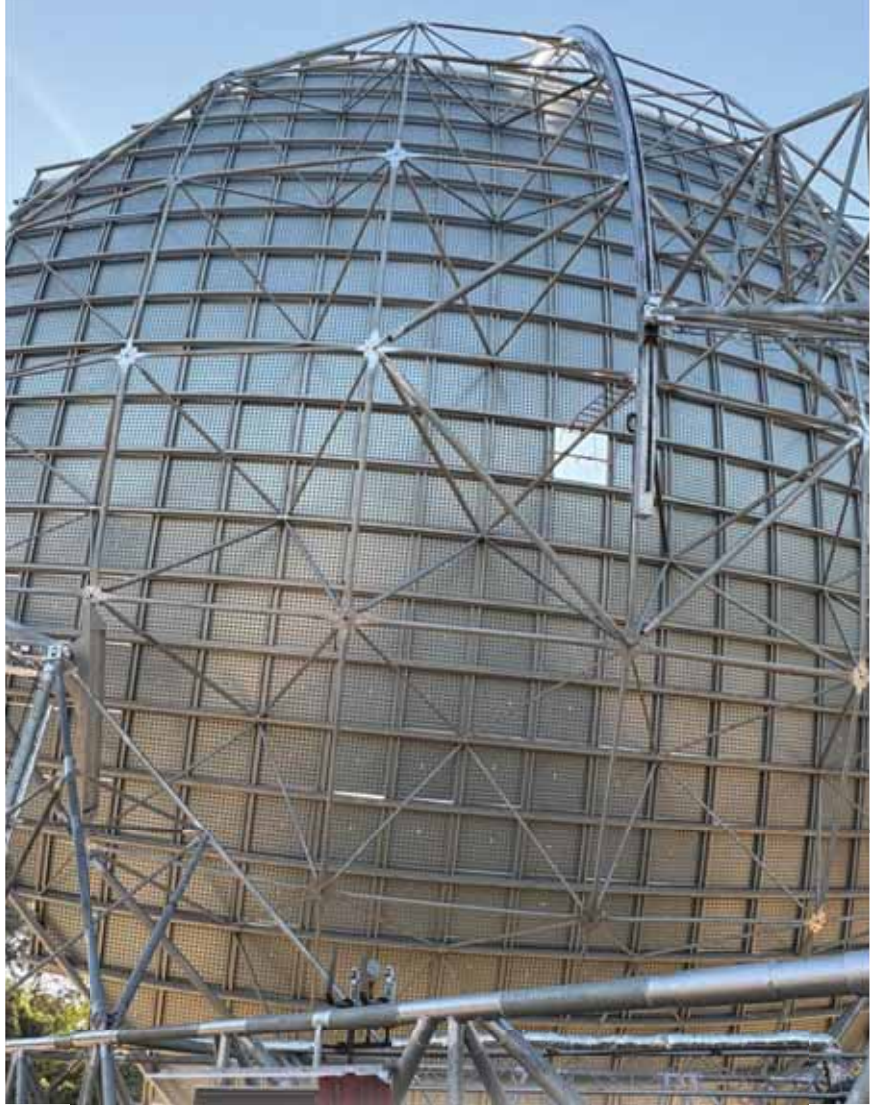

रोटरी क्लब बॉम्बे पियर ने वडोदरा के मुनि सेवा आश्रम में एक बड़ा सोलर कंसंट्रेटर लगाया।

सतत स्वास्थ्य सेवा की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल के तहत, रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे पियर, (रो ई मंडल 3141) ने मुनि सेवा आश्रम में एक विशाल सौर सांद्रक की स्थापना का समर्थन किया है, जिसमें गुजरात के वडोदरा के पास गोरज गांव में कैलाश कैंसर अस्पताल स्थित है।

यह परियोजना दिसंबर 2025 में अपार इंडस्ट्रीज से प्राप्त ₹1.6 करोड़ के सी एस आर इंडिया अनुदान के माध्यम से संभव हो सकी। क्लब के सचिव मुर्तुजा सितारवाला के अनुसार, यह संयंत्र भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा के सबसे उन्नत अनुप्रयोगों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है।

यह उपकरण एक विशाल सौर डिश से युक्त है, जो अस्पताल में 600 टन क्षमता वाली एयर-कंडीशनिंग यूनिट को बिजली प्रदान करने में सक्षम है। सात मंजिला इमारत की ऊंचाई तक फैला और 25 मीटर व्यास वाला यह परवलयिक सौर सांद्रक सैकड़ों सटीक दर्पणों से सुसज्जित है। ये दर्पण सूर्य के प्रकाश को एक ही केंद्र बिंदु पर केंद्रित करते हैं, जिससे केवल सौर

इस डिवाइस में एक बहुत बड़ी सोलर डिश है जो हॉस्पिटल में 600 टन के एयर कंडीशनिंग यूनिट को पावर देती है।

सोलर डिश के सामने रोटरी क्लब बॉम्बे पियर के सदस्य।

ऊर्जा का उपयोग करके लगभग 1,070° तक का अत्यंत उच्च तापमान उत्पन्न होता है।

इस केंद्र बिंदु पर स्थित रिसीवर से गुजरने वाला पानी उच्च दाब वाली भाप में परिवर्तित हो जाता है। इस भाप का उपयोग वाष्प अवशोषण प्रशीतन प्रणाली को चलाने के लिए किया जाता है, जिससे बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा से चलने वाली एयर कंडीशनिंग संभव हो पाती है। सोलर डिश में स्मार्ट सॉफ्टवेयर भी लगा है जो सूर्य की गति पर लगातार नज़र रखता है, जिससे दिन भर अधिकतम दक्षता सुनिश्चित होती है। मूल रूप से ऑस्ट्रेलिया में ऑस्ट्रेलिया नेशनल यूनिवर्सिटी और ऑस्ट्रेलिया स्थित कंपनी सनराइज सीएसपी द्वारा विकसित किया गया यह कंसंट्रेटर अब आश्रम बोर्ड के सदस्य दीपक गाधिया की पहल पर इसका निर्माण भारत में किया गया है।

जब ऑस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि अहमदाबाद से लगभग 100 किमी दूर स्थित ग्रीनफील्ड औद्योगिक स्मार्ट सिटी धोलेरा में प्रस्तावित डीसैलिनेशन (समुद्री जल शोधन) संयंत्र के सिलसिले में आए, तब उन्होंने सौर संकेंद्रक तकनीक को भारत लाने में रुचि व्यक्त की। इसके बाद भारत में एक सहायक कंपनी स्थापित की गई और तीन साल पहले आश्रम में पहला सौर डिश स्थापित किया गया, जैसा कि सितारवाला बताते हैं। इस पहले संयंत्र से उत्पन्न भाप का उपयोग अभी भी खाना पकाने, कपड़े धोने और अन्य दैनिक कार्यों के लिए किया जाता है।

उन्होंने कहा कि ये दो पर्यावरण-अनुकूल सुविधाएं पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता को काफी हद तक कम करेंगी और कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद करेंगी। उन्होंने आगे कहा कि अस्पताल अधिकारियों ने वादा किया है कि हरित उपकरणों के उपयोग से बिजली की लागत में जो महत्वपूर्ण बचत होगी, उसे अस्पताल में बेहतर रोगी देखभाल सुविधाएं शुरू करने के लिए उपयोग किया जाएगा। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

आदिवासी बालिकाओं को गर्भाशय ग्रीवा कैंसर से सुरक्षित रखना

जयश्री

दक्षिण कोलकाता के जोका स्थित पायलान में आवासीय संस्थान अधिगम भूमि स्कूल की लगभग 550 छात्राओं को हाल ही में सर्वाइकल कैंसर के टीके की पहली खुराक दी गई। यह पहल रोटरी क्लब ऑफ सॉल्ट लेक मेट्रोपॉलिटन (रो ई मंडल 3291) के प्रयासों से संभव हुई। कमजोर किशोरियों के स्वास्थ्य की सुरक्षा की दिशा में उठाया गया यह महत्वपूर्ण कदम बंगाल ऑब्स्टेट्रिक्स एंड गायनेकोलॉजी सोसाइटी के सहयोग से संपन्न हुआ।

क्लब की सदस्य डॉ. अरुणा तांतिया ने बताया कि भारत में महिलाओं में कैंसर से होने वाली मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक सर्वाइकल कैंसर है। यह मुख्य रूप से ह्यूमन पैपिलोमावायरस (एचपीवी) के लगातार संक्रमण के कारण होता है। एचपीवी का टीका, जब 9 से 14 वर्ष की आयु के बीच लगाया जाता है, तो इस बीमारी की रोकथाम में सबसे प्रभावी होता है। यह दीर्घकालिक सुरक्षा प्रदान करता है और बाद में सर्वाइकल कैंसर होने के जोखिम को काफी हद तक कम करता है। इसे ध्यान में रखते हुए, क्लब ने इस महत्वपूर्ण आयु वर्ग की लड़कियों को लक्षित करते हुए स्कूल में दो दिवसीय टीकाकरण अभियान का आयोजन किया।

इस प्रकार की पहलों की आवश्यकता पर बोलते हुए, उन्होंने जोका, सुंदरबन, पुरुलिया और बांकुरा जैसे क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की गंभीर कमी की

रोटरी क्लब साल्ट लेक मेट्रोपॉलिटन कोलकाता की सदस्य डॉ अरुणा तांतिया, एक छात्र के साथ, जिसे HPV वैक्सीन का शॉट दिया गया।

सर्वाइकल कैंसर पर अवेरनेस सेशन में शामिल माता-पिता।

ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा, इन क्षेत्रों में पर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है। विशेष रूप से महिलाएं, दैनिक जीवन की भागदौड़ में अपनी स्वास्थ्य समस्याओं को अक्सर नजरअंदाज कर देती हैं।

अधिगम भूमि स्कूल आसपास के गांवों की लगभग 1,200 आदिवासी लड़कियों को आश्रय और शिक्षा प्रदान करता है। गुरुकुल शैली में संचालित यह विद्यालय अंग्रेजी, हिंदी और गणित की औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ बुनाई, मिट्टी के बर्तन बनाने, जैविक खेती और वर्षा जल संचयन का प्रशिक्षण भी देता है। अधिकांश माता-पिता दिहाड़ी मजदूर हैं जो अपने बच्चों के लिए उचित शिक्षा या स्वास्थ्य सेवा का खर्च वहन नहीं कर सकते, इसलिए ऐसे प्रयास अत्यंत आवश्यक हो जाते हैं।

टीका लगाने से पहले, रोटरी टीम ने अभिभावकों के लिए जागरूकता सत्र आयोजित किए, जिन्हें विशेष रूप से कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। अरुणा ने बताया, हमने उन्हें समझाया कि सर्वाइकल कैंसर क्या होता है और टीकाकरण से उनकी बेटियों को कैसे सुरक्षा मिल सकती है। जब वे इसका महत्व समझ गए, तो उन्होंने तुरंत सहमति दे दी। बालिकाओं को टीके की दो खुराकें दी जाएंगी, जिनमें दूसरी खुराक छह महीने बाद दी जाएगी। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया से ₹2,230 प्रति खुराक की रियायती कीमत पर प्राप्त टीकों का पूरा खर्च क्लब द्वारा वहन किया गया है।

यह टीकाकरण अभियान के साथ-साथ क्लब की चल रही वैश्विक अनुदान परियोजना, *मातृ रक्षा,* भी शामिल थी, जो महिलाओं के स्वास्थ्य पर केंद्रित है। वर्ष 2021 में शुरू की गई इस परियोजना में महिलाओं की एनीमिया और मासिक धर्म संबंधी विकारों की जांच की जाती है और किफायती, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पोषण के माध्यम से उपचार को बढ़ावा दिया जाता है। उन्होंने बताया, लंबे समय तक रक्तस्राव और जागरूकता की कमी अक्सर गंभीर एनीमिया का कारण बनती है। कई महिलाएं शर्मिंदगी के कारण चिकित्सा सहायता लेने से हिचकिचाती हैं।

मातृ रक्षा कार्यक्रम के माध्यम से, क्लब बच्चों में थैलेसीमिया की जांच करता है और मासिक धर्म स्वच्छता और स्वस्थ आहार पर जागरूकता सत्र आयोजित करता है। विटामिन सप्लीमेंट और आयरन की गोलियां आमतौर पर तीन महीने के लिए वितरित की जाती हैं। अब तक 87 शिविर आयोजित किए जा चुके हैं, जिनमें से प्रत्येक शिविर में 400 से अधिक महिलाओं को लाभ मिला है। अरुणा ने बताया कि लगभग 70 प्रतिशत प्रतिभागी एनीमिया से पीड़ित पाई गईं, जबकि 18 प्रतिशत महिलाएँ उच्च रक्तचाप से ग्रस्त थीं।

स्विट्जरलैंड के तीन रोटरी क्लबों और मंडल के चार क्लबों के सहयोग से संचालित इस परियोजना का लक्ष्य कम से कम 20,000 महिलाओं तक पहुंचना है। ■

रो ई मंडल 3234 द्वारा एक मिलियन डॉलर की रात

किरण ज़ेहरा

गेट्स फाउंडेशन ने रोटरी फाउंडेशन को अपनी मैचिंग धनराशि हस्तांतरित कर दी है और इस प्रकार रोटरी द्वारा जुटाए गए प्रत्येक डॉलर के बदले दो अतिरिक्त डॉलर देने की अपनी प्रतिबद्धता का सम्मान किया है। इस घोषणा के साथ रो ई मंडल 3234 द्वारा आयोजित बहु-जिला टीआरएफ सम्मेलन, मए मिलियन-डॉलर अपॉर्चुनिटीफ में शाम की शुरुआत हुई। इस अद्यतन को साझा करते हुए टीआरएफ ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक ने वैश्विक स्वास्थ्य में रोटरी की अटूट विश्वसनीयता पर प्रकाश डाला। गेट्स फाउंडेशन के साथ इस साझेदारी का उद्देश्य पोलियो उन्मूलन के लिए प्रतिवर्ष 150 मिलियन डॉलर जुटाना है, जिसमें रोटरी हर साल 50 मिलियन डॉलर का योगदान देगी।

इस वर्ष पोलियो उन्मूलन पर खर्च किए गए 50 मिलियन डॉलर का जिक्र करते हुए नेक ने कहा, इस काम की असली सफलता उन माताओं के भरोसे में है, जो अपने बच्चों को टीकाकरण के लिए लाती हैं, यह जानते हुए कि उनका बच्चा कभी अपंग नहीं होगा। यही भरोसा हमारी सफलता है। यही भरोसा रोटरी है। हमारे साझेदार और लाभार्थी हमें यह कार्य करने के लिए भरोसेमंद मानते हैं।

इस वर्ष पोलियो उन्मूलन पर खर्च किए गए 50 मिलियन डॉलर का जिक्र करते हुए नेक ने कहा, इस काम की असली सफलता उन माताओं के भरोसे में है, जो अपने बच्चों को टीकाकरण के लिए लाती हैं, यह जानते हुए कि उनका बच्चा कभी अपंग नहीं होगा। यही भरोसा हमारी सफलता है। यही भरोसा रोटरी है। हमारे साझेदार और लाभार्थी हमें यह कार्य करने के लिए भरोसेमंद मानते हैं।

ट्रस्टी भरत पांड्या ने कहा कि TRF दुनिया में रोटरी के अच्छे कार्यों को आगे बढ़ाने का सबसे प्रभावी माध्यम बना हुआ है। जंगली पोलियोवायरस अब एक ही जीनोम तक सिमट गया है और कुछ सीमित भौगोलिक क्षेत्रों तक ही रह गया है, लेकिन उन्होंने चेतावनी दी कि लड़ाई अभी बहुत दूर तक बाकी है। यह संघर्ष केवल एक बीमारी के खिलाफ़ नहीं, बल्कि सोच और आतंकवाद के खिलाफ़ भी है, उन्होंने पाकिस्तान में मारे गए 200 से अधिक पोलियो कर्मियों का उल्लेख करते हुए कहा। उन्होंने जोर देकर कहा कि पोलियो फंड का समर्थन करना अत्यंत आवश्यक है।

PRID ए एस वेंकटेश ने दान देने के विषय पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, मैं आपसे दान देने का आग्रह या सलाह नहीं दूंगा। दान फाउंडेशन के कार्यों से प्रेरित होना चाहिए, न कि अज्ञानता से। जब आप दान दें, तो आपको यह पता होना चाहिए कि आप क्यों दान दे रहे हैं। उन्होंने स्कूल प्रोजेक्ट के दौरान एक प्रारंभिक अनुभव को याद किया, जब वे सार्जेंट-एट-आर्म्स थे और डेस्क और बेंच दान किए जा रहे थे। औपचारिकताओं के समाप्त होने के बाद उन्होंने देखा कि कक्षा में एक छोटी लड़की ठहर गई है। जब उन्होंने उसे जलपान के लिए अन्य लोगों के साथ शामिल होने के लिए कहा, तो उसने उत्तर दिया, मैं पहली बार बेंच पर बैठी हूँ। हमें यह सौभाग्य देकर आप ईश्वर के समान हैं।

बाएँ से: DG विनोद सरावगी, PDG अभिरामी रामनाथन, ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक, नल्लम्मई रामनाथन, सुज़ैन नेक, रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, ट्रस्टी भरत पांड्या और ट्रस्टी इलेक्ट ए एस वेंकटेश।

मैं इसका थोड़ा और आनंद लेना चाहती हूँ। उन्होंने कहा कि उस क्षण ने उन्हें व्यक्तिगत योगदान के बिना प्रशंसा स्वीकार करने में असहजता का अनुभव कराया। इसी असहजता ने उन्हें फाउंडेशन का और अधिक गहराई से अध्ययन करने, वैश्विक अनुदानों के बारे में जानने और उसी वर्ष 1,000 डॉलर दान करने के लिए प्रेरित किया। फाउंडेशन क्या करता है, इसे समझें। इसके व्यापक कार्यक्रमों के बारे में जानें। प्रश्न पूछें। हमारे फाउंडेशन के कार्यों पर गर्व करें और इसका हिस्सा बनें। जब आप वास्तव में समझ जाएं, तो अपना दिल खोलें और खुले मन से दान करें।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम ने कहा, यह दान देने का अवसर है और एक बेहतर दुनिया के हमारे सपने को साकार करने का अवसर भी। यह इस बारे में नहीं है कि आपको कितने साल जीने को मिलते हैं, बल्कि इस बारे में है कि आप कैसे जीते हैं। आज यहां मौजूद दानदाता केवल दान ही नहीं दे रहे हैं; वे अपने मूल्यों को जी रहे हैं। उन्होंने ज़ोन 5 के शानदार प्रदर्शन पर प्रकाश डाला, सदस्यता संख्या और रोटरेक्ट विस्तार में इसकी नंबर 1 रैंकिंग का उल्लेख किया और टीआरएफ में 15-20 मिलियन डॉलर के अनुमानित योगदान का जिक्र किया, जो जल्द ही पूरा हो जाएगा।

रो ई मंडल 3234 आईपीडीआरआर शशि कुमार (बाएं से दूसरे) और डीआरआर सतीश कुमार (दाएं) ट्रस्टी चेयर नेक और डीजी सरावगी के साथ।

टीआरएफ के साथ अपने सफर को साझा करते हुए पीडीजी अभिरामी रामनाथन ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि उनका शुरुआती योगदान कर्तव्य की भावना से प्रेरित था, लेकिन बाद में उन्होंने महसूस किया कि रोटरी लेना नहीं, बल्कि देना सिखाती है।

उन्होंने अपने कुल 620 मिलियन डॉलर के योगदान और 50 मिलियन डॉलर के अतिरिक्त योगदान की घोषणा की। जब भी मैंने टीआरएफ को 1 मिलियन डॉलर दिए हैं, मैंने 2 मिलियन डॉलर का प्रभाव वापस देखा है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात है नेक दिल से देना।

2026-29 के लिए RRFC PDG जे श्रीधर ने रो ई मंडल 3234 के रोट्रेक्टर्स द्वारा दिए गए 66,784 के योगदान पर ज़ोर दिया।। उन्होंने कहा, हमें रोटरेक्टर्स को दान देने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि वे फाउंडेशन के महत्व को सही मायने में समझ सकें।

पीडीजी एन सरवनन ने घोषणा की कि रो ई मंडल 3231 और रो ई मंडल 3234 मिलकर टीआरएफ में 1.2 मिलियन डॉलर का योगदान देंगे। रो ई मंडल 3234 के एकेएस सदस्यों, प्रमुख दानदाताओं, बंदोबस्ती दानदाताओं और सी एस आर दानदाताओं को सम्मानित किया गया। डीजी विनोद सरावगी 126,000 डॉलर के योगदान के साथ ए के एस चेयर सर्कल में शामिल हुए, जबकि पीडीजी रवि रमन ने वैश्विक अनुदान के लिए 100,000 डॉलर का चेक प्रस्तुत किया।

डीजी वी सुरेश (रो ई मंडल 3231) ने रो ई निदेशक मुरुगानंदम से टीआरएफ बैठक का निमंत्रण मिलने के एक दिन के भीतर सामूहिक रूप से 30,000 डॉलर जुटाने के लिए अपने क्लब के अध्यक्षों को धन्यवाद दिया। ■

आपके गवर्नर्स से मिलिए

किरण ज़ेहरा

उद्देश्यपूर्ण रोटरी का विकास

वह वर्ष 2000 में अपने दिवंगत पिता वीरेंद्र माकोल, जो रोटरी क्लब गोधरा के सदस्य थे, से प्रेरित होकर रोटरी से जुड़े। 2011 में मुंबई आने के बाद, हर्ष माकोल रोटरी क्लब पाम बीच के संस्थापक सदस्य बने।

वह अपने रोटरी क्षण को याद करते हैं जब एक पोलियो सुधारात्मक सर्जरी शिविर में स्ट्रेचर की कमी के कारण उन्हें एक बच्चे को ऑपरेशन थिएटर से वार्ड तक गोद में उठाकर ले जाना पड़ा था। बच्चे की माँ की कृतज्ञता ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया, और सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ किया।

फॉल इन लव विद रोटरी नामक एक वेलेंटाइन थीम वाली सार्वजनिक छवि पहल के माध्यम से, सदस्यों को एक मनोरंजक संध्या में संभावित रोटेरियनों को आमंत्रित करने के लिए प्रेरित किया गया। मंडल ने एक विशेष रोटरी पिन निकालने के साथ-साथ साझेदार खुदरा व्यापारियों के माध्यम से एक लॉयल्टी प्रोग्राम भी शुरू किया है।

400 सदस्य जोड़ने और काम समय में 300 के निकल जाने के बाद, उन्होंने रणनीति बदलकर संख्या से अधिक गुणवत्ता को मज़बूत करने, निष्क्रिय क्लबों को बंद करने और सार्थक सहभागिता को सुदृढ़ करने पर ध्यान केंद्रित किया।

मंडल ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों और विधवाओं को पिंक रिक्शा वितरित करने तथा आदिवासी छात्रों को साइकिलें देने जैसी सीएसआर पहलें शुरू की हैं।

संस्थान के मोर्चे पर, मंडल ने 1 मिलियन डॉलर का लक्ष्य रखा है, जिसमें से 800,000 डॉलर पहले ही जुटाए जा चुके हैं। वह क्लबों को मंडल अनुदानों के बजाय वैश्विक अनुदानों को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। इस वर्ष 10 वैश्विक अनुदान स्वीकृत हुए हैं और 20 की योजना है, जिनमें 34 क्लब शामिल हैं।

मंडल ने 10 नए इंटरेक्ट क्लब और सात नए रोटरेक्ट क्लब शुरू किए हैं। इस वर्ष रोटरी यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम के अंतर्गत, सात भारतीय छात्र विदेश जाएंगे और सात अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की मेज़बानी भारत में की जाएगी।

हर्ष वीरेंद्र माकोल
कॉरपोरेट रियल एस्टेट
रोटरी क्लब पाम बीच, रो ई मंडल 3142

अमित जायसवाल
निर्यात और आयात
रोटरी क्लब धमतरी
रो ई मंडल 3261

मैत्री को सुदृढ़ करना, सेवा का विस्तार

वह 2010-11 में अपने मित्र रोटेरियन दिलीप मेहता के कहने पर रोटरी से जुड़े। पूर्व इंटरेक्टर और रोटरेक्टर तथा एक रोटेरियन के पुत्र होने के कारण, अमित जायसवाल बचपन से ही रोटरी से जुड़े रहे। वह कहते हैं कि मैत्री और सार्थक सेवा ने उन्हें सबसे अधिक आकर्षित किया।

एक सेवा यात्रा को याद करते हुए जहां रोटेरियन एक गाँव के स्कूल में जूते, यूनिफॉर्म और पुस्तकें वितरित कर रहे थे, उन्होंने बताया कि टीम ने एक साधारण कार्यक्रम की अपेक्षा की थी। लेकिन उनका स्वागत एक उत्सव की तरह हुआ, जिसमें संगीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। यह आयोजन स्कूल की प्राचार्य सुमिता साहू द्वारा किया गया था, जो जयपुर फुट की लाभार्थी थीं। उन्होंने पूरे गाँव को रोटेरियनों को धन्यवाद देने के लिए एकजुट किया था। इस अनुभव ने मेरे विश्वास को और मज़बूत किया कि रोटरी की सेवा वास्तविक और स्थायी प्रभाव डालती है।

मंडल में वर्तमान सदस्य संख्या 3,474 है। 100 के लक्ष्य में से अब तक 80 नए सदस्य जोड़े गए हैं। इस वर्ष, 28 नए रोटरेक्ट क्लब और 50 नए इंटरेक्ट क्लब शुरू किए गए हैं। स्वयं एक संस्थापक इंटरेक्ट और रोटरेक्ट अध्यक्ष रह चुके जायसवाल युवाओं के विकास पर विशेष ध्यान दे रहे हैं, क्योंकि रोटरी का भविष्य युवा सदस्यों पर निर्भर है।

इस वर्ष के प्रमुख लक्ष्यों में 50,000 पेड़ लगाना, 5,000 यूनिट रक्त संग्रहित करना और प्रत्येक क्लब के लिए साप्ताहिक सेवा लक्ष्य निर्धारित करना शामिल है। मंडल डीईआई टीम द्वारा जागरूकता फैलाने और समावेशी क्लब वातावरण को प्रोत्साहित करने के लिए सेमिनार आयोजित किए जा रहे हैं।

आवास से लेकर स्वास्थ्य सेवा तक

1996 से रोटेरियन और रोटरी क्लब पुणे वेस्ट के संस्थापक सदस्य के पुत्र होने के नाते, मराठे बचपन से ही पर्यावरण और सामुदायिक परियोजनाओं में सक्रिय रहे हैं।

रो ई मंडल 3131 में 430 सदस्यों की शुद्ध सदस्यता वृद्धि दर्ज की गई है। मराठे तेज़ या कृत्रिम वृद्धि के बजाय सदस्यता बनाए रखने और टिकाऊ विस्तार पर जोर देते हैं। वह क्लबों को एक समय में एक या दो गुणवत्तापूर्ण सदस्यों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। क्लब अध्यक्षों के लिए उनका संदेश है धीरे चलें, मज़बूती से आगे बढ़े।

विविधता, समानता और समावेशन (डीईआई) नीति के अनुरूप, मंडल ने ट्रांसजेंडर सदस्यों के लिए एक सैटेलाइट क्लब शुरू किया है और समावेशी नीतियाँ लागू करने वाली कॉरपोरेट संस्थाओं को सम्मानित करने के लिए डीईआई अवॉर्ड की स्थापना की है।

इस वर्ष मंडल का कुल योगदान लक्ष्य 4 मिलियन डॉलर का है। एक प्रमुख सीएसआर पहल *प्रोजेक्ट आशियाना,* प्रधान मंत्री आवास योजना के तहत दी जाने वाली आवास सहायता को पूरक बनाती है। जहाँ लाभार्थियों को सरकारी योजना के अंतर्गत ₹1.25 लाख मिलते हैं, वहीं रोटेरियन और सीएसआर साझेदार अतिरिक्त ₹1.5 लाख देकर घरों के निर्माण को पूरा करने में मदद करते हैं।

मंडल के इंटरेक्ट क्लब सक्रिय हैं और सार्थक परियोजनाओं में संलिप्त हैं। जहाँ शहरी रोटरेक्ट क्लब अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, वहीं ग्रामीण रोटरेक्ट क्लबों को सदस्यता शुल्क के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिससे गाँवों का प्रतिनिधित्व घटा है। इसे देखते हुए मंडल ग्रामीण क्षेत्रों में रोटरी कम्युनिटी कॉर्प्स (आरसीसी) को मज़बूत करने पर ध्यान दे रहा है।

संतोष मधुकर मराठे
कंसल्टेंसी-एंटरप्राइज आईटी
रोटरी क्लब पूना वेस्ट, रो ई मंडल 3131

जहाँ शहरी रोटरेक्ट क्लब अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, वहीं ग्रामीण रोटरेक्ट क्लबों को सदस्यता शुल्क के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिससे गाँवों का प्रतिनिधित्व घटा है।

डीजी संतोष मधुकर
रो ई मंडल 3131

अमर सिंह बुनेट
इलेक्ट्रॉनिक्स ऑटोमेशन
रोटरी क्लब भरूच, रो ई मंडल 3060

सदस्यता पर ध्यान

अमर सिंह बुनेट 2006 में अपने गृह क्लब रोटरी कलब भरूच की सेवा संस्कृति से प्रेरित होकर रोटरी से जुड़े। क्लब की प्रमुख परियोजना एम आई पटेल रोटरी यूथ सेंटर की नियमित यात्राओं ने उन्हें रोटरी के सामुदायिक प्रभाव से परिचित कराया और संगठन का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया।

सदस्यता वृद्धि उनकी प्रमुख प्राथमिकता है और वह क्लबों को न्यूनतम 30 सदस्यों की संख्या बनाए रखने और *rotary.org* पर नए सदस्यों का समय पर पंजीकरण सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। मेरा लक्ष्य 10-15 प्रतिशत वार्षिक शुद्ध वृद्धि का है और मैं क्लब अध्यक्षों को अधिक महिलाओं एवं युवाओं को शामिल करने तथा नए क्लब प्रायोजित करने के लिए प्रेरित करने की आशा कर रहा हूँ।

बुनेट आधिकारिक यात्राओं के दौरान व्यक्तिगत संवाद पर ज़ोर देते हैं - सदस्यों की चिंताओं को सुनना और समस्याओं का शीघ्र समाधान करना, ताकि पूरे मंडल में संबंध मजबूत रहे और मनोबल ऊंचा रह सकें। मंडल लैंगिक, आयु और व्यवसायिक संतुलन के साथ नेतृत्व के अवसरों को बढ़ावा देकर विविधता, समानता और समावेशन के प्रति भी प्रतिबद्ध है।

इस वर्ष की प्रमुख परियोजनाओं में शोकाकुल परिवारों की गरिमा सुनिश्चित करने के लिए डेड बॉडी फ्रीजर इकाइयां दान करना और चयनित अस्पतालों में डायलिसिस मशीनें स्थापित करना शामिल है, ताकि उपचार सुलभ और किफायती हो सके। रोटरेक्ट और इंटरेक्ट को संयुक्त परियोजनाओं, मार्गदर्शन और नेतृत्व विकास कार्यक्रमों के माध्यम से मज़बूत किया जा रहा है, ताकि एक सशक्त युवा श्रृंखला तैयार की जा सके।

वार्षिक दान के लिए योगदान लगातार प्रगति कर रहा है, और कई प्रभावशाली अनुदान पहले ही पूरे किए जा चुके हैं। हालांकि कुछ छोटी चुनौतियाँ हैं, लेकिन टीआरएफ के प्रति निरंतर जागरूकता सदस्यों को प्रेरित और अपने योगदान लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध बनाए रखती है।

Membership & TRF contribution summary

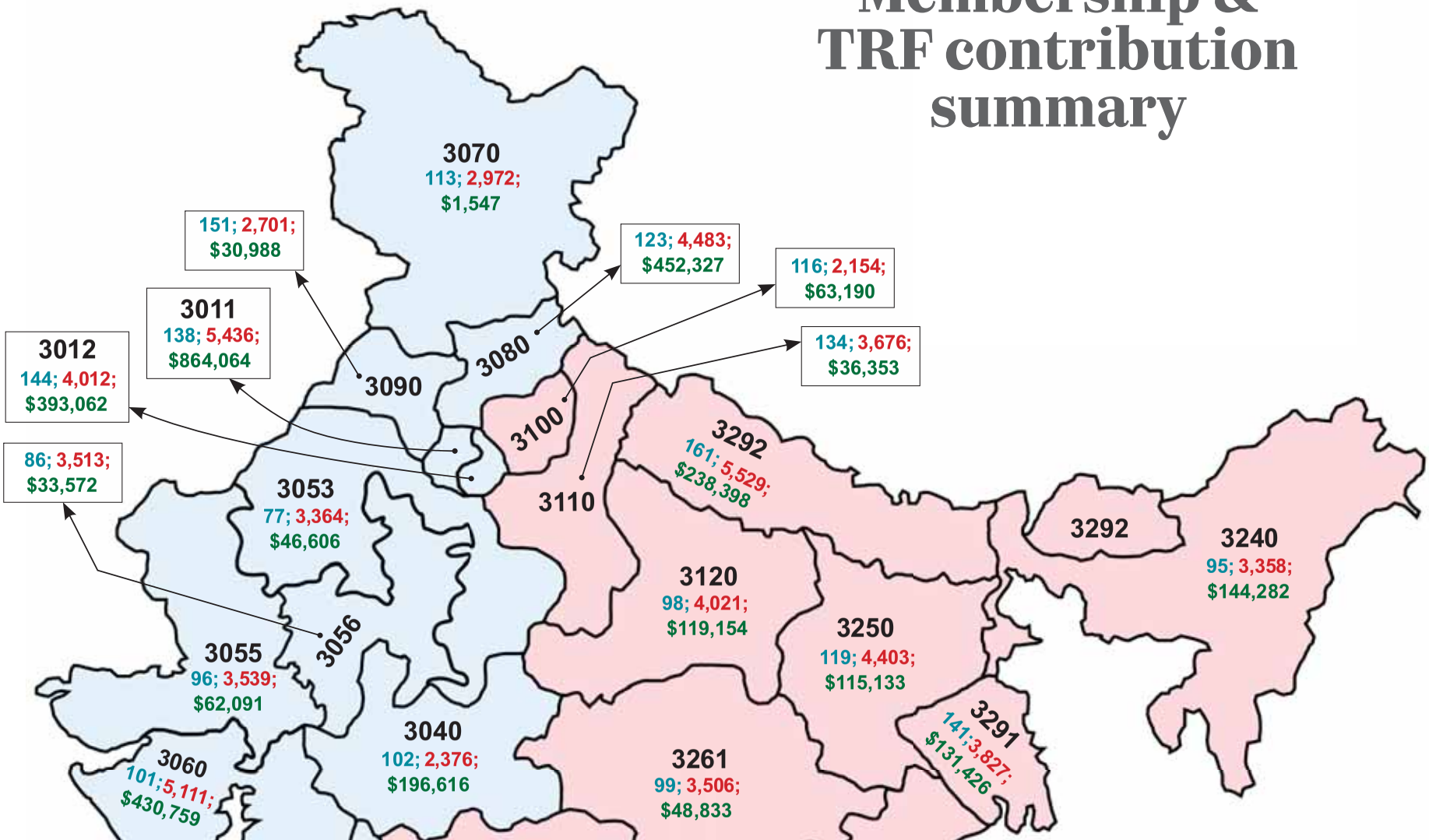

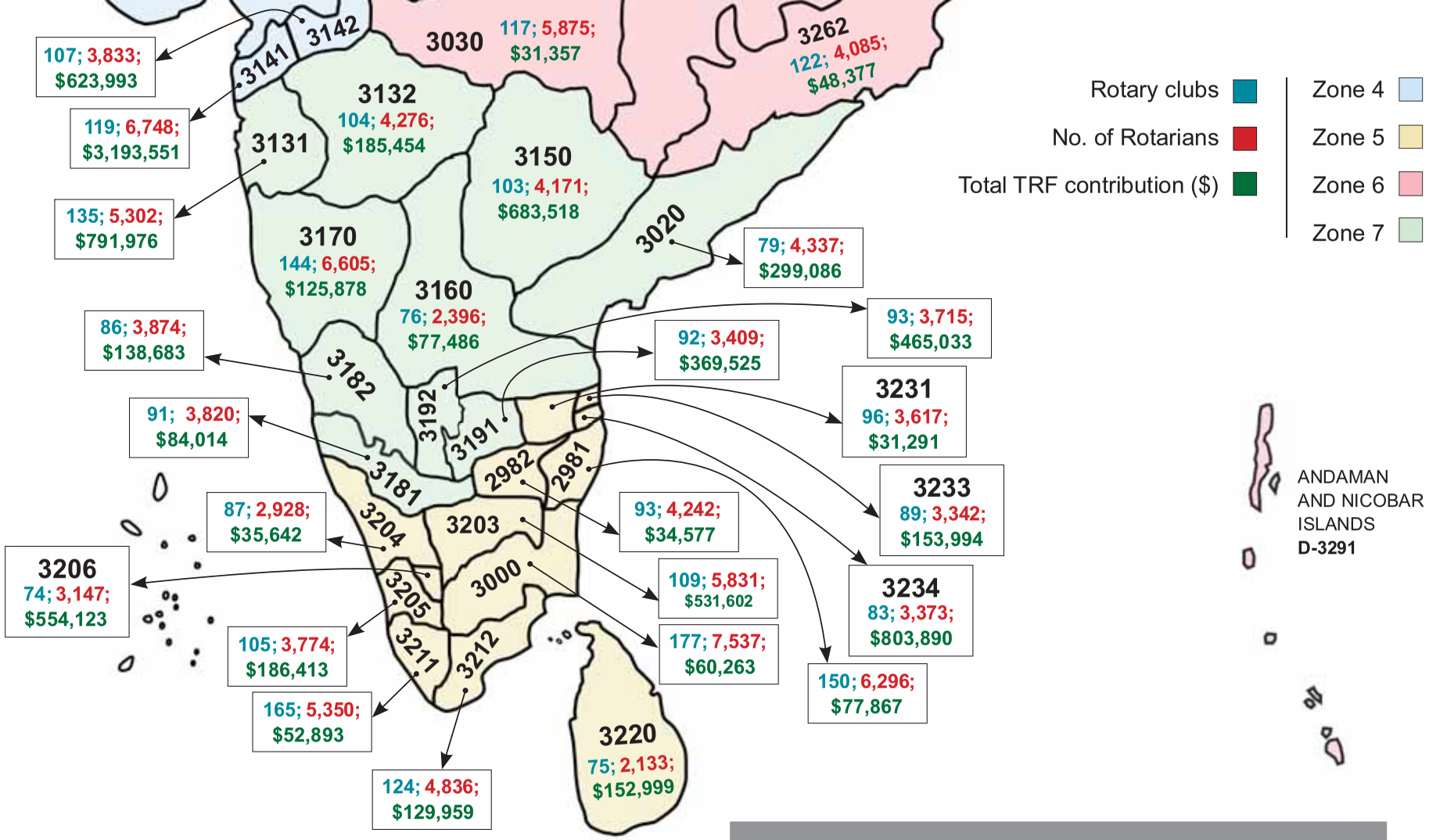

*Membership figures as on February 1, 2026.
*TRF contribution figures as on January 31, 2026.

Rotary worldwide

Rotary clubs	36,472	Rotary members	1,157,397
Rotaract clubs	9,378	Rotaract members	144,104
Interact clubs	19,130	Interact members	440,151
RCCs	14,309	As on February 20, 2026	

बढ़ता कचरा संकट: समाधान का हिस्सा बनें

प्रीति मेहरा

देश में अधिक से अधिक कचरा एकत्र करने और उसके उपचार को गंभीरता से लेने के लिए सरकार द्वारा हाल ही में नए नियम बनाए गए हैं। अब कचरा उत्पन्न करने वालों के साथ-साथ नागरिकों को भी जिम्मेदारी से काम करना होगा।

देश को अधिक हरित और कचरा-मुक्त बनाने की दिशा में केंद्र सरकार ने हाल ही में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नए और अधिक कड़े नियमों की घोषणा की है। सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट (एसडब्ल्यूएम) नियम, 2026 के रूप में अधिसूचित ये नियम 1 अप्रैल से लागू होंगे और शहरी स्थानीय निकायों पर बोझ कम करेंगे तथा अपशिष्ट प्रबंधन को स्रोत पर ही बढ़ावा देंगे, जिसमें प्रत्येक बड़े अपशिष्ट उत्पादक की जिम्मेदारी होगी।

बल्क जेनरेटर कौन है? सरल शब्दों में कहें तो, सरकार ने अपनी परिभाषा में हमारी कॉलोनी, हमारा समाज, कार्यस्थल, विश्वविद्यालय, स्कूल, संस्थान, कोई भी सरकारी इमारत, निजी कार्यालय या हमारी पंचायत को शामिल किया है। कचरे के बड़े पैमाने पर वितरण में योगदान देने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी होगी। इसलिए, यदि आप अपने ऑफिस में चिप्स का पैकेट या पानी की बोतल कूड़ेदान में डालने के बजाय कहीं भी फेंक देते हैं, या घर पर कचरे को अलग-अलग (गीला-सूखा) नहीं करते हैं, तो आपके ऑफिस का प्रशासन या आपकी हाउसिंग सोसाइटी आपके इस व्यवहार के लिए जिम्मेदार हो सकती है। वे बदले में आपके इस पर्यावरण विरोधी रवैये के लिए आपके खिलाफ कार्रवाई कर सकते हैं और नियमों का पालन न करने वाले निवासियों पर कड़ी नजर रख सकते हैं।

हालांकि, अच्छी बात यह है कि इन दिशानिर्देशों का पालन करना उतना कठिन नहीं है जितना लगता है। इनका पालन करना काफी सरल है और इसके लिए केवल अनुशासन की आवश्यकता है। याद रखें, अब से स्रोत पर ही कचरे को अलग करने के चार अनिवार्य चरण होंगे, न कि मौजूदा दो। अपने घर में पहले से मौजूद हरे और लाल कूड़ेदानों के अलावा दो और कूड़ेदान जोड़ने के लिए तैयार रहें। साथ ही, अपने परिवार के सदस्यों और घरेलू कर्मचारियों को भी बताएं कि कौन सा कूड़ा कहाँ डालना है।

पृथक्करण के लिए चार धाराओं को अब निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:

गीला कचरा: यह हरे रंग का जाना-पहचाना डिब्बा है, जिसका उपयोग जैविक रूप से विघटित होने वाले कचरे के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसमें रसोई

अब से बल्क जेनरेटर कचरा इकट्ठा करने, उसे ट्रांसपोर्ट करने और यह पक्का करने के लिए ज़िम्मेदार होंगे कि उसे सस्टेनेबल, पर्यावरण के अनुकूल तरीके से रीसायकल या प्रोसेस किया जाए।

का हर तरह का कचरा शामिल है - जैसे सब्जियों और फलों के छिलके, चाय की पत्तियां, कॉफी का बचा हुआ भाग, भोजन के बचे हुए टुकड़े तथा बगीचे से निकलने वाला कचरा।

सूखा कचरा: इसमें बेकार कागज, प्लास्टिक, धातु, कांच, लकड़ी, रबर और पुनर्चक्रण योग्य सभी चीजें शामिल हैं, जिन्हें नीले रंग के डिब्बे में डाला जाना चाहिए।

सैनिटरी अपशिष्ट: यह डायपर, सैनिटरी पैड, कंडोम आदि जैसे स्वच्छता संबंधी अपशिष्ट को लाल रंग के कूड़ेदान में अलग से डाला जाना चाहिए।

विशेष सावधानी वाला कचरा: यह काले रंग का डिब्बा है जिसमें सभी प्रकार के घरेलू अपशिष्ट पदार्थ डाले जाते हैं जो खतरनाक होते हैं। इनमें पेंट के डिब्बे, बल्ब, ट्यूबलाइट, तार, दवाइयां और इस्तेमाल की हुई बैटरियां शामिल हैं।

जब अप्रैल से नए नियम लागू होंगे, तब ङ्कबल्क जनरेटरफ पर बड़ी ज़िम्मेदारी आएगी। प्रक्रिया को सुचारु और प्रभावी बनाने के लिए वे यह जवाबदेही व्यक्तिगत नागरिकों तक पहुँचाएँगे।

अब से 'बल्क जनरेटर' कचरे के संग्रहण, परिवहन और उसके पुनर्चक्रण या पर्यावरण-अनुकूल तरीके से प्रसंस्करण के लिए पूर्णतः जिम्मेदार होंगे। उन्हें अपने गीले कचरे का निपटान संग्रह स्थल पर ही करना होगा; और यदि स्थल पर प्रसंस्करण संभव न हो, तो 'बल्क वेस्ट जनरेटर रिस्पॉन्सिबिलिटी सर्टिफिकेट' प्राप्त करना अनिवार्य होगा। उल्लंघन होने पर, मप्रदूषणकारी भुगतानफ सिद्धांत के अनुसार जुर्माने के रूप में पर्यावरण क्षतिपूर्ति लगाई जाएगी।

नियमों के सख्त होने से छुट्टियों के दौरान आपको अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ सकता है। अगर आप किसी पहाड़ी इलाके या द्वीप पर छुट्टियां मनाने जाते हैं, जो पर्यावरण की दृष्टि से बेहद संवेदनशील क्षेत्र हैं, तो आपको ठोस कचरे के निपटान और प्रबंधन के लिए स्थानीय अधिकारियों को शुल्क देना पड़ सकता है। भीड़भाड़ को रोकने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि पर्यटक कूड़ा-कचरा न फैलाएं, वे पर्यटन के चरम मौसम में प्रतिदिन आने वाले पर्यटकों की संख्या सीमित कर सकते हैं।

हमारी पहाड़ियों और समुद्र तटों पर एकल उपयोग वाले प्लास्टिक और पॉलिथीन बैग भरे पड़े हैं, इसलिए मेरा मानना है कि इस कानून को अत्यंत गंभीरता से लागू करने की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर, नए नियमों का मुख्य ध्यान कचरे की रोकथाम और उसकी मात्रा में कमी पर है, जिसके बाद उसका पुन: उपयोग, पुनर्चक्रण, पुनर्प्राप्ति और निपटान पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

आशा है कि भविष्य में लैंडफिल स्थलों पर केवल वही कचरा भेजा जाएगा जो न तो पुनर्चक्रण योग्य हो और न ही जिससे ऊर्जा की पुनर्प्राप्ति संभव हो। बड़े पैमाने पर कचरा उत्पन्न करने वालों को रोकने के लिए एक प्रभावी उपाय यह हो सकता है कि बिना पृथक्करण के कचरे को लैंडफिल में भेजने पर उन पर भारी शुल्क या दंड लगाया जाए।

अविभाजित कचरे पर लगाया जाने वाला शुल्क, उसे अलग करने, परिवहन करने और संसाधित करने की लागत से अधिक होगा। इसलिए, उदाहरण के तौर पर, यदि कोई निवासी कल्याण संघ नियमों का पालन नहीं करता है, तो उस पर खर्च होने वाला धन अत्यधिक होगा, और इसके परिणामस्वरूप हम सभी निवासियों का रखरखाव बिल बढ़ जाएगा।

ऑफिशियल अनुमान बताते हैं कि भारत में हर दिन लगभग 170,000 टन म्युनिसिपल सॉलिड वेस्ट निकलता है। इसका मतलब है कि हर साल लगभग 62 मिलियन टन।

कचरे के प्रबंधन को पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए सख्त नियम बनाए जा सकते हैं। विश्वसनीय डेटा निर्माण और ट्रैकिंग सुनिश्चित करने के प्रावधानों के साथ वास्तविक समय में डेटा की निगरानी के लिए एक नया, केंद्रीकृत पोर्टल स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। हालांकि, अगर हम नियमों का पालन करें और बड़े पैमाने पर कचरा उत्पन्न करने वाले अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से लें, तो हम इस समस्या को कम कर सकते हैं।

हम जिस समस्या का सामना कर रहे हैं, उसकी गंभीरता को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया जा सकता। आधिकारिक अनुमानों के अनुसार, भारत में प्रतिदिन लगभग 170,000 टन नगरपालिका ठोस कचरा उत्पन्न होता है। यह वार्षिक रूप से लगभग 62 मिलियन टन के बराबर है। दुर्भाग्यवश, इसका केवल लगभग आधा ही वैज्ञानिक तरीके से प्रसंस्कृत किया जाता है। अनुमानों के अनुसार, अकेले शहरी भारत में ही 2030 तक लगभग 165 मिलियन टन और 2050 तक 436 मिलियन टन कचरा प्रतिवर्ष उत्पन्न हो सकता है।

नगरपालिका के ठोस कचरे के पृथक्करण, पुनर्चक्रण, उपचार, ऊर्जा पुनर्प्राप्ति और पर्यावरण के अनुकूल निपटान के लिए एक बाध्यकारी वैधानिक ढांचा प्रदान करना बहुत पहले ही आवश्यक हो गया था। इसलिए, कृपया दुनिया को अधिक हरित और स्वच्छ बनाने में अपना योगदान दें!

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

रो ई मंडल **3000**

रोटरी क्लब चिन्नमनूर

क्लब के सदस्यों द्वारा चलाए जा रहे खाद्य वितरण अभियान के तहत दक्षिणी तमिलनाडु के थेनी मंडल के चिन्नमनूर स्थित सरकारी अस्पताल में टीबी रोगियों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया गया।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल **3053**

रोटरी क्लब भिवाड़ी

इस वर्ष 50 मैमोग्राफी शिविर आयोजित करने के लक्ष्य के साथ, क्लब ने 22 कैंसर स्क्रीनिंग शिविर आयोजित किए हैं। अब तक आयोजित चिकित्सा शिविरों में 7 प्रतिशत की पहचान दर दर्ज की गई है, जो समय पर उपचार के लिए प्रारंभिक जांच के महत्व को दर्शाती है।

रो ई मंडल **3056**

रोटरी क्लब श्री माधोपुर सनराइज़

75वें मोतियाबिंद जांच शिविर में 86 मरीजों की जांच की गई, जिनमें से 40 को जयपुर के शंकर नेत्र अस्पताल में सर्जरी के लिए चुना गया। भोजन, आवास और परिवहन की व्यवस्था क्लब द्वारा की गई। अब तक क्लब ने मंडल अंधत्व निवारण समिति के अनुदान से 2,249 सर्जरी की हैं।

रो ई मंडल 3090

रोटरी क्लब समाना

साहिजपुर खुर्द के सरकारी प्राथमिक विद्यालय में बच्चों को कुर्सियाँ, चटाइयाँ और गद्दे वितरित करने के कार्यक्रम में ब्लॉक शिक्षा अधिकारी गुरप्रीत गोल्डी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। क्लब अध्यक्ष अरुण बंसल ने सुमित गोयल द्वारा प्रायोजित इस पहल का नेतृत्व किया।

रो ई मंडल 3012

रोटरी क्लब दिल्ली शाहदरा

दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने जनकपुरी स्थित सर्वोदय कन्या विद्यालय में निपुण शाला का उद्घाटन किया। यह केंद्र मंत्रालय की निपुण संकल्प योजना के तहत छात्रों की बुनियादी साक्षरता और गणित कौशल को बढ़ावा देगा।

रो ई मंडल 3132

रोटरी क्लब ई-क्लब एम्पावरिंग यूथ

डीजी सुधीर लातुरे ने फोर्कास इम्पेक्स द्वारा सी एस आर फंडिंग के माध्यम से सखाराम मेहत्रे प्राथमिक विद्यालय और केशवराव गदिलकर हाई स्कूल में दो नई कक्षाओं (₹7 लाख) का उद्घाटन किया। क्लब ने इन विद्यालयों में इंटरेक्ट क्लब भी स्थापित किए।

रो ई मंडल 3120

रोटरी क्लब इलाहाबाद साउथ

विश्व दिव्यांग दिवस (3 दिसंबर) के अवसर पर दिव्यांग बच्चों के लिए खेलकूद, चित्रकला प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों को पुरस्कार, उपहार और खाद्य पैकेट वितरित की गई।

हमारी पसंदीदा ताइपे स्मृतिचिह्न

इन स्मृति-चिह्नों को अपने सूटकेस में रख लें।

फोटो इलस्ट्रेशनः मैडिसन विसे

चित्र: गेटी इमेजेज़, मोनिका एंग, रॉबिक्सल के सौजन्य से

जब आप जून में रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए ताइपे जाएंगे, तो आपको शहर की जीवंत पुरानी गलियों की सैर करने, हजारों वर्षों पुरानी चीनी कला और कलाकृतियों की प्रशंसा करने, तथा रात्रि बाजारों में तरह-तरह के व्यंजनों का स्वाद लेने का अवसर मिलेगा। लेकिन इन अनुभवों को अपने सूटकेस में समेटकर घर ले जाना मुश्किल हो सकता है। सौभाग्य से, यह द्वीप अनेक प्रकार के स्मृति-चिह्न भी तैयार करता है, जो आपको अपनी यात्रा की याद दिलाते रहेंगे। यदि आपने अभी तक पंजीकरण नहीं कराया है, तो आप 31 मार्च तक प्री-रजिस्ट्रेशन पर छूट का लाभ उठा सकते हैं। फिर ताइवान से यादगार चीजें खरीदने की योजना बनाने के लिए हमारी शॉपिंग गाइड देखें।

- मोनिका एंग

1 चाय

ताइपे में सैकड़ों चायघर, चाय की दुकानें और बाज़ार विक्रेता मौजूद हैं जो स्थानीय रूप से उगाई गई ऊलोंग चाय की कई किस्में पेश करते हैं, जिनमें हल्की, मलाईदार पहाड़ी चाय या शहद जैसी मीठी ओरिएंटल ब्यूटी शामिल हैं। दुकान मालिक अक्सर संभावित खरीदारों को खरीदारी से पहले एक मनमोहक चाय समारोह के हिस्से के रूप में चाय का स्वाद चखने का अवसर खुशी-खुशी देते हैं।

2 अनानास केक

ये सर्वव्यापी पेस्ट्री मीठी और खट्टी अनानास जेली से भरी होती हैं और शॉर्टब्रेड जैसे आटे में लिपटी होती हैं। इन्हें व्यक्तिगत रूप से परोसा जाता है, जिससे ये घर वालों के साथ साझा करने के लिए एक आदर्श स्मृति चिन्ह बन जाती हैं। कई एशियाई उपहारों की तरह, ये केक सफलता और सौभाग्य का प्रतीक हैं; होक्कियन बोली में, अनानास *(ओंग लाई)* शब्द का उच्चारण समृद्धि का आगमन जैसा होता है।

3 कुआई कुआई स्नैक्स

नारियल के स्वाद वाले ये कुरकुरे पफ्स हल्का स्वाद तो देते हैं, लेकिन आपकी तकनीक की सुरक्षा का पक्का वादा करते हैं - या कम से कम कुआई कुआई के पीछे यही अंधविश्वास है, जिसका उच्चारण अच्छा व्यवहार करो या सभ्य रहो जैसा लगता है। रोटरी क्लब ऑफ ताइपे प्रॉस्पेरिटी के सदस्य माइकल तुंग-माओ त्सेंग कहते हैं, मुझे नहीं पता कि यह सच में काम करता है या नहीं, लेकिन जब मैं ताइपे में आईबीएम में था, तो हमारे तकनीकी विभाग ने मेनफ्रेम के बगल में एक बैग रखा हुआ था। ये आपको ज़्यादातर 7-इलेवन और फैमिलीमार्ट में मिल जाएंगे।

4 नवीनतम तकनीक

हालाँकि आप शायद ताइवान की मशहूर प्रोसेसिंग चिप्स घर नहीं ले जा पाएँगे, लेकिन आप फ़ोन, ऑडियो और वीडियो बनाने के लिए ज़रूरी एक्सेसरीज़ समेत कुछ सबसे नए और ट्रेंडी टेक प्रोडक्ट्स देख सकते हैं। एक जगह जहाँ आप देख सकते हैं: ग्वांगहुआ डिजिटल प्लाज़ा, जिसमें छह मंज़िला इलेक्ट्रॉनिक्स का पूरा कारोबार है।

5 जेड

आपको इस बहुमूल्य खनिज से बनी कला कृतियाँ और आभूषण पूरे ताइवान में मिलेंगे, जिनमें नेशनल पैलेस म्यूज़ियम भी शामिल है। वहाँ संग्रहालय की लगभग 7,00,000 वस्तुओं में से एक हरी और सफेद जेडाइट पत्थर से तराशी गई चीनी पत्तागोभी को देखने के लिए आगंतुकों की भीड़ उमड़ती है। कुछ लोग मानते हैं कि इस पत्थर में उपचार और सुरक्षा देने वाले गुण होते हैं। अपने लिए खास खज़ाने तलाशने के लिए दाफआन मंडल में लगने वाले समाहांत जियानगुओ हॉलिडे जेड मार्केट जरूर जाएँ।

6 सूखी जड़ी-बूटियाँ, फल और मिठाई

ताइपे में जड़ी-बूटियों से बने औषधियों के मिश्रण, सूखे मेवे और नट्स बेचने वाली कई दुकानें हैं, जिनमें से कुछ आप घर ले जा सकते हैं। दादोचेंग इलाके में स्थित ताइपे की पुरानी सड़कों में से एक दिहुआ स्ट्रीट पर घूमें, जहाँ आपको सूखे सामान बेचने वालों की भरमार मिलेगी।

7 गाजी मार्केट के टोट बैग

लाल, नीले और हरे रंग में मिलने वाले ये लोकप्रिय मेश शॉपिंग बैग किफायती उपहार हैं और कई साइज़ में उपलब्ध हैं, जिनमें पानी की बोतलों के लिए भी एक साइज़ शामिल है। ये दिहुआ स्ट्रीट समेत शहर भर की गिफ्ट दुकानों पर उपलब्ध हैं।

8 डम्पलिंग-थीम वाले उपहार

शियाओ लॉन्ग बाओ (सूप डम्पलिंग्स) की उत्पत्ति चीन में हुई थी, और ताइवान की चेन डिन ताई फंग ने इन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। घर लौटने पर आप इस स्वादिष्ट व्यंजन को याद कर सकते हैं, क्योंकि डम्पलिंग का डिज़ाइन घरेलू सामान, खिलौने, आभूषणों, कपड़ों और कलाकृतियों में दिखाई देता है, चाहे वह डिन ताई फंग रेस्तरां की उपहार दुकानों में हो या पूरे द्वीप में।

9 एनीमे खिलौने

ताइपे भर में गचापॉन (खिलौने बेचने वाली मशीनें), दुकानों और मॉल में मंगा या एनीमे पात्रों पर आधारित छोटी मूर्तियाँ और खिलौने बेचे जाते हैं। कुछ खिलौने डिब्बों में बंद होते हैं, जिससे उन्हें खोलने तक उनका स्वरूप रहस्य बना रहता है। आपको सबसे बड़ा संग्रह ताइपे सिटी मॉल में मिलेगा, जो लगभग आधा मील लंबा भूमिगत बाजार है और बारिश के दिनों में खरीदारी करने और एक ही स्थान पर दर्जनों एनीमे दुकानों में तुलना कर सामान चुनने के लिए यह एक बेहतरीन जगह है।

रियायती दर का लाभ पाने के लिए 31 मार्च तक पंजीकरण करें। क्यूआर कोड स्कैन करें या convention.rotary.org पर जाएं।

©Rotary

रूस को ज़ोन 8 में शामिल किया गया, उसका नेतृत्व भारत करेगा

रो ई के निदेशक मंडल ने अपनी जनवरी 2026 की बैठक में एशिया, यूरोप/अफ्रीका और अमेरिका के लिए नई ज़ोन संरचना को मंजूरी दी है। यह संरचना ज़ोन्स रिव्यू स्टीयरिंग कमेटी की सिफारिश पर तैयार की गई, जिसकी अध्यक्षता रो ई के उपाध्यक्ष अलान वेन डी पूल ने की।

नई ज़ोन संरचना के तहत, रूस (रो ई मंडल 2223) को भारत के उत्तर और उत्तर-पश्चिमी मंडलों के साथ ज़ोन 8 में शामिल किया गया है।

एशिया के लिए नई ज़ोन संरचना इस प्रकार है:

ज़ोन 4 भारत (पश्चिमी): 3030, 3040, 3060, 3131, 3132, 3141, 3142, 3172

ज़ोन 5 भारत (दक्षिणी), मालदीव, श्रीलंका: 2981, 2982, 3000, 3203, 3206, 3212, 3220, 3231, 3233, 3234

ज़ोन 6 भूटान, भारत (पूर्वी और उत्तर-पूर्वी), नेपाल: 3100, 3110, 3120, 3240, 3250, 3261, 3262, 3291, 3292

ज़ोन 7 भारत (दक्षिणी): 3020, 3150, 3160, 3171, 3181, 3182, 3191, 3192, 3204, 3205, 3211

ज़ोन 8 भारत (उत्तर और उत्तर-पश्चिम), रूस: 2223, 3011, 3012, 3053, 3055, 3056, 3070, 3080, 3090

प्रत्येक वर्ष, रो ई निदेशक मंडल ज़ोन सूची में छोटे बदलाव करता है, जो मंडलों के विलय, नए मंडलों के गठन, या मंडल बदलने के अनुरोधों के आधार पर होते हैं। इसके अतिरिक्त, बोर्ड हर आठ वर्ष में व्यापक समीक्षा भी करता है ताकि रो ई के उपनियमों के अनुसार मंडलों एवं क्लबों को लगभग समान संख्या वाले 34 ज़ोन में विभाजित किया जा सके। यह इसलिए किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि रोटरी का निदेशक मंडल हमारी विविध और वैश्विक सदस्यता का सटीक प्रतिनिधित्व करे।

2025 में, बोर्ड द्वारा स्वीकृत तीन क्षेत्रीय कार्यसमूहों ने एशिया, यूरोप/अफ्रीका और अमेरिका के लिए नए ज़ोन संरचना प्रस्ताव तैयार किए। अलान वेन डी पूल की अध्यक्षता में ज़ोन्स रिव्यू स्टीयरिंग कमेटी ने इन प्रस्तावों को एक वैश्विक योजना में समाहित किया और बोर्ड ने सर्वसम्मति से इस योजना को मंजूरी दे दी।

बोर्ड अपनी अप्रैल 2026 की बैठक में ज़ोन संबंधी अन्य मुद्दों जैसे सेक्शनिंग, पेयरिंग और निदेशक चुनाव रोटेशन पर विचार करेगा।

अपडेटेड मानचित्र अभी जारी होने बाकी हैं, लेकिन फिलहाल सदस्य ज़ोन सूची देख सकते हैं या किसी भी प्रश्न के लिए *Zones@rotary.org* पर संपर्क कर सकते हैं। नई ज़ोन सूची के लिए देखें: *https://my.rotary.org/en/my-rotary/rotary-international-zones* पर।

Rotary International

सीने के दर्द का समाधान

गीता मथाई

सीने में दर्द डरावना होता है, खासकर अगर यह बाईं ओर हो। आखिर, हर कोई (यहां तक कि बच्चे भी) जानते हैं कि दिल वहीं स्थित होता है। यह डर, खासकर मध्यम आयु वर्ग और वृद्ध लोगों में, मीडिया में दिखाई जाने वाली भयावह तस्वीरों से और भी बढ़ जाता है, जिनमें कोई व्यक्ति बुरी खबर सुनकर अपना सीना पकड़ लेता है, एक तरफ गिर पड़ता है, हांफने लगता है और अंत में मर जाता है। फिल्मों में तो यह ठीक लगता है, लेकिन असल जिंदगी में यह बहुत डरावना होता है, जब आपको लगता है कि यह आपके साथ या आपके किसी प्रियजन के साथ हो रहा है।

दिल का दौरा किसी भी उम्र में पड़ सकता है, हालांकि यह 45 वर्ष से अधिक उम्र के पुरुषों और 55 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं (रजोनिवृत्ति के बाद) में अधिक आम है। फिर भी, यह अब कम उम्र के लोगों में भी तेजी से बढ़ रहा है। आज लगभग आधे मरीज 40 वर्ष से कम उम्र के हैं।

दिल का दौरा पड़ने पर दर्द बहुत तेज और असहनीय होता है, जरूरी नहीं कि यह सीने के बाईं ओर, दिल के ठीक ऊपर ही हो। अक्सर यह छाती की हड्डी के पीछे महसूस हो सकता है और बाईं बांह, गर्दन या पीठ तक फैल सकता है। इसके साथ पसीना आना और चक्कर आना भी हो सकता है।

यह अचानक, बिना प्रशिक्षण के किए गए व्यायाम या किसी अशक्त व्यक्ति द्वारा किए गए परिश्रम, या यहां तक कि भारी भोजन के कारण भी हो सकता है। महिलाओं में आमतौर पर बिल्कुल भी दर्द नहीं होता है। इसके बजाय, उनमें बिना किसी स्पष्ट कारण के थकान, चिंता, मतली, या जबड़े, बाईं बांह, या यहां तक कि दाईं बांह में भी दर्द हो सकता है।

दिल का दौरा तब पड़ता है जब हृदय की मांसपेशियों के किसी हिस्से में रक्त की आपूर्ति कम हो जाती है या पूरी तरह रुक जाती है, जिससे वह हिस्सा नष्ट होने लगता है। ऐसा वर्षों के दौरान वसायुक्त, कोलेस्ट्रॉल युक्त जमाव के कारण हो सकता है जो कोरोनरी धमनी को संकुचित कर देता है। वसायुक्त प्लाक स्वयं फट सकता है, जिससे रक्त का थक्का बनकर पहले से संकरी किसी अन्य धमनी को अवरुद्ध कर देता है। जिस धमनी से हृदय का जो भाग रक्त प्राप्त करता है, उसके अवरुद्ध होने पर वह भाग क्षतिग्रस्त होकर अंततः नष्ट हो जाता है और बाद में उसकी जगह निशान ऊतक (स्कार टिश्यू) बन जाता है। हृदय के कुशल कार्य के लिए आवश्यक विद्युत संकेत, निशान वाले स्थान पर बाधित हो जाते हैं। परिणामस्वरूप हृदय की धड़कन अनियमित हो सकती है या पूरी तरह बंद भी हो सकती है।

जो लोग मोटापे से ग्रस्त हैं (भले ही वे युवा हों) और शारीरिक रूप से सक्रिय नहीं हैं (जिनके लिए वीडियो गेम उनका मुख्य खेल है), जो लोग तंबाकू का सेवन करते हैं (धूम्रपान, चबाना या साँस लेना), जिन्हें मधुमेह या उच्च रक्तचाप है, या जिनके परिवार में कम आयु में दिल का दौरा पड़ने का इतिहास रहा है, उनमें दिल का दौरा पड़ने की संभावना अधिक होती है।

जो लोग एरोबिक रूप से सक्रिय होते हैं और सप्ताह में 150 मिनट तक व्यायाम करते हैं, उनके हृदय में कुशल संपार्श्विक परिसंचरण विकसित होता है, जो कोरोनरी धमनियों में प्रमुख अवरोधों को बायपास कर सकता है।

सीने में दर्द होने पर तुरंत गंभीरता से लें। एक वयस्क एस्पिरिन (375 मिलीग्राम) या चार बेबी एस्पिरिन (75 मिलीग्राम) की गोलियों को पीसकर पानी में घोलें और मरीज़ को पिला दें। फिर तुरंत अस्पताल जाएं। इस आपातकालीन उपचार से किसी की जान बचाई जा सकती है।

सीने में दर्द के मूल्यांकन के लिए ईसीजी (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम), छाती का एक्स-रे और ट्रोपोनिन, सीके (क्रिएटिन काइनेज), सीके-एमबी और सीरम मायोग्लोबिन जैसे रक्त परीक्षण आवश्यक होते हैं। समय के साथ होने वाले परिवर्तनों की जांच के लिए ये रक्त परीक्षण दोहराए जा सकते हैं। इसके बाद सीटी या एमआरआई स्कैन करके यह निर्धारित किया जा सकता है कि व्यक्ति को दिल का दौरा तो नहीं पड़ रहा है। एंजियोग्राम से अवरोध के स्थान का पता लगाया जा सकता है। उसी समय अवरोध को बायपास करने के लिए स्टेंट डाला जा सकता है।

सीने में होने वाले हर दर्द का कारण हृदय संबंधी समस्या नहीं होता। आपातकालीन चिकित्सा केंद्र पहुंचने वाले लगभग 30 प्रतिशत लोगों में हृदय रोग नहीं पाया जाता। उनका दर्द, जो दिल के दौरे के दर्द जैसा लग सकता है, सीने की अन्य संरचनाओं, जैसे कि छाती की मांसपेशियों में खिंचाव या अचानक होने वाली असामान्य हरकतों के कारण उत्पन्न हो सकता है। यह दर्द स्टर्नम (छाती की हड्डी) या पसलियों और स्टर्नम के बीच के जोड़ (कॉस्टोकोंड्रल जंक्शन) से भी उत्पन्न हो सकता है। वायरल संक्रमण भी सीने में दर्द का कारण बन सकते हैं। विशेष रूप से हर्पीस वायरस, सीने की दीवार पर हर्पीस ज़ोस्टर का कारण बन सकता है, जिससे गंभीर दर्द होता है। निमोनिया, फेफड़ों के अन्य संक्रमण, फुफ्फुसीय रोग (फेफड़ों का आवरण), या फेफड़ों में खून के थक्के भी सीने में दर्द का कारण बन सकते हैं। स्टर्नम के ठीक पीछे स्थित ग्रासनली, गैस्ट्रो-ओसोफेगल रिफ्लक्स रोग (जीईआरडी), अनियंत्रित गतिशीलता, या तीव्र दर्द प्रतिक्रिया के कारण गैर-हृदय संबंधी सीने में दर्द का कारण बन सकती है।

यदि दर्द का स्थान स्पष्ट न हो, दबाव या जकड़न जैसा महसूस हो, गतिविधि करने से बढ़ जाए, और सांस लेने में तकलीफ, चक्कर आना, पसीना आना, मतली या उल्टी जैसे लक्षण हों, तो यह दिल का दौरा होने की संभावना है जिसके लिए तत्काल चिकित्सा उपचार की आवश्यकता है। दूसरी ओर, यदि छाती पर दबाव डालने से दर्द फिर से

अगर किसी व्यक्ति को सीने में दर्द की शिकायत हो, तो तुरंत एक एडल्ट एस्पिरिन (375mg) या बेबी एस्पिरिन (75mg) की चार गोलियां पीसकर पानी में घोल लें और उसे निगलने दें।

उत्पन्न होता है, तो यह हृदय संबंधी दर्द न होकर किसी अन्य कारण से होने की संभावना अधिक होती है। ऐसे में भी, एस्पिरिन देना और अस्पताल जाना अधिक सुरक्षित है ताकि प्रशिक्षित पेशेवर रोगी की जांच कर निदान तक पहुंच सकें।

हृदय संबंधी समस्याओं के अलावा सीने में होने वाले सभी प्रकार के दर्द तनाव और चिंता से बढ़ जाते हैं। यदि इन समस्याओं का समाधान नहीं किया जाता है, तो व्यक्ति को बार-बार अस्पताल जाना पड़ सकता है, लेकिन परिणाम संतोषजनक नहीं होंगे।

अपने आप को स्वस्थ और सुरक्षित रखने के लिए:

- सप्ताह में 150 मिनट तक एरोबिक व्यायाम (पैदल चलना) करें।
- आदर्श शारीरिक वजन प्राप्त करें (वजन को मीटर में ऊंचाई के वर्ग से भाग दें और X 23 से गुणा करें)
- तंबाकू का सेवन न करें और तंबाकू के धुएँ के परोक्ष संपर्क (पैसिव स्मोकिंग) से भी बचें।
- ट्रांस फैट युक्त प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों से परहेज करें।
- मधुमेह, उच्च रक्तचाप और रक्त में वसा के स्तर को नियंत्रित करें।
- नियमित रूप से दवा लें और त्योहारों, सामाजिक कार्यक्रमों या स्वयं को बेहतर महसूस होने पर भी उनकी खुराक न छोड़ें।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*

परिवर्तन की शक्ति

पंखों वाले मेहमानों के लिए मैराथन

पक्षियों की सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए रोटरी क्लब मेट्टूर डैम सिटी, रो ई मंडल 2982 द्वारा आयोजित मरन फॉर द विंग्सफमैराथन में लगभग 3,600 लोगों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम तमिलनाडु के सेलम मंडल के पन्नावडी क्षेत्र पर केंद्रित था, जो 200 से अधिक पक्षी प्रजातियों का निवास-स्थान है।

डीजी पी शिवसुंदरम ने 'लर्निंग अबाउट द एनवायरनमेंट ऑफ फार्म बर्ड्स' नामक पुस्तक का विमोचन किया, जिसे सलेम मंडल की वन अधिकारी लावण्या ने ग्रहण किया। एक अन्य पहल के तहत, मेट्टूर स्थित इंडियन डेंटल एसोसिएशन के सहयोग से चिन्नपल्लम गांव के अनाथालय सहाया अन्नाई इल्लम में एक मौखिक स्वच्छता शिविर का आयोजन किया गया। बच्चों को टूथपेस्ट, टूथब्रश और स्टेशनरी का सामान दिया गया। ■

एक अपंग व्यक्ति को प्रभा फुट का उपहार।

जामनगर में अंग प्रत्यारोपण शिविर

रोटरी क्लब जामनगर, रो ई मंडल 3060 द्वारा आयोजित तीन दिवसीय *प्रोजेक्ट गिफ्ट ऑफ मोबिलिटी (प्रभा फुट)* शिविर से लगभग 40 दिव्यांगों को लाभ हुआ। इस शिविर को भावनगर स्थित के. एल. इंस्टीट्यूट फॉर द डेफ का सहयोग प्राप्त हुआ तथा इसे अलंग ऑटो एंड इंजीनियरिंग, राजहंस मेटल्स और अल्फा ऑटोमेशन द्वारा प्रायोजित किया गया।

कृत्रिम अंग विशेषज्ञ सहित तकनीशियनों ने एक डॉक्टर की सहायता की, जिन्होंने लाभार्थी के स्वास्थ्य और शेष अंग की स्थिति का मूल्यांकन किया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वह कृत्रिम अंग लगाने के लिए उपयुक्त है। यह शिविर जामनगर स्थित रोटरी डिजास्टर मैनेजमेंट केंद्र में आयोजित किया गया। ■

तमिलनाडु के वेल्लोर के एक विद्यालय में नृत्य का रिकॉर्ड

रो ई मंडल 3231 ने 1,105 बच्चों द्वारा लगातार 15 मिनट तक भरतनाट्यम प्रस्तुति आयोजित कर 'ऑस्कर्स बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में अपना नाम दर्ज कराया।

यूएनडीपी के सतत विकास लक्ष्य-3 को बढ़ावा देने के लिए वेल्लोर केवीवीएनकेएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह लक्ष्य विश्व में स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और सभी के लिए कल्याण को बढ़ावा देने से संबंधित है और रोटरी के सात प्रमुख क्षेत्रों के अनुरूप है। सभा को संबोधित करते हुए डीजी वी सुरेश ने कहा, यह रिकॉर्ड युवा विकास तथा सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति रोटरी की प्रतिबद्धता की शक्ति का प्रतीक है।

इस नृत्य प्रस्तुति के साक्षी ऑस्कर बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की समन्वयक आर भुवनेश्वरी, तथा रो ई मंडल 3231 के पूर्व गवर्नर और पदाधिकारी रहे। ■

RID 3234 के DG विनोद सरावगी बाढ़ प्रभावित परिवारों को राशन किट बांटते हुए, उनके दाईं ओर रोटरी क्लब नांगनल्लूर एलीट के अध्यक्ष वी एस गोपालकृष्णन चित्र में शामिल हैं।

चक्रवात प्रभावित परिवारों को बाढ़ राहत किट वितरित की गईं।

चक्रवात दितवाह राहत वितरण के तहत, रोटरी क्लब नंगनल्लूर एलीट, रो ई मंडल 3234 द्वारा फ्यूचर इंडिया ट्रस्ट के साथ साझेदारी में चेन्नई के पेरुंगुडी इलाके में 120 परिवारों को राशन किट वितरित किए गए।

प्रत्येक किट में 5 किलो चावल का बोरा, 500 ग्राम परिष्कृत तेल, जीरा, सरसों और आटे के पैकेट, अरहर दाल और नमक का पैकेट शामिल था, जिसकी कुल कीमत ₹600 थी, और परियोजना की कुल लागत ₹75,000 थी। ये किट पेरुंगुडी स्थित अनबुचोलाई सीनियर सिटिजन्स डे केयर सेंटर और सैदापेट स्थित गवर्नमेंट मॉडल स्कूल में वितरित किए गए। ■

जिन्ना आखिर थे कौन?

इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के सूखे पन्नों में दबे हुए व्यक्तित्वों से रूबरू कराने वाली इन दो किताबों के माध्यम से उनके बारे में जानें। जीते-जागते, प्रेम करते, सांस लेते और संघर्ष करते लोग...

संध्या राव

रत्तनबाई 'रुट्टी' पेटिट अभी 18 वर्ष की ही हुई थीं जब उन्होंने अपने से 24 वर्ष बड़े मोहम्मद अली जिन्ना से विवाह किया, जो आगे चलकर पाकिस्तान के संस्थापक बने। जब यह 'पक्का कुंवारा' (उनकी पहले भी शादी हुई थी, पर उनकी कम उम्र की पत्नी का शीघ्र निधन हो गया था), सफल वकील और प्रतिष्ठित राष्ट्रवादी अचानक बॉम्बे के पारसी समुदाय के बड़े नाम सर दिनशॉ पेटिट की खूबसूरत, आवेगशील और प्रेम में पागल इकलौती बेटी के साथ भागकर शादी कर लेता है, तो हंगामा मच जाता है। एक पारसी लड़की का मुसलमान से विवाह? अपनी बिरादरी से बाहर शादी? अकल्पनीय। बिल्कुल अस्वीकार्य। लेकिन जब रुट्टी किसी भी तरह की धमकी के आगे झुकने को तैयार नहीं हुईं, तब दिनशॉ पेटिट ने औपचारिक रूप से जिन्ना पर अपनी बेटी का उसकी संपत्ति पर लालची नजर रखते हुए अपहरण करने का आरोप लगा दिया।

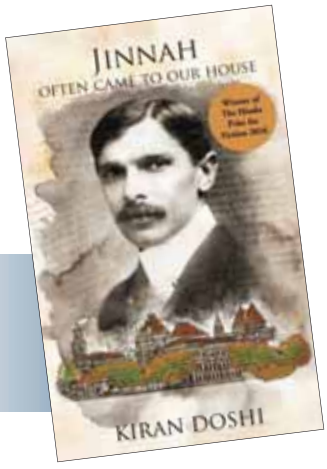

रुट्टी ने क्या किया? अदालत में न्यायाधीश के सामने, ऐसे साहसिक प्रतिरोध के साथ जिसने उनके भाग जाने से भी अधिक सर दिनशॉ को आहत किया, वह आवेग में जिन्ना के बचाव में खड़ी हो गईं। 'सर,' उन्होंने अपने 'जे' के प्रति पहले ही विकसित हो चुकी तीखी संरक्षक भावना के साथ कहा, 'मिस्टर जिन्ना ने मेरा अपहरण नहीं किया; बल्कि मैंने उनका अपहरण किया है।' इतने नाटकीय आरंभ के साथ शुरू होने वाला यह विवाह मात्र 11 वर्ष बाद त्रासदी में समाप्त हुआ, जब रुट्टी ने अपने 29वें जन्मदिन पर अधिक मात्रा में दवा लेने से दम तोड़ दिया। विवाह में तमाम तनावों के बावजूद जिन्ना टूट गए। बाहर से ठंडे और संयमित दिखने वाले जिन्ना भीतर से पछतावे से भरे थे, उन्होंने कई वर्षों बाद एक मित्र की पत्नी के सामने स्वीकार किया: 'वह एक बच्ची थी और मुझे उससे कभी विवाह नहीं करना चाहिए था। गलती मेरी थी।'

प्रख्यात पत्रकार शीला रेड्डी ने उनकी कहानी अपनी पुस्तक *मिस्टर एंड मिसेज़ जिन्ना: दी मेरिज दैट शुक इंडिया* में कही है। संभव है मैं यह किताब चूक जाती, यदि सैम डेलरिम्पल (उनके बारे में फिर काभी चर्चा करेंगे) ने एक साक्षात्कार में इसका उल्लेख न किया होता। अपने पाठकों के संदर्भ के लिए, जिन्ना और रुट्टी की बेटी दीना (जिसका नाम लंबे समय तक तय नहीं हुआ क्योंकि माता-पिता अन्य बातों में व्यस्त थे, और जिसने लगभग नौ वर्ष की उम्र में स्वयं अपना नाम अपनी नानी के नाम पर रखा) ने व्यवसायी एवं वाडिया समूह के संस्थापक नेविल वाडिया से विवाह किया। वाडिया समूह, जिसके हित वस्त्र, विमानन आदि क्षेत्रों में हैं, आज भी भारत के व्यापार जगत में सशक्त उपस्थिति रखता है।

रुट्टी, सरोजिनी नायडू और उनकी बेटी पद्मजा नायडू द्वारा लिखे गए निजी पत्रों और अन्य स्रोतों से जुटाई गई जानकारी के आधार पर, शीला रेड्डी न केवल इस 'भारत को हिला देने वाली शादी' का, बल्कि उस समय की सामाजिक गपशप और राजनीतिक संकेतों का भी एक अंतरंग चित्र पेश करती हैं। जिन्ना द्वारा स्वयं लिखा गया कोई पत्र अब तक सामने नहीं आया है, जो एक बड़ी कमी है, लेकिन लेखन इतना सहज और स्पष्ट है कि यह कमी महसूस नहीं होती। यह यह पुस्तक मूलतः एक प्रेम कहानी है; यह उस समय की भी कहानी है जब औपनिवेशिक शासन की पकड़ में जकड़े लोगों के बीच स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद के विचारों ने हलचल शुरू कर दी थी। ब्रिटिश साम्राज्य की चमक निश्चित रूप से धुंधली होने लगी थी। इसलिए, हमें मोतीलाल नेहरू, महात्मा गांधी और अली बंधुओं जैसी कई अन्य प्रसिद्ध हस्तियों की झलक भी देखने को मिलती है। सरोजिनी नायडू और उनके बच्चे इस वृत्तांत में प्रमुखता से दिखाई देते हैं। वह जिन्ना की बड़ी प्रशंसक थीं और रुट्टी के लिए सहारा थी; उनकी बेटियां रुट्टी की घनिष्ठ मित्र थीं और वे नियमित रूप से एक-दूसरे को पत्र लिखती थीं।

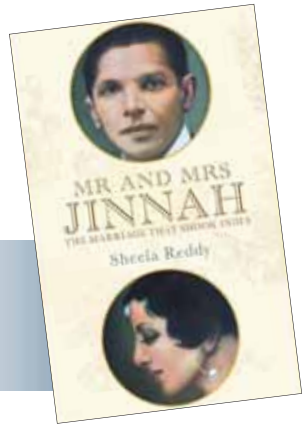

जैसा कि किरण दोषी ने *द हिंदू* (1 अप्रैल, 2017) की अपनी समीक्षा में उल्लेख किया है, यह पुस्तक उस सुखद परिस्थिति की देन है जब लेखिका को सरोजिनी नायडू जैसी अद्भुत और अथक पत्र-लेखिका की बेटियों पद्मजा और लीला मणि नायडू द्वारा संरक्षित निजी पत्रों का एक बंडल मिल गया। वह आगे कहते हैं कि जहाँ ये पत्र स्वयं में एक दिलचस्प पुस्तिका बन सकते थे, सौभाग्य से, लेखिका ने दो बेहतरीन तत्वों के मेल से इनसे एक पूरी किताब तैयार कर दी है: पहला, उस दौर की राजनीतिक और सामाजिक झलकियाँ, जो भले ही इतिहास के शौकीनों को पता हों, लेकिन फिर भी सामान्य पाठकों के लिए काफी दिलचस्प होंगी; और दूसरा, उन पत्रों में कही गई बातों की लेखिका द्वारा की गई व्याख्या - साथ ही कुछ सामान्य अवलोकन और निष्कर्ष। इसका अंतिम परिणाम, भले ही कुछ अंश पुरानी मदिरा जैसे हों, एक ऐसा मादक मिश्रण है जिसे आखिरी बूंद तक पिए बिना छोड़ पाना मुश्किल है।

कई विवाह इस दौर में टूटने की कगार पर पहुँच गए; जिन्ना दम्पति का संबंध तो अंततः बिखर ही गया। संभव है कि गांधी के आंदोलन ने उन्हें ऐसा उद्देश्य और अर्थ प्रदान किया हो, जिसने उनके व्यक्तिगत त्याग और पीड़ाओं की आंशिक भरपाई की हो।

दोशी स्वयं भी जानते हैं, क्योंकि उन्होंने उसी कालखंड - 20वीं सदी के पहले भाग - पर आधारित एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यास लिखा है, जिसमें कई व्यक्तित्व समान हैं और कुछ काल्पनिक पात्र भी, जो बेशक वास्तविक जीवन से प्रेरित हैं। मैंने मिस्टर एंड मिसेज जिन्ना के अभी कुछ ही पन्ने पलटे थे कि अचानक मुझे याद आया: क्या मेरी किसी अलमारी में जिन्ना पर कोई किताब नहीं रखी थी? जी हाँ, बिल्कुल थी! *जिन्ना ऑफ़न केम टू अवर हाउस* (JOCTOH), और आपने सही पहचाना, इसके लेखक किरण दोषी ही हैं! मुझे इसके तुरंत बाद यह भी पता चला कि इस किताब ने 2016 में 'द हिंदू लिट फॉर लाइफ' पुरस्कार जीता था। यह अद्भुत किताब 10 साल से शेल्फ पर बिना किसी का ध्यान खींचे, अनछुए पड़ी थी! मैं भी कितनी बड़ी भुलक्कड़ हूँ।

JOCTOH 1904 से 1948 तक की कहानी सुनाती है। यह एक और विवाह की कहानी है, प्रभावशाली सुल्तान कोवैशी, जो अभी-अभी लंदन से वकालत पास करके लौटे हैं और एक संपन्न परिवार के ऐशो-आराम के जीवन में ढल रहे हैं, और रेहाना, जो सुंदरता और बुद्धिमत्ता का एक सटीक मिश्रण हैं। सुल्तान की मुलाकात मोहम्मद अली जिन्ना से होती है और उनमें दोस्ती हो जाती है, जो उस समय कानूनी हलकों में एक जाना-माना नाम थे और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उभरते हुए सितारे थे। उनकी कहानी भी स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में आगे बढ़ती है। जहाँ सुल्तान, कानूनी दांव-पेंच के खेल में जिन्ना को पछाड़ने और अपनी संपत्ति बढ़ाने के अलावा बाकी सभी मुद्दों के प्रति उदासीन हैं, वहीं रेहाना स्वतंत्रता, महिला मुक्ति और शिक्षा जैसे विषयों की ओर खिंची चली जाती हैं और गांधीजी की कट्टर अनुयायी बन जाती हैं।

इस बीच, जीवन अपनी गति से चलता रहता है। खिलाफत आंदोलन, जलियांवाला बाग हत्याकांड, राजनीतिक दांव-पेच जैसी महत्वपूर्ण घटनाएं घटती हैं; जबकि साथ ही साथ लोगों के जीवन में प्रेम और विश्वासघात के मोड़ आते रहते हैं। ऐसे लंबे दौर भी आते हैं जब ऊपरी तौर पर कुछ भी होता नहीं दिखता; और हमें यह अहसास होता है कि समय असल में इसी तरह बहता है, भले ही इतिहास की पाठ्यपुस्तकें यह आभास देती हों कि घटनाएं एक के बाद एक बेहद तेज़ी से घटती हैं। बेशक, ये तो कहानी का महज़ एक बुनियादी ढांचा है, लेकिन जिन्ना इसमें एक अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र हैं - सुल्तान और रेहाना के मित्र के रूप में, और लड़कियों को शिक्षित करने के रेहाना के प्रयासों के समर्थक के तौर पर। आखिरकार आज़ादी का सवेरा होता है; पाकिस्तान का जन्म होता है।

यह पुस्तक भी बहुत मर्मस्पर्शी ढंग से समाप्त होती है: और जब एक दूर देश में, सितंबर की एक तपती दोपहर को एकता (एक स्कूल) के पूर्व न्यासी जिन्ना का निधन हुआ, तो स्कूल की लड़कियों ने एक मिनट का मौन रखा। *द इवनिंग न्यूज़* की खबर के अनुसार, उन्होंने एक रेगिस्तानी सड़क पर खराब होकर खड़ी एम्बुलेंस में अंतिम सांस ली। उस समय उनकी बहन फातिमा के अलावा उनके पास कोई नहीं था, जो एक मुड़े हुए अखबार से उनके चेहरे से मक्खियां हटाने की जद्दोजहद कर रही थीं। जब वे रात के खाने के लिए बैठे, तो मीरा ने रेहाना से पूछा, मदादी, क्या आप इस आदमी जिन्ना को जानती थीं?फ रेहाना ने जवाब दिया, महाँ बेटा, बहुत-बहुत समय पहले, वह अक्सर हमारे घर आया करते थे।फ

2 अप्रैल, 2017 के *नेशनल हेराल्ड* में प्रकाशित एक साक्षात्कार में, शीला रेड्डी एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि साझा करती हैं जब वह कहती हैं कि: अन्य जीवनसाथी भी अपने वैवाहिक कर्तव्यों के प्रति उतने ही लापरवाह थे और उनके वैवाहिक जीवन ने भी काफी दुख झेले, लेकिन इसने उन्हें उस तरह तबाह नहीं किया जिस तरह जिन्ना दंपत्ति को किया। मुझे लगता है कि इसका कुछ हद तक संबंध गांधीजी के आंदोलन से था, जिसने हर किसी के जीवन को एक उद्देश्य दिया और उनके व्यक्तिगत बलिदानों की भरपाई कर दी। यह एक ऐसा विचार है जिस पर गहराई से गौर किया जाना चाहिए, भले ही हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन को एक बार फिर उदारता के साथ देख रहे हों।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

रो ई मंडल **3141**

रोटरी क्लब मुंबई दहिसर

कक्षा में पढ़ाई को बेहतर बनाने के लिए 81 वंचित छात्रों को लैपटॉप दान किए गए। राजेंद्रन उन्नीकृष्णन के नेतृत्व में परियोजना दल ने मीरा रोड और वसई रोटरी क्लबों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस कार्यक्रम की सफलता के लिए समन्वय किया।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल **3182**

रोटरी क्लब शिमोगा ज्यूबिली

मंडल आयुष विभाग के साथ संयुक्त रूप से आयोजित एक स्वास्थ्य कार्यक्रम में 75 प्रतिभागियों को स्वास्थ्य किट वितरित किए गए। चिकित्सा अधिकारी डॉ एस सुंदरेश और आपदा प्रबंधन प्रशिक्षक डॉ वी एल एस कुमार ने नियमित व्यायाम, सकारात्मक सोच, निवारक देखभाल और स्वस्थ भोजन पर व्याख्यान दिए।

रो ई मंडल **3203**

रोटरी क्लब अविनाशी नेक्स्ट जेनरेशन

क्लब की पहली जीजी परियोजना (46,000 डॉलर) के तहत डीजी बी धनसेकर और आईपीडीजी सुरेश बाबू ने माथेश्वरी डायलिसिस सेंटर में पांच मशीनों का उद्घाटन किया। ऑस्ट्रेलिया स्थित रोटरी क्लब वायॉन्ग टुगेराह, रो ई मंडल 9685, इस परियोजना का वैश्विक भागीदार था।

रो ई मंडल 3205

रोटरी क्लब त्रिपुनिथुरा रॉयल

विस्मय रन में टाइप 1 मधुमेह से पीड़ित लगभग 1,500 महिलाओं और 250 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। यह 5 किलोमीटर की मैराथन थी जिसे सांसद हिबी ईडन और डीजी जी एन रमेश ने हरी झंडी दिखाकर शुरू किया।

रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब कर्चोरेम-सानवोर्डेम

रोटरी फिएस्टा 2025, दो सप्ताह तक चलने वाला एक मेला था, जिसमें संस्कृति, संगीत, फिटनेस और सेवा को प्रदर्शित किया गया। इसमें एक दर्जन कार्यक्रम शामिल थे जिन्होंने सभी उम्र और पृष्ठभूमि के लोगों को आकर्षित किया।

रो ई मंडल 3231

रोटरी क्लब पल्लीकोंडा

ग्रामीण और वंचित समुदायों के लिए आयोजित नेत्र जांच शिविर में 400 लोगों की दृष्टि संबंधी समस्याओं की जांच की गई। ग्रामीणों, पंचायत नेताओं और विद्यालय शिक्षकों ने रोटरी के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

रो ई मंडल 3240

रोटरी क्लब बर्दवान साउथ

बर्दवान सरकारी अस्पताल में आयोजित एचएलए टाइपिंग शिविर में थैलेसीमिया से पीड़ित 120 रोगियों सहित लगभग 500 लोगों को लाभ हुआ। मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल के बोन मैरो प्रत्यारोपण विशेषज्ञों ने मुंबई स्थित पेरेंट्स एसोसिएशन थैलेसीमिया यूनिट ट्रस्ट के सहयोग से रोगियों की जांच की।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

संस्मरण प्रकाशित और अप्रकाशित

LBW

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

पिछले दिसंबर, घर में हर साल होने वाली सफ़ाई के दौरान, जो आमतौर पर मैं नहीं करता, मेरी पत्नी ने मुझे निर्देश दिया कि अपनी कुछ किताबें दान कर दूँ क्योंकि वे अब फर्श पर ढेर होने लगी थीं। कितनी? मैंने पूछा। संस्मरणों से शुरुआत करो, उसने कहा।

मुझे पता है क्यों 25 साल पहले मैंने एक लेख में लिखा था कि यह बड़े अफ़सोस की बात है कि पर्याप्त संख्या में पूर्व लोक सेवक अपने संस्मरण नहीं लिखते। आखिर वे कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं के साक्षी और सहभागी रहे हैं। लेकिन इसने एक बार फिर पुरानी कहावत को सच साबित कर दिया: इंसान को अपनी इच्छाओं के प्रति सावधान रहना चाहिए। तब से, नौकरशाहों के संस्मरणों की बाढ़ सी आ गई है।

मैंने एक बार एक प्रकाशक मित्र से इसका कारण पूछा, तो उसने अपने अंगूठे को तर्जनी पर रगड़ते हुए कहा, मोटी एडवांस राशि। बेशक, सभी नौकरशाहों को भारी-भरकम एडवांस नहीं मिलते। इसके लिए उन्हें 'सेलिब्रिटी' होना पड़ता है। यानि, रिटायरमेंट से पहले उनका आख़िरी ओहदा ऐसा होना चाहिए जिसे मीडिया ने खूब कवर किया हो। अगर दो बड़े ओहदे रहे हों, जैसे पहले वित्त सचिव और फिर आरबीआई गवर्नर, या पहले गृह सचिव और फिर कैबिनेट सचिव, या पहले राजदूत और फिर विदेश सचिव, तो एडवांस सचमुच उदार हो सकता हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्रकाशकों के बीच इस उम्मीद में प्रतिस्पर्धा रहती है कि किताब बेस्टसेलर बनेगी और जल्दी मुनाफ़ा देगी। आखिर उम्मीद तो मानव हृदय में सदा जीवित रहती है, खासकर प्रकाशकों के हृदय में। बेचारे हमेशा अच्छे की कामना करते रहते हैं, क्योंकि सौ में से सिर्फ़ एक किताब ही पैसा कमा पाती है।

खैर, जो भी हो, न तो नौकरशाहों की अच्छी किस्मत की शिकायत करनी चाहिए और न ही उनकी आत्म-महत्व की भावना की, भले ही कुछ में इन दोनों की भरमार हो। एक सकारात्मक पहलू यह है कि औपचारिक रूप से दर्ज किया गया इतिहास का हर छोटा हिस्सा विभिन्न संस्करणों की जांच-पड़ताल में मदद करता है। लेकिन प्रकाशकों का क्या? यहीं कहानी में मोड़ आता है, क्योंकि आप नौकरशाह को भले ही नौकरशाही से बाहर निकाल लें, पर नौकरशाही को उसके भीतर से नहीं निकाल सकते। उनकी जन्मजात सतर्कता या अत्यधिक साधारणता, या अधिकांश मामलों में दोनों, प्रकाशकों की उम्मीदों पर पानी फेर सकती है।

मैं हर तरह के संस्मरणों का उत्साही पाठक हूँ, और सौ से अधिक पढ़ चुका हूँ। मैंने कुछ अप्रकाशित संस्मरण भी पढ़े हैं। और मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस प्रकार की 99 प्रतिशत किताबें पूरी तरह निराशाजनक होती हैं। भले ही आप इन किताबों में दिखने वाले ड्रमेरे जाने के बाद सब बर्बाद हो गयाफ वाले भाव को नज़रअंदाज कर दें, फिर भी अधिकांश किताबें पाठक के समय और पैसे की बर्बादी होती हैं। मुझे प्रकाशकों पर दया आती है। मैं व्यवसायियों, पुलिस अधिकारियों, सैन्य कर्मियों, डॉक्टरों और अन्य पेशेवरों की आत्मकथाएँ अधिक पसंद करता हूँ। वे आमतौर पर कम आत्मकेंद्रित और अधिक ईमानदार होती हैं। दुख की बात है कि वे विरले ही अपने संस्मरण लिखते हैं, क्योंकि प्रकाशकों की दिलचस्पी उन्हीं 'ग्लैमरस' लोगों में होती है जिन्होंने रिटायरमेंट से पहले महत्वपूर्ण पद संभाले हों। अपवाद मौजूद तो हैं, लेकिन सामान्यतः स्थिति यही है।

यह भी दिलचस्प है कि पत्रकार अपने संस्मरण नहीं लिखते। उनके पास भी सुनाने के लिए ढेरों कहानियाँ होती हैं, खासकर टीवी पत्रकारों के पास। 2020 तक मैं बजट से जुड़े टीवी कार्यक्रमों में हिस्सा लेता था और मुझे कुछ अंदाज़ा है कि 'दीवार पर बैठी मक्खी' की तरह उनका काम कितना थकाने वाला होता है। वे ऐसी-ऐसी बातें देखते और सुनते हैं, जिन्हें मैं तो कम-से-कम पढ़ना ज़रूर चाहूँगा। एक क्लासिक किस्सा मैंने एक कैमरामैन से सुना था, जो एक नए रिपोर्टर और एक बेहद प्रसिद्ध वित्त मंत्री से जुड़ा था। उस रिपोर्टर, जो अभी किशोरावस्था से मुश्किल से बाहर निकला था, को एक छोटी बातचीत के लिए भेजा गया था। उसने मंत्री से कुछ शब्द कहलवा लिए और फिर पूरी मासूमियत से पूछा, ''सर, आपका नाम क्या है और आप क्या करते हैं? मुझे दर्शकों को बताना है।'' ■

ADVT.

RJ MANTRA
LEARN THE MAGIC OF LEARNING
RJ MANTRA ENGLISH SCHOOL
(Affiliated to CISCE-TN 082)
CISCE
ADMISSIONS
OPEN
NURTURING CHAMPIONS IN
CLASSROOMS AND ON FIELDS
Every child deserves a chance to shine
ENROLL NOW
Contact Us
9489067789
www.rjmantra.com

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26 | issue, including cover, 84. Price: ₹40

ADVT.

UNITE FOR GOOD

Rotary Club of VIRUDHUNAGAR

kauvery hospital Tirunelveli

ROTARY KARMAVEERAR KAMARAJAR HEART CARE BUS

GG- 2341081 - Heart care bus is a Clinic on wheels.

It goes to multiple locations throughout the Rotary International District 3212.

Rotary International District 3212 shares the vision of 'Karmaveerar Bharat Ratna K.Kamarajar' in uplifting the quality of life in rural Tamilnadu. Rotary Heart Care bus takes the privilege to serve the underprivileged villages and towns to take Heart Check-ups and save their lives by availing due medical treatment for heart problems.

HEART CARE BUS FEATURES

- Digitalized BMI Vital Screening
- Electro Cardiogram (ECG)
- Echo Cardiogram
- Defibrillator
- Physician Consultation
- Telemedicine Consultation

HEART CAMP DETAILS As on 10.02.2026

Total No.of Camps	96
No.of Beneficiaries	11,220

No.of ECG Done	No.of ECHO Done	No.of Patients Referred to Hospital
4706	2519	943

Rotary International Partner : RID 5300
Rotary Club of LAS VEGAS WON

Primary Contact :
Rtn.A.S.P.Arumugaa Selvan

International Partner
PDG.Rtn.Chehab El Awar

LEKHA ad/Mardy 26/BW

Clubs to Contact for Heart Care Camp **Rtn. T. SUDALAIVEL -** +91 97509 55445 Rotary club of Virudhunagar Idhayam